त्रैमासिक

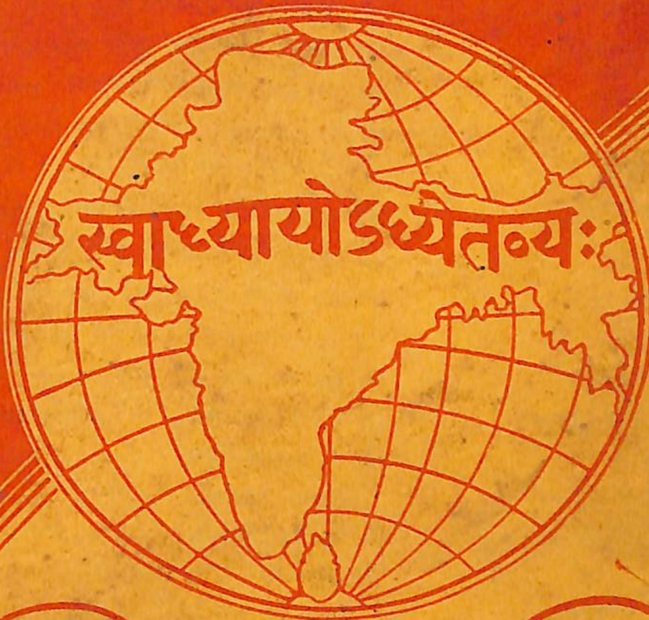
श्रीः

श्री स्वाध्याय

ग्रीष्माङ्क

वर्ष १५
सं० २०१२

संख्या ४
आषाढ़



वार्षिक मूल्य ४।)

इस अङ्कका मूल्य १।=)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय सूची

क्रम विषय	लेखक	पृष्ठ
१. निवेदनम् (संस्कृत पद्य)	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	५
२. प्रशासनमें अपव्यय	सम्पादकीय	६—८
३. वस्तुस्थिति क्या है ?	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	९
४. सतीत्वबल (कहानी)	श्री पं० दयानन्दजी जोशी	१०—१३
५. नेत्र ज्योति बढ़ानेका उपाय	श्री देवेन्द्रदत्तजी	१३—१५
६. आरोग्य वर्धक पपीता और टमाटर	श्री हरिकृष्णदासजी डी० गांधी एम० ए०	१६—१८
७. कुछ अनुभूत औषधियां	संकलित	१९
८. भाग्यफल (फाल्गुनमास जन्मफल)	श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य	२०—३०
९. प्रदोषव्रतकी शास्त्रीय महत्ता एवं पूजा विधि	श्री पं० मदनगोपालजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य	२४—२५
१०. मूर्त्यन्तर प्रतिष्ठापन रहस्य	एक निष्पक्ष विचारक	२६—२७
११. फलित ज्योतिषमें कारक पद्धति	श्री पं० श्रीनारायणजी चुलेट शास्त्री ज्योतिषाचार्य	३०—३१
१२. अनुभूत योगमाला	श्री पं० तारादत्तजी राजज्योतिषी राजगुरु	३१
१३. कुण्डली चक्र समीक्षा	श्री पं० श्रीनिवासजी शास्त्री ज्योतिर्विद्	३२—३३
१४. विदेशी व्यापार क्या है ?	श्री कैलाशचन्द्रजी गुप्त	३४
१५. चांदी सोनेका भविष्य दर्पण	श्री राजवैद्य डा० श्री अमरदत्तजी मिश्र ज्यो०	३५—३६
१६. व्यापार रुख	श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य	३६
१७. त्रैमासिक व्यापार रुख	श्री पं० गणेश शंकर शर्मा दैवज्ञ रमलाचार्य	३७—३९
१८. भारत और रूस	श्री बी० वी० रमन सम्पादक 'एस्ट्रालाजीकल मेगजीन'	३९—४१
१९. स्वानुभवित व्यापारिक निर्णय	श्री पं० राजाराम जैन ज्योतिषरत्न	४२
२०. मंगलग्रहकी व्यापार फल व्यवस्था	श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्योतिषाचार्य	४३—४४
२१. तीन मासके अचूक चांस	श्री पं० गणेश दैवज्ञ	४५
२२. त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय	'श्रीविश्वविजयपंचांग'से	४६
२३. दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	४७—५०
२४. व्यापार भविष्य	श्री प्रो० बी० सी० महता	५१
२५. स्वरशास्त्रसे व्यापार भविष्य	श्री पं० श्यामसुन्दरजी ज्योतिषी	५२
२६. पदार्थोंकी उत्पत्ति तथा उनपर ग्रहोंका प्रभाव	श्री बदरीप्रसादजी ब्यानिया गणकचूड़ामणि ज्योतिषाचार्य	५२—५४

विद्वान् लेखकों और पाठकोंसे निवेदन

आगामी 'नववर्षाङ्क'की छपाई श्रावण शुक्लमें (अगस्त माससे) प्रारम्भ हो जावेगी अतः जिन विद्वानोंके लेख पहले आ जावेंगे वे प्रारम्भमें अच्छा स्थान पा सकेंगे। भाद्रपद शु० १० ता० १३ सितम्बर १९५६ के बाद आये हुए कोई भी लेख प्रकाशित न हो सकेंगे। इस बातका ध्यान रखकर लेख शीघ्रसे शीघ्र भेजनेकी कृपा करें।

'श्रीस्वाध्याय'के सभी अंक निश्चित समय पर निकालनेका प्रयत्न किया जाता है। गत दो अंक तो हमने निश्चित तिथिसे एक सप्ताह पूर्व ही प्रकाशित कर ग्राहकोंको भेज दिये थे। इस अंकमें केवल दो दिनका विलम्ब मेरे स्वास्थ्य ठीक न रहनेके कारण हुआ अतः पाठकोंसे क्षमा प्रार्थी हूं। आगामी 'नववर्षाङ्क' आश्विन शु० १ को प्रकाशित करनेका प्रयत्न किया जावेगा। यह सब सहृदय पाठकोंके सहयोग पर निर्भर है। यदि प्रत्येक पाठक कमसे कम एक नया ग्राहक और बना दें तो पत्रकी आर्थिक स्थिति दृढ़ हो सकती है और योग्य सहयोगी कार्य कर्ताओं द्वारा पत्र विशेष उपयोगी बनकर समयसे पूर्व ग्राहकोंकी सेवामें पहुंच सकता है।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

वार्षिक मूल्य ४।) रु० शीघ्र भिजवाइये

वर्तमान पन्द्रहवें वर्षका यह अन्तिम अङ्क आपके हाथोंमें है । आपका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके साथ ही समाप्त हो जाता है । अतः आप आगामी सोलहवें वर्षका मूल्य ४।) चार रुपये चार आने शीघ्रसे शीघ्र कार्यालयमें मनीआर्डर द्वारा भेजकर वर्ष भरके लिए सब प्रतियां सुरक्षित करा लीजिए । छपा हुआ मनीआर्डर फार्म इसी अंकके साथ भेजा जा रहा है । कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या और पूरा पता स्पष्ट अक्षरोंमें लिखें । आगामी विजयादशमीके 'नववर्षाङ्क' का मूल्य २) और प्रत्येक साधारण अङ्कका मूल्य १।=) होगा । परन्तु ता० १३ अक्टूबर १९५६ से पहले मूल्य जमा करा देने वालोंको यह विशेषांक और वर्ष भरके शेष सब अङ्क ४।) रु० में ही प्राप्त हो सकेंगे । जो सज्जन 'श्रीस्वाध्याय' से विशेष स्नेह रखते हैं वे संरक्षक सहायक अथवा कमसे कम ११) रु० भेजकर सम्मान्य ग्राहक बनकर सहयोग देनेकी कृपा करें । सम्मान्य ग्राहकोंके शुभ नाम सधन्यवाद 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित किये जावेंगे । जो सज्जन गत चैत्र मासके 'वसन्ताङ्क' से (अप्रैल १९५६ से) ग्राहक बने हैं उनका मूल्य अभी समाप्त नहीं हुआ अतः वे महानुभाव साथके मनीआर्डर-फार्म पर किसी अपने परिचित मित्रका वार्षिक मूल्य भिजवानेकी कृपा करें । मनीआर्डर फार्मके कूपन पर पुराने ग्राहकोंको अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखनी चाहिए । यदि नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द अवश्य लिखना चाहिए ।

ग्राहकोंको विशेष लाभ

आगामी १६वें वर्ष का मूल्य ४।) जो नये ग्राहक विजयादशमीसे पहले भेज देंगे उन्हें श्रीस्वाध्यायके ११वें वर्ष का नववर्षाङ्क २) मूल्यका (जिसमें सिंह लग्नका विस्तार पूर्वक चमत्कारी फल ७ पृष्ठोंमें लिखा है और शनिकी साढ़ेसाती कब किस राशिको अच्छा या बुरा प्रभाव दिखाती है इसका विचार विस्तार पूर्वक लिखा गया है) बिना मूल्य उपहारमें भेजा जावेगा । अथवा विगत १५ वर्षोंकी फाइलमें से जो भी अंक वे मंगाना चाहेंगे उनमेंसे दो साधारण अंक अथवा एक किसी भी वर्षका विशेषांक (नववर्षाङ्क) बिना मूल्य भेजा जा सकेगा । यह सुविधा केवल विजयादशमी ता० १३ अक्टूबर १९५६ तक नये ग्राहकोंके लिए है । जो सज्जन ५ ग्राहकोंका सोलहवें वर्षका वार्षिक मूल्य २१।) रु० भिजवा देंगे उन्हें आश्विनसे चैत्रमास तक किसी भी एक वस्तुका अनुभूत सिद्धचांस अनुभवी दैवज्ञ द्वारा बिना मूल्य भेजा जावेगा ।

आगामी वर्षसे हम 'श्रीस्वाध्याय' में अनेक विशेषताएँ प्रारम्भ करना चाहते हैं, ज्योतिर्विज्ञानके नवीन अन्वेषण अनुसन्धानके लेख तो रहेंगे ही साथ ही भारतके सुप्रसिद्ध तेजी मंदी विशेषज्ञ ज्योतिषाचार्योंकी लेख प्रतियोगिता भी प्रारम्भ करेंगे । जिनके चांस अधिक सत्य सिद्ध होंगे उन्हें पुरस्कृत किया जायगा । ये सब योजनाएं तभी सफल हो सकती हैं जब 'श्रीस्वाध्याय' के अधिकसे अधिक ग्राहक हों । संरक्षक सहायकोंका सहयोग न मिलनेसे इस समय पत्रकी आर्थिक स्थिति बहुत निर्बल है अतः प्रत्येक सहृदय पाठकका कर्त्तव्य है कि वह शक्तिभर नये संरक्षक सहायक ग्राहक बनानेका प्रयत्न करें । विद्याव्यसनी उत्साही सज्जन अपने स्थानके सम्पन्न महानुभावोंको संरक्षक सहायक बनानेकी भी प्रेरणा करें और सफलताकी आशासे कार्यालयको सूचित करने पर पत्रके प्रधान सम्पादक श्री त्रिवेदीजी या संस्थाके अध्यक्ष श्री मिश्रजी निर्धारित समय पर वहां पहुंच भी सकते हैं ।

वी० पी० किसीको नहीं भेजी जायेगी

अब आगामी सोलहवें वर्षका 'नववर्षाङ्क' किसी भी ग्राहकको वी० पी० द्वारा नहीं भेजा जायगा । अतः अब कोई ग्राहक वी० पी० द्वारा 'श्रीस्वाध्याय' पानेकी आशामें न रहें। पहले वार्षिक मूल्य ४।) भेज देनेसे ग्राहकोंको बारह आने वी० पी० डाकखर्चकी बचत है और अङ्क भी छपते ही उन्हें मिल जाता है। वी० पी० ५) में पड़ती है और सब ग्राहकोंको भेजनेके बाद बिलम्बसे मिलती है। जिन ग्राहकोंको अङ्क सुरक्षित न पहुंचने वा डाकमें गुम होनेका भय हो, व वार्षिक मूल्यके साथ ॥) अधिक भेजें तो उन्हें 'नववर्षाङ्क' रजिस्ट्रीसे भेजा जा सकेगा। चारों अक रजिस्ट्रीसे मंगानेके लिए २) अधिक भेजना चाहिए। अथवा वेरंग मंगवावें।

पत्र व्यवहार राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही करें

प्रत्येक ग्राहकको चाहिए कि पत्र हिन्दीमें ही लिखें और उत्तरके लिए टिकट वा जबाबी कार्ड भेजना आवश्यक है। उर्दू अंग्रेजी वा अस्पष्ट लिपिमें लिखे गए पत्रों तथा जबाबी पत्रोंके अतिरिक्त अन्य सामान्य पत्रोंका समय पर उत्तर नहीं दिया जायेगा। पत्र व्यवहार और मनीआर्डरके कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या (जो आपके पतेके चिट—रैपर—पर नाम के साथ लिखी रहती है वह अवश्य लिखें।

पत्र-व्यवहार और मूल्य भेजनेका एकमात्र पता—

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

❀—✳—❀

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन ।

श्रीमान् रायबहादुर सेठ तोलारामजी गजराजजी जैन, लाडनूं [राजस्थान]

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य ।

आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर ।

श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड, सोलन ब्रूरी

श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)

श्रीमान् पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, चीफ रेवेन्यू अकाउण्टेण्ट, भरतपुर

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर ।

श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]

★-❀-★

सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'श्रीस्वाध्याय'के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

जो महनुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विनशुक्ला १०, पौषशुक्ला १०, चैत्रशुक्ला १० और आषाढ़शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४।) और एक प्रतिका १।=) एक रुपया छः आना है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मँगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमासकी विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४।) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३।।) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।=) मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मँगवाने पर उक्त मूल्यमें तेरह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवाने में ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक मूल्य वा एक अङ्कके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफे में कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक—
श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीथाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १५ | सोलन, आषाढ़ शु० १० मंगलवार सं० २०१३ वि० | संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

ऋतं वा सत्यं वा स्फुरति सकलं कल्पितमिदं
महाधारे यस्मिन्स खलु परिपूर्णः स्वमहिमा।
विधत्ते जानीते स्वरसललनो वाञ्छति महान्
निराशंसः स्वात्मा सकलगुरुराजो विजयते ॥१॥
असिद्धाः संसिद्धा मलिनमतयो निर्मलधियो
विपन्नाः सम्पन्ना नरकगतयो नाकगतयः।
यदालम्बात्सद्यः सकलपरमार्थैकधनिनो
जनाः सम्पद्यन्ते शिवगुरुकला सा विजयताम् ॥२॥

तो अवश्य हैं, परन्तु तुम्हारे धन वैभवकी हमें परवाह नहीं—भगवान् ने यहीं हमें खानेको दाल रोटी और तन ढकनेको कपड़े लत्ते सब कुछ दे रक्खे हैं, हमारे मनमें तो हमारी झोंपड़ी ही महल जैसी है, हमारा अंतरात्मा हमें पवित्रतासे रहनेको कहता है, सत्य पर चलनेको कहता है, पति परमेश्वरका पूजन भजन करनेको कहता है और कहता है तन-मन-धनसे घर आये अतिथिका उचित आदर सत्कार करनेको। हम गंवार लोभवश कुछ नहीं करते, हम तो अपने कर्तव्यका पालन ही करते रहते हैं सदा। मेरा पति गढवी अभी थोड़े दिनों पहले ही ढोरों (पशुओं)को चरानेके लिये मालवेकी ओर गया हुआ है अपने साथियोंके साथ। इस नेहड़ेकी स्त्रियाँ सब एकली ही रहती हैं अपने घरोंमें आजकल। हमको किसी पर-पुरुषसे कोई काम ही नहीं पड़ता, फिर भी घर आये दुखिया या अतिथि का सत्कार करना हम जंगली असभ्य तथा गंवार कहाने वाले दीन जन अपना कर्त्तव्य मानकर ही करते हैं। बड़े छोटेका अन्तर नहीं हम गंवारोंकी नजर में। अब भाई तुम भी तो अपना परचा (परिचय) दो, यह तो बताओ तुम कौन हो और इधर कैसे आ निकले?" सांई नेहड़ी ने कहा नम्र वाणीसे।

"वाह रे वाह! इन वनवासियोंमें इतनी उदारता, भलाई, बड़प्पन, भलमनसाहत, निस्पृहता और ममता है! ये रंक जन लोभ हीन, पवित्र और संतोषी हैं। आतिथ्य सत्कारमें बड़े बड़े धनियों और राजाओंसे भी चढ़े बढ़े हैं। ये तो भाव भक्ति में ऊँचे ऊँचे महलोंमें रहने वालोंसे भी प्रथम पंक्तिमें बैठने योग्य हैं। यह तो मैं आज ही समझ सका हूँ।" इस प्रकार मन ही मनमें कहा तलाजा नरेश ने। फिर नेहड़ीसे कहने लगा—"धन्य बहन! धन्य! तुझे देखकर और तेरी वाणी सुनकर मैं कृतार्थ हो गया, आज मेरा जीवन सफल हुआ बहन! मेरा नाम एभल वाला है..."

"एभलवाला! तलाजाका राजा" नेत्रोंसे हर्षाश्रु बहाते हुए नीची दृष्टि किये धीरेसे कहा नेहड़ीने।

नेहड़ीको आँसू गिराते देखकर राजा बोला—"बहन नयनोंसे नीर क्यों बहाती है?"

"भाई! तुम्हारे जैसे राजाका सत्कार इस झोंपड़ी में! तुम्हारे पवित्र चरण इस कुटियामें पड़े, हम भाग्यवंत हो गये।"

"बहन! जिस पवित्र मनसे निःस्वार्थ सेवा तूने मुझ अपरिचितकी की है, नगरोंके सभ्य कहे जाने वाले श्रीमानों के द्वारा होना कठिन ही नहीं परन्च असम्भव सी लगती है वह। बहन! यह तेरा बड़प्पन और सौजन्य है कि ऐसी पावन तथा मधुरवाणी कह रही है तू। बहन! अब दया करके बोल कि मैं तुझे क्या भेंट दूं? तेरे उपकारका बदला चुकाना तो दुस्तर ही है, फिर भी मैं क्या दूं सो कह?"

"भाई! मुझे कुछ नहीं चाहिये, किसी भी आवश्यक वस्तुकी कमी नहीं है यहाँ। तुम धन दौलत गहना आदि दे दोगे, पर हमें इस जंगलमें इन सबका क्या करना है, हमें तो जगत्पालक दयासागर भगवानूने ऐसे झंझटोंसे अलग ही रहनेको रखा है, फिर अपने सिर पर नया भय क्यों लें?, भाई! तुम अपनी इस बहन पर पवित्र छाया रखना यही बस है"। नेहड़ीने कहा कर जोड़कर।

"बहन! तू इतनी निस्पृह, पावन और सन्तोषी है कि बार बार मेरे कहने पर भी कुछ वांछा नहीं रखती, कुछ भी वस्तु भाईसे नहीं मांगती, तो मैं भी तुझे अभय वचन देता हूं कि तुझे जब भी जिस समय भी मेरे देह गेह कुटुम्ब राज्य वैभवादि जिस भी वस्तुकी आवश्यकता हो वह तेरे लिए उपस्थित करनेमें मैं अपना अहोभाग्य समझूंगा। अब मुझे जाने की रजा (अनुज्ञा) दें।" यह कह कर जाने के लिये खड़ा हो गया राजा एभल।

"भाई! आज आज तो ठहर जाओ। इस गरीब बहन के घरकी राब छाछ खाकर चले जाना कल।"

"भली बहन! तेरी राब छाछ तो मेरे लिए छप्पन भोगोंसे भी अधिक स्वादिष्ट तथा विदुरकी भाजी व शबरी के बोरों (बेरों) की भांति विशेष प्रिय है, परन्तु इस भाई के वचनोंको न भूल जाना, जब भी आवश्यकता हो कठिन समय आ पड़े—तब आधी रातको भरी सभामें या नींद में अचेत होऊं तो भी महलमें बेधड़क चली आना तू! बहन! तेरे लिए सातों द्वार खुले हैं, कहीं कोई भी रोक टोक नहीं। मैं नगरमें ढौंडी पिटवाकर घोषणा करवा दूंगा,

नेत्र ज्योति बढ़ानेका उपाय

[लेखक—श्री देवेन्द्रदत्त जी]

सत्तर प्रतिशतसे अधिक व्यक्ति एक बहुमूल्य वस्तु का ध्यान नहीं रखते—यह वस्तु है उनकी आंखें। स्मरण रखिए आपकी आंखें ऐसे मोती हैं जिन्हें आप बहु-मूल्य मोतियोंके बदलेमें भी नहीं पा सकते। उपेक्षाका परिणाम यह होता है कि आँखें कमजोर हो जाती हैं और भरी जवानीमें ही आपको चश्मा लगाना पड़ता है। पर आँखें जहां एक बार कमजोर हुई कि फिर दिन प्रति दिन अधिक 'पावर' के शीशे लगाने पड़ते हैं। सिर दर्द, स्नायु पीड़ा और विस्मृति आदि रोग अन्धकारकी भांति छा जाते हैं।

हम सौ वर्ष तक देखें।

वेदों में लिखा है—'पश्येम शरदः शतम्' (हम सौ वर्ष तक देखें) किन्तु आज कल हम सौ वर्ष तक तो क्या बीस पच्चीसके बाद ही दृष्टिहीन हो जाते हैं। परिणामतः जो धन पौष्टिक पदार्थोंके उपयोगमें व्यय होना था वह ऐनकोंकी कम्पनियोंमें जाता है।

इस लेखमें हम केवल यह सलाह देंगे कि दृष्टिशक्ति की रक्षा किस प्रकार की जा सकती है? निर्बल आंखों को भी इन कुछ बातों पर ध्यान देनेसे अधिक निर्बल होनेसे बचाया जा सकता है और दृष्टिशक्तिमें कुछ सुधार भी किया जा सकता है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अभी यदि आपकी जीवनी शक्ति समाप्त नहीं हुई है तो आप चाहे कितने ही 'पावर्स' की ऐनक पहनते हों नीचे दिए गए सुझावों पर अमल करनेसे आप अपने खोये मोती फिरसे पा सकेंगे।

आँखें कमजोर होनेके दो मुख्य कारण हैं। लगातार पठन और प्रूफ रीडिंग आदि ऐसे कुछ कार्य, जिनमें दृष्टि को एक ही बिन्दु पर केन्द्रित रखना पड़ता है। प्रथम प्रकारके कारणोंसे विद्यार्थी, पत्र सम्पादक तथा प्रोफेसर आदि दुःखी रहते हैं। इंजिनियर्स व डाक्टर (सर्जन) दूसरे कारणोंसे ऐनकका प्रयोग करते हैं।

आंखोंकी सुरक्षाके उपाय

१—प्रातः सूर्योदयके पूर्व, जब थोड़ा अन्धेरा हो तभी नंगे पांव हरी घास पर टहलिये। घास पर अपनी दृष्टि जमाये रहिये। लगभग आध घण्टे तक इसी प्रकार घासमें देखते हुए टहलिये। यदि सामने कोई हरा भरा वृक्ष हो तो गरदन उठाकर उसे निर्निमेष दृष्टिसे देखिए। कुछ ही दिनमें आपकी आंखें स्निग्ध हो जाएंगी। आंखोंके नीचेका कालापन नष्ट हो जायगा। और पुतलियां निर्मल हो जाएंगी। दो सप्ताहमें ही आपको अपनी नेत्र-ज्योति बढ़ती प्रतीत होगी।

नाकसे पानी पियें

२—कुछ लोग प्रातः उठते ही नाकसे पानी पीते हैं। इस क्रियाको 'अमृत-पान' कहते हैं। नाकके छिद्रोंमें होकर शीतल जल मस्तिष्कके स्नायुओंको रससिक्त कर देता है। एक कटोरी पीनेके बाद ही आंखोंसे अश्रु बहने लगते हैं। यही इस क्रियाकी सफलता है। अश्रु नीर

कि मेरी बहन सांईनेहड़ीको द्वारपाल आदि कोई भी किसी भी समय न रोके कहीं भी और कभी भी।"

"अच्छा भाई! जैसी तुम्हारी इच्छा" इतना कहकर गद् गद् हुई नेहड़ी घरके काम-काजमें लग गई और वनवासियोंके प्रति 'एभल' के गम्भीर तथा उच्च भावों पर विचार करती रही पुलकित होकर।

राजा एभल दोपहरको जीम चूंट कर बहनकी आज्ञा ले घोड़े पर सवार होकर चल पड़ा तलाजाकी ओर।

एक चाण्डाल स्त्री जो इन भाई बहनको तीन चार दिनसे साथ देख रही थी, अपनी पाप बुद्धिके अनुसार ही कुत्सित कल्पना करती हुई कुढ़ती रही। दुर्बुद्धि पापी मनुष्य तो अपने स्वभावानुसार दूसरोंकी निन्दा और अहित करते ही हैं सदा। परन्तु भक्तोंका रक्षक व सहायक सर्वान्तर्यामी सर्व शक्तिमान् प्रभु ही रहता है सदैव। वह न्यायकारी नाथ जो भी करता है प्राणीकी भलाईके लिए ही होता है निस्सन्देह। (अपूर्ण)

के रूपमें आंखोंकी कीच व सारी गन्दगी बह जाती है। फिर उसी बासी पानीसे आँखें धो लीजिए। आपका मस्तिष्क तरोताजा दृष्टि शीतल व सशक्त और बेचैनी एक दम नष्ट हो जायगी। यदि यह पानी तांबेके किसी बर्तनमें रखा गया हो, तो और भी लाभदायक होता है। तांबेके गुण पानीमें रासायनिक परिवर्तन लाते हैं जो आंखोंके लिए अद्वितीय टानिक सिद्ध होते हैं।

३—नासिका छिद्रोंसे पानी पीने का अभ्यास कीजिए। नित्य स्नानके समय आधी कटोरीसे प्रारम्भ कीजिए। एक ही सप्ताहमें आपको आदत पड़ जायगी। घबराहट तो तीसरे ही दिन समाप्त हो जायगी।

आँखको पानी पिलाइये

४—स्नान प्रारम्भ करनेसे पूर्व एक छोटी बाल्टीमें कुछ पानी लीजिए। यदि पानी पर धूलके कण जमा हों तो एक साफ तौलिया धीरेसे पानीकी सतह पर बिछाकर खींच लीजिए। पानी स्वच्छ हो जायगा। अब अपने मुंहको पानीमें इस प्रकार डुबाइये कि आंखें पूरी तरह जलमग्न हो जायें। पलकोंको पानीमें ही लगभग पन्द्रह बार खोलिये और बन्द कीजिए। अब मुँह बाहर निकालिए। हाथसे पानीके छींटे आंख पर फेंकते हुए दो तीन सैकण्ड हथेलीसे रगड़ लीजिए। अब पुनः वही क्रिया दोहराइये।

५—कई व्यक्तियोंकी आंखें स्फटिकके समान निर्मल होती हैं। यही स्वच्छताकी झलक है। आंखोंके धब्बे मनुष्यकी पवित्रताको कम कर देते हैं। धब्बे समाप्त हो सकते हैं। शीर्षाशन इसके लिए बड़ी लाभदायक किया है। सर्वाङ्गासन और योगमुद्रा आदि आसन भी इसी उद्देश्यके लिए है। यदि आप बीस वर्षसे कम आयु वाले हैं तो शीर्षाशन सीख सकते हैं।

[अधिक आयु वाले भी शीर्षासन कर सकते हैं पर प्रारम्भमें एक दो मिनटसे अधिक न करें। शीर्षासनके पश्चात् स्निग्ध पदार्थ शुद्ध घृत मक्खन दुग्धादि सेवन अत्यन्त आवश्यक है। अन्यथा खुश्की बढ़कर लाभके स्थान में हानि होती है ; आसनके बाद दो तोले गो घृतमें ५ काली मिर्च भूनकर चबाना और घृत पीना नेत्र ज्योति आयु ओज मेधा शक्ति वृद्धिके लिए परम हितकारी है। इस सम्बन्धमें विशेष विवेचन हम आगे किसी अङ्कमें करेंगे।

—सम्पादक]

शीर्षासन

शीर्षासनसे दृष्टि आजन्म सशक्त रहती है। प्रौढ़ व्यक्ति योगमुद्राका अभ्यास कर सकते हैं। इन तीनों आसनोंमें आंखें अर्धनिमीलित रहनी चाहिए तथा दृष्टि नाककी नोंक पर केन्द्रित रहनी चाहिए। आसन कर चुकनेके बाद एक गिलास ठण्डा पानी पीजिए और मुंह व आंखें धो डालिए।

हरी सब्जी खाइये

६—दूध तो आजकल शुद्ध मिलता ही नहीं। फिर भी बहुधा डाक्टर आंखोंकी दुर्बलताको दूधसे दूर करनेकी सलाह देते हैं। पर बहुतसे लोगोंको दूध उपलब्ध भी नहीं होता है। पर आप हरे साग खाइए। प्रत्येक ऋतुमें कोई न कोई साग तीन चार आने सेर मिल ही जायगा। नियम पूर्वक खाइये और शक्ति प्राप्त कीजिए। कुछ सागोंको एक छटांकके लगभग कच्चा खानेकी आदत डालिए।

लाल मिर्चसे बचिए

चाय, खटाई व मसाले स्वस्थ आखों पर बुरा प्रभाव नहीं डाल सकते। हां, लालमिर्चसे यथाशक्ति बचिये। यही अक्षि-रोगोंकी मूल है।

७—रातको जब भी आप सोने लगें, एक बार फिर आंखोंको उसी प्रकार धो डालें, जैसा कि स्नानके समय धोनेके लिए बताया गया है। फिर एक साफ तौलिएसे आहिस्तासे पलकें पोंछ डालिए। लालटेन बुझा दीजिए और इस बातका ध्यान रखिए कि सुबह उठते ही आंखों पर रोशनी न पड़े। मुंहको रजाईसे बाहर रखिए ताकि पलकें स्वच्छ वायुसे स्फूर्ति पाती रहें और नेत्र शीतल रहें।

८—जब आप सिनेमा देखें तो पूरी आखें फाड़कर न देखें। जितनी सम्भव हो सके गर्दन ऊपर उठाये रखें और आंखोंको आधी खोलकर चित्रका आनन्द लें। यदि सिर को कुर्सी पर टिका दिया जाए, तो बहुत ही उत्तम है। चित्रको एक टक भी देखिए। हर समय पलकें झपकाते

रहिए। इससे न तो आपके सिरमें दर्द होगा, न आंखसे पानी ही बहेगा।

९—पाठ्य पुस्तकको ठोड़ीके ठीक नीचे रखिये। गर्दन इतनी उठाये रखिये कि आंखें केवल आधी ही खुली हों। कुर्सीके पीछे एक लम्बी मेज (जो गुलदस्ते रखनेके काम आती है) रखिए। उस पर लालटेनकी रोशनी आए। बिजलीका बल्ब भी पीछे एक साइडमें होना चाहिए ताकि रोशनी आखों पर न पड़े। जब आप लिखें तो दृष्टि निबके साथ होनी चाहिए, लिखे हुए शब्दों पर नहीं। पलकें झपकानेका काम स्वभावतः शीघ्र गतिसे होता रहे।

१०—जिन कार्योंमें एकटक दृष्टि लगानी पड़ती है, ऐसे कामोंको करनेके बाद 'ज्योति-क्रिया' करनी चाहिए। अर्थात् आखें बन्द करके आहिस्तासे हथेलियोंसे पलकोंको ढक दें। अब कल्पना करें कि आपकी आखोंके सामने सूर्य चमक रहा है। इस ज्योतिको स्थिर रूपसे देखने की कल्पना कीजिए। क्रमशः नेत्र सशक्त हो जाएंगे।

आंखें चरित्र का भेद कह देती हैं

आंखें मनका भेद बताती हैं। किसी व्यक्तिकी आंखें देखकर उसके चरित्रका पता लग सकता है। इन मोतियों की ज्योति बनायें रखिये ताकि आप अन्य मोतियों को ढूंढ सकें।

अपनी ज्योति बढ़ाइये

यदि कोई पाठक ऐनक पहनकर इन पंक्तियोंको पढ़ रहे हैं तो उनसे भी मैं इन नियमोंके आधार पर चलकर अपनी दृष्टि-शक्ति बढ़ानेकी अपील करता हूं। और यदि आप अभी तक ऐनक नहीं लगाते तो समझिये कि आप पर्याप्त सौभाग्यशाली हैं और आगेके लिए सतर्क हो जाइये ताकि कभी कोई ऐनक आपके भी कानों पर चढ़कर नाक को पकड़ने का साहस न कर सके।

—

प्राकृतिक स्वास्थ्य साधना—

आरोग्य वर्धक पपीता और टमाटर

[ले०—श्री हरिकृष्णदास जी डी० गांधी एम० ए०]

फलाहार अत्युत्तम आहार है, यह तो निर्विवाद है। फिर भी, कुछ अज्ञानी लोग फलोंको ओर उपेक्षाकी दृष्टिसे देखते हैं। "केले खानेसे शरदी होती है; बेर खानेसे खांसी आती है; शरीफा ज्वरोत्पादक है, तरबूज ठण्डा होता है, पपीता गरम होता है; अनारसे दस्त बन्द हो जाता हैं" आदि बातें फलोंके विरुद्ध हम प्रायः सुनते रहते हैं। ऐसे लोग फलोंके आरोग्यवर्धक गुणोंसे अपरिचित होते हैं। फलोंके गुणोंसे पूर्णतया परिचित होने वालोंमेंसे कुछ लोग फलाहारके नियम नहीं जानते। खाद्य मनोवृत्तिसे फलोंकी राशि पर टूट पड़ने वालोंको तो हानि होती ही है; इसलिये यह कहना उचित न होगा कि फलाहार हानिकर है। पपीता गरम होनेसे रक्तविकार पैदा कर देता है, यह धारणा भ्रांत है। हाँ, इसके अत्यधिक उपयोग या दुरुपयोगसे ऐसा हो भी सकता है। मिताहारकी अवहेलना करनेसे तो अच्छीसे-अच्छी वस्तुयें भी विपरीत प्रभाव डाल सकती है।

पपीतेकी उत्पत्ति

पपीता अपने देशका फल नहीं। कोलम्बस अपनी द्वितीय खोज-यात्रामें पपीतेके पेड़ दक्षिण अमेरिकासे लाया था। भारतमें पुर्तगाली व्यापारियोंने पपीतेके पेड़ोंका प्रसार किया। गरम प्रदेशमें, जहां जलकी सुविधा अधिक हो, वहीं यह पेड़ उगता है। लगभग एक ही वर्षमें यह पेड़ फल देने लगता है और चार-पांच वर्ष तक बराबर देता रहता है। कुछ पेड़ और भी अधिक समय तक फल देते रहते हैं। पपीतेका शायद ही कोई ऐसा पेड़ हो, जो फलहीन रहे।

उदर-रोगकी औषधि

जिनकी पाचन-क्रिया मन्द है उनकी पाचन-क्रिया सुधारनेके लिये डाक्टर प्रायः प्राणि अंगोंसे निर्मित 'पेप्सीन' देते हैं। इस 'पेप्सीन'के तत्वसे पाचन-शक्ति सुधर तो जाती है; किन्तु उसकी प्रतिक्रिया शरीर पर बहुत होती है। सजीव वस्तु ही सजीव शरीरके उपयोगमें आती है। पपीतेमें पेप्सीनका तत्व विद्यमान है, अतः वह अजीर्ण, मन्दाग्नि और पेटके अन्य रोगोंके लिये आशीर्वाद है। जो पपीतेका नियमित उपयोग करता है, उसे कभी कब्जसे पीड़ित होना नहीं पड़ता। पपीता कृमिविकार पर पर्याप्त लाभ पहुँचाता है।

पपीतेके तत्व

पपीतेमें खनिज पदार्थ (मिनरल सान्ट) ४ प्रतिशत है। विटामिन 'ए' और 'सी' भी है। इसमें निहित लोहा और फासफरस पाण्डुरोगके लिये अतीव हितकर है। पाण्डुरोग और आर्तवकी शिकायतमें इसका उपयोग करना चाहिये। इसके अतिरिक्त पपीतेमें 'कार्बोहाइड्रेट,' कैल-शियम और प्रोटीन भी पाई जाती है।

पपीतेके औषधिक गुण

पुराने विचारके एलोपैथी डाक्टर तलीनकी वृद्धिमें पपीता खानेकी सलाह देते हैं। पपीतेके हरे फलमें दरार चीर कर उससे निस्सृत दुग्धको एकत्र कर उसे २० से २४ घण्टे तक सूर्यकी धूपमें रखा जाये, तो सूख कर चूर्ण (पाउडर) जैसा बन जाता है। इसी चूर्णको 'पेपेन' कहा जाता है। यह चूर्ण उत्तम औषधिके रूपमें काम करता है। अजीर्णकी जीर्णतम अवस्था (डिसपेप्सिया)में पेपेन बहुत अच्छा काम करती है। एक दो ग्रेन पेपेन दूध या शक्करके साथ वयस्क व्यक्तिको देनेसे पाचक रसका अभाव, आंतोकी बीमारी, कृमि-विकार पर पर्याप्त लाभ होता है। पका पपीता अति स्वादिष्ट होता है। दूधमें डालकर खानेसे यह उत्तम खाद्यका भी काम करता है। पके पपीते-का रायता भी बनाया जाता है। दुग्धोत्पत्ति अच्छी तरह हो, एतदर्थ कुछ स्त्रियां पपीतेको बड़ोंमें डालकर खाती हैं। कुछ लोग तो पके पपीतेको फोड़ कर उसकी आइस-क्रीम बनाते हैं। कच्चे पपीते का शाक भी अच्छा बनता

है। बहुतेरे श्रीमान् महोदय पपीता तथा मक्खन लेते हैं।

कब्जकी दवा

आध सेर पके पपीतेके मावेमेंसे रस निकालें और उसे एक सेर दूधमें डाल दें। ५-६ घण्टेमें यह दूध दही बन जायेगा। पपीतेका यह दही कब्जकी सफल औषधि है।

चर्मरोग तथा अन्य रोग

(१) पपीतेका मावा (गूदा) कुछ देर तक मुंहपर घिसनेसे दाग, मुंहासे और फुंसियाँ मिटकर मुंह सुन्दर और तेजवान् बनता है।

(२) खुजली पर और त्वचा पर उत्पन्न फोड़े-फुंसियों पर १२ ग्रेन 'पेपेन,' ५ ग्रेन 'बोरेक्स-पाउडर' और २ ग्रेन विशुद्ध जल मिलाकर लगाना चाहिये।

(३) यकृत्की वृद्धि हुई हो, तो कच्चे पपीतेका १ ड्राम रस और इतनी ही शक्कर तीन भागमें नित्य देनी चाहिये।

(४) पपीतेके पत्ते आग पर सेंक कर पीड़ित अंगों पर लगानेसे आराम मिलता है।

(५) बिच्छूके डंक पर पपीतेका दूध हितकर होता है।

गरीबोंकी नारंगी—टमाटर

दयामयी प्रकृतिने अणु परमाणुमें विश्वके महान् संगीतमें हरे भरे वृक्षोंमें, निर्झरित झरनोंमें, उदयोन्मुख सूर्यमें और मस्त भावसे मन्द-मन्द प्रवहमान पवनमें आरोग्य, आनन्द, दीर्घायु और शक्तिकी औषधियां संगुम्फित कर रखी हैं। बहुत ही कम लोग इस परम सत्यको जानते हैं कि प्रकृतिने खाद्य पदार्थोंमें रोग-प्रतिरोधक सामर्थ्य भर रखा है। विवेक बुद्धिसे गृहीत खाद्य पदार्थ छोटे बड़े रोगोंको मार भगाते हैं। और साथ ही आदर्श आरोग्य भी प्रदान करते हैं। प्रकृतिकी इस अद्भुत औषधिकी प्रतिक्रिया, विषाक्त प्रभाव, ज्ञानतन्तुओंकी निर्बलता या अकाल मृत्युके रूपमें नहीं होती। आपकी रसोईमें विविध रोगोंकी औषधियों या रोगोंके कीटाणुओंका ही निर्माण होता है और आपकी थालीमें या तो रोगनाशक औषधियां परोसी जाती हैं या रोगोत्पादक कीटाणु। इन दो में से आप क्या पसन्द करेंगे ?

सस्ता आहार—टमाटर

आहारमें टमाटर या टामेटाका महत्व अत्यधिक है, अतः अनेकशः लोग इसकी गणना फलमें करते हैं। गत २० वर्षसे खाद्यके रूपमें टामेटाका प्रचार प्रयोग बहुत बढ़ गया है। टामेटाका स्वाद मधुर, रंग सुन्दर और आकृति सुडौल है। इसे आबाल-वृद्ध सभी ले सकते हैं। इसमें आहारके महत्व पूर्ण तत्त्व सन्निहित है। इतना होने पर भी इसका अल्पमूल्य इसकी व्यापक लोकप्रियता और इसके विपुल उपयोगका कारण बन गया है। गत महायुद्धमें सैनिकोंने इसका बहुत उपयोग किया था।

टामेटाका इतिहास

टामेटाकी खेती सारे भारतमें होती है। शीतके चार मासोंमें इसकी अत्यधिक उत्पत्ति होती है। टामेटा घर द्वारमें बहुत थोड़ी जगहमें भी उत्पन्न किया जा सकता है। टामेटाका मूल-स्थान दक्षिण-अमेरिका और उसमें भी एण्डिज पर्वत है। यहांसे वह उत्तर-अमेरिकामें पहुँचकर वहांसे युरोप होते हुए भारतमें आया। ब्रिटेनके महान् यात्री सर वाल्टर रेलेने सर्वप्रथम रोल नामक द्वीपमें १८२८ ई० में टामेटाका पौधा देखा। रेले इस फलको युरोप ले गया। प्रारम्भमें टामेटाको एक शोभाकी वस्तु माना जाता था। लोग इसे विषाक्त मान कर उपयोगमें न लाते थे। १८५० ई० के बाद यह खाद्य रूपमें स्वीकृत हुआ। लाल रंग होनेके कारण टामेटा आज भी कुछ भारतीय लोगोंके लिये अग्राह्य है।

टामेटा और नारंगी

टमाटर नारंगी (सन्तरे)में पाये जाने वाले अनेकशः तत्वोंसे सम्पन्न है। नारंगी मँहगी होनेसे उसे अमीरोंका फल कहा जाता है। नारंगी (सन्तरे)का उपयोग धनिक वर्ग ही कर सकता है। किन्तु टमाटर तो गरीबसे गरीब लोग भी ले सकते हैं। नारंगी और टामेटा—दोनोंमें 'सी' विटामिन विद्यमान है। नारंगीमें निहित कैलशियम, फासफरस और अन्य जीवन तत्व टामेटामें पाये जाते हैं।

आयुर्वेदकी दृष्टिसे टामेटा

टामेटा रक्तशोधक है। इसके सेवनसे पाण्डु रोग, कब्ज, बवासीर, मन्दाग्नि, रक्तविकार, स्कर्वी, यकृत्विकारके रोग और जीर्णज्वर दूर होते हैं।

टामेटाका विश्लेषण

टामेटाका विश्लेषण करने पर उसमें निम्नलिखित तत्व

पाये गये हैं:—जल ९२.८ प्रतिशत, प्रोटीन १.६ प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेड ४.५ प्रतिशत, फासफरस ०.०४ प्रतिशत, खनिज पदार्थ ०.७ प्रतिशत, वसा ०१. प्रतिशत, कैलशियम ०.०२ प्रतिशत रेशा, ०.६ प्रतिशत, १०० ग्राममें २.४ मिलीग्राम लोहा। एक अमेरिकन डाक्टरने लिखा है कि शरीरमेंसे रोगजनक पदार्थोंको निकालने और नवीन शक्तिशाली कोषोंको उत्पन्न करने वाला टामेटा निस्सन्देह चिकित्साका कोष संग्रह (मटेरिया मेडिका) है। परिपक्व टामेटामें जीवन-तत्व (विटामिन) भरपूर होता है। खोजे हुए छः प्रकारके जीवन तत्वोंमेंसे पांच अकेले टामेटामें विद्यमान हैं। इतने प्रचुर जीवन-तत्व अन्य किसी फल या शाकमें उपलब्ध नहीं।

टमाटर के उपयोगी तत्व

(१) खनिज सार इसमें प्रचुर परिमाणमें होनेसे यह रक्तको अम्लताके विषसे बचाता है। रक्तको यह सतत प्रत्यम्ल बनाकर शुद्ध रखता है। रक्तकी रोग-प्रतिरोधक शक्तिको बढ़ाता है। दूधसे दूना और अण्डेकी सफेदीसे पांच गुना अधिक लोह इसमें है, चूनेका क्षार इसमें सेव और केलेसे भी अधिक पाया जाता है। पोटाश नामक क्षार भी इसमें विपुल मात्रामें विद्यमान है। इसके अतिरिक्त अन्य लवणोंमें मेंगेनिक सल्फर और फासफरस भी इसमें है। साइट्रिक एसिड आदि अम्ल भी इसमें निहित है।

टमाटर और आरोग्य

(१) टामेटाके रसका एक प्याला आरोग्यके लिये अमृतोपम है। टामेटोंको भलीभांति धोकर उनके रसको कभी भी छानिये नहीं। रसमें थोड़ा-सा अदरखका रस और जीरा मिलाकर पी ले शरीरको आवश्यक परिमाणमें क्षार और जीवनतत्व उपलब्ध होते हैं। इस प्यालेमें कब्ज मार भगाने, रोगग्रस्त यकृतको आरोग्यसम्पन्न बना देने तथा रक्त शुद्धकर चर्म-रोगों को निर्वासित करनेकी अद्भुत शक्ति है। छोटे बालकोंको इस प्रकार थोड़ा रस पिलाना अत्यावश्यक है।

(२) छोटे बच्चोंको अनाज न खिलाकर टामेटाका रस पिलाना अतीव हितकर होगा। इससे शरीरका विकास होता है और दांत निकलते समय बच्चा भारी कष्टसे सुरक्षित रहता है—बच जाता है। निस्सन्देह १० मासतक बच्चेको दूधके अतिरिक्त अन्य वस्तु देनेके हम विरोधी हैं।

(३) टामेटा रक्तमें प्रत्यम्लता का परिणाम स्थिर रखता है। फलतः रक्तगोलकोंकी मात्रामें पर्याप्त वृद्धि होती है। पाण्डुरोग-पीड़ितोंके लिए टामेटा सचमुच आशीर्वाद है।

(४) अस्थि, आंत, मूत्रपिण्ड और अन्य शरीरगत अवयवोंको इससे लाभ होता है। हठीले मूत्रपिण्ड तथा मधुमेहके रोगोंको टामेटा स्वेच्छापूर्वक ग्रहण करना चाहिए।

(५) टामेटाको साथ लेकर शाक कचूम्बर और अन्य स्वादिष्ट खाद्य-सामग्री बनाई जा सकती है। टामेटाकी कतरी, प्याजकी कतरी, अदरक आदिकी चटनी बनाकर नीम्बू निचोड़ कर खानेसे भोजनमें स्वाद आता है और स्वास्थ्य प्रफुल्ल हो उठता है।

एक महत्वपूर्ण सुझाव

टामेटाको आगपर अधिक उबालने या पकानेसे उसके जीवनतत्व नष्ट हो जाते हैं। टामेटासे वास्तविक लाभ वही उठायेगा, जो इसका प्राकृतिक रूपमें (बिना अग्नि-संस्कार किए) ही सेवन करेगा। टामेटाके छिलकों और बीजोंको निकाल फेंकना भी उचित नहीं। ऐसा करनेको तो तत्व फेंककर कचरा खाना ही माना जायेगा। स्टार्चयुक्त भोजनके साथ टामेटा न लेना चाहिए।

विद्वानोंके मत

प्रोफेसर चार्ल्स विकनहायने टामेटाका महत्व बताते हुए लिखा है:—"टामेटा शय्याधीन रोगी और शक्ति-सम्राट मल्ल—दोनोंके लिए समान हितकर है। सभी शाकोंमें यह सर्वोत्तम पदार्थ है। बीमार व्यक्तियोंके लिए और उसमें भी जो जठराग्निसे पीड़ित हैं, उनके लिये टामेटा ईश्वरदत्त महान् पुरस्कार है।"

डाक्टर रसेलका मत है—"टामेटा विद्रधिको मिटाता है। विद्रधि केन्सर रोग, मांस आदिके आहारके कारण रक्तमें जो विकार आ जाता है वह टामेटा दूर कर देता है। टामेटा रक्त-शोधक तो है ही; साथ ही विजातीय द्रव्योंका भी नाश कर देता है।

डा० जानबुल लिखते हैं—"मैं अपने रोगीको टामेटा खानेकी सलाह देता हूं। जठर, आंत और रक्त-रोगियोंको मैंने मात्र टामेटासे चङ्गा बना दिया है।

बर्नरमेकफेडनका कथन है—"मेरा प्रिय भोजन टामेटा है। मेरे आरोग्य और दीर्घजीवनकी कुंजी टामेटा है।"

कुछ अनुभूत औषधियां

बिच्छू काटने पर

१—चीनी, अर्थात् खांडको थोड़े पानीमें मिला कर गाढ़ा गाढ़ा बिच्छू काटेके स्थान पर लेप कर देवें, ५।७ मिनटमें ही विष उतर जायगा।

२—नौसादरको प्याजके रसमें मिलाकर काटे हुए स्थान पर लेप कर देवें, आराम हो जायगा।

कुत्तेके काट लेने पर

कुत्ता काट खावे तो तुरन्त ही लालमिर्च सरसोंके तैल में पीसकर काटे हुए स्थान पर लगा लें और ऊपरसे पट्टी बांध दीजिये। अच्छा होने तक उस स्थानको पानीसे बचाते रहिए।

कानखजूरा चिपक जाने पर

१—मूलीका रस निकालकर उस पर डालनेसे छूट जाता है।

२—चिपके हुए कानखजूरे पर कडुआ तेल डालनेसे भी छूट जाता है।

सर्पका विष उतारनेकी औषधियाँ

१—केलेके छिलकेका रस दो तोले और कालीमिर्च दस या बारहका चूर्ण मिला लेवें। जिस मनुष्यको सर्पने काटा हो उसे पिला दीजिये। जब तक विष न उतर जावे, एक एक घंटा बाद पिलाते रहिये। विष दूर हो जायगा। यह दवा दांत भिचजाने पूर्व ही करनी चाहिये।

२—यदि रोगी बेहोश हो गया है तो रीठेका पानी रोगीके कानमें ४-५ बूंद टपकानेसे भी लाभ होता है।

सांपके काटने पर प्राकृतिक चिकित्सा

सांपने काट खाया हो तो जमीनमें एक लम्बा गढ़ा खोदकर उसमें गीली मिट्टीकी एक तह बिछा दीजिये और सांपने जिस मनुष्यको काटा हो उसे उस स्थान पर लिटा दीजिये। फिर दायें बायें और ऊपर भी गीली मिट्टी इस प्रकार रख दीजिये कि केवल उसका सिर और चेहरा निकला रहे, सारा शरीर मिट्टीके सम्पर्कमें आजावे, तब उसे शान्तिपूर्वक वहीं पड़ा रहने देवें। ३० या ४० घण्टोंमें उसे होश आ जावेगा। और विष उतर जावेगा तब मिट्टी हटाकर उसे उठा लीजिये।

आक और उससे लाभ

आकको मदार अकौआ या आकड़ा भी कहते हैं। आक गर्मीके दिनोंमें रेतीली भूमिमें होता है और वर्षा ऋतुमें सूख जाता है।

१—आकके पीले पत्ते पर घी लगाकर और आग पर सेक कर उसका रस निकालें और थोड़ा कानमें डाल देवें तो आधा शीशीका दर्द तथा बहरापन दूर होता है।

२—आकके चौथाई पत्ते पर कत्था चूना लगाकर पानकी तरह खानेसे दमा रोग जाता रहता है।

३—आकके सूखे पत्तोंको आग पर डालकर उसका धुंआ मलेन्द्रिय (गुदा) पर लेनेसे बवासीरका रोग जाता रहता है।

४—आकका फूल, जीरा और कालीमिर्च के साथ खाने से खांसी जाती रहती है।

५—आककी रुई रक्त बहनेके स्थान पर रख देनेसे रक्त (खून) बन्द हो जाता है।

६—आकका दूध पैर के अंगूठे पर थोड़ा थोड़ा दिन में कई बार लगाने से दुखती हुई आंख ठीक हो जाती है।

भाग्यफल

लेखकः—श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य

फाल्गुन मासमें जन्मे व्यक्तियोंका फलादेश

इस मासमें जन्में व्यक्तियोंका स्वभाव मिलनसार होता है, ये आवश्यकताके समय अपना रूप बहुत जल्दी बदल लेते हैं। इनके मनकी थाह पाना बड़ा कठिन है। मनुष्यको पहचाननेकी शक्ति इनमें अधिक होती है। ये अवसरवादी होते हैं, अवसर मिलते ही आगे बहुत बढ़ जाते हैं। सामाजिक भावना इनमें अधिक रहती है। सभा-सोसाइटियोंमें अधिक भाग लेते हैं, सेवावृत्ति भी पाई जाती है। इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंमेंसे अधिकांश मानव-जीवनके लक्ष्य को हृदयं-गम कर अनुकूल जीवनका विशिष्ट लक्ष्य चुन उसे दृढ़ताके साथ प्राप्त करते हैं। आत्मविश्वासकी भावना बलवती रहती है।

एक अंग्रेज ज्योतिर्विद्ने इस मासवालोंका फल बताते हुए कहा है कि इनके जीवनमें आशाका लघु-दीपक झिलमिल-झिलमिल प्रकाश कर जीवन-मार्गको अलकृत और आनंदपूर्ण करता रहता है। परन्तु इनके साथ एक कठिनाई यह रहती है कि संगीतके प्रभावके कारण इनका सर्वनाश भी हो जाता है। हृदय इनका इतना कोमल होता है कि दूसरेका रंग बहुत आसानीसे चढ़ जाता है। यद्यपि ये स्वतंत्र-विचारके होते हैं परन्तु कभी-कभी गोचरमें अष्टम केतुके आनेसे इनकी बुद्धि तर्कहीन हो जाती है तथा मोहका आवेग इतनी तेजीसे बढ़ता है, जिससे इनका पतन भी हो जाता है।

नारदसंहिताकारने इस मासवालोंकी मानसिक अवस्थाका विश्लेषण करते हुए बताया है कि ये भावुक और संवेदन-शील होते हैं। सहानुभूतिकी तरंगें इनके विचारोंमें कम्पन उत्पन्न करती रहती हैं। इनकी भावनायें अच्छी, पर विचार बिखरे हुए और शिथिल होते हैं। कभी-कभी बुरे और विरोधी विचारोंकी तरंगें इन्हें पराजित कर लेती हैं। तात्पर्य यह है कि बुद्धि स्थानमें गोचरके शनि या राहुके आने पर मन दुर्बल, विचार शिथिल और शक्ति हीन भावनायें उच्च एवं गतिहीन होती हैं। इस अवस्थामें इन व्यक्तियोंके ऊपर अन्य लोगोंका प्रभाव बहुत आसानीसे पड़ता है, जिससे इनका चारित्रिक पतन भी हो सकता है।

अध्ययनकी दृष्टिसे विचार करने पर प्रतीत होता है कि इस मासवाले भाषाविज्ञान, कला, दर्शन, समाज-शास्त्र, भूगोल, पुरातत्व, चिकित्सा एवं अर्थशास्त्रके अच्छे ज्ञाता होते हैं। १२ प्रतिशत शिल्प कला के ज्ञाता, १४ प्रतिशत चिकित्सकः १६ प्रतिशत प्रोफेसर, शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, सम्पादक लेखक १८ प्रतिशत अन्वेषक, वैज्ञानिक, तथा नवीन वस्तुओंके आविष्कर्त्ता एवं शेष ४० प्रतिशत अशिक्षित और अक्षर ज्ञानसे रहित होते हैं। कृषक वर्गके लोग इस मास वाले वनस्पति विज्ञानमें निपुण हो सकते हैं, खेतीके उतार-चढावका ज्ञान अच्छा रहता है।

यदि इन्हें कृषिकी शिक्षा दी जाय तो ये उसमें अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इनके विचार स्वतंत्र होते हैं, ग्राम पंचायतमें इनका प्राधान्य रहता है। मस्तिष्क परिष्कृत और कार्य करनेकी शक्ति अधिक होती है। आलस्यको ये अपने पास भी फटकने नहीं देते।

यद्यपि सामाजिक सुधार करनेकी ओर इनकी रुचि

७—आकका दूध उस स्थान पर जहांके बाल उड़ गये हों रगड़नेसे कुछ दिन में बाल उग आते हैं।

८—आककी जड़ दूधमें औटा कर उस दूधका घी निकाले और फिर उस घीको औषधिकी तरह खाते रहनेसे नहरुआ रोग जाता रहता है।

९—आककी जड़को जलाकर राख कर लेवें फिर कडुवे तेलमें मिलाकर शरीरमें मलनेसे खुजली रोग जाता रहता है।

—

होती है, किन्तु वे इसमें सफल नहीं हो सकते। प्राचीन विचारके लोग इनसे असंतुष्ट रहते हैं। पर इन्हें किसीकी परवाह नहीं रहती, जितना संघर्ष इनके सामने आता है उतने ही विचारोंके पक्के होते जाते हैं। एक वर्ग विशेषके लोगों पर इनका प्रभुत्व रहता है। न्याय और तर्कके ये बड़े कायल होते हैं, बिना न्यायके ये एक पैर भी आगे नहीं बढ़ना चाहते हैं, कार्य करनेकी लगन भी इनमें अपूर्व होती है, जहां रहते हैं वहांका वातावरण सदा गतिशील रहता है। इनके जीवनमें ऐसे एक दो अवसर आते हैं जिनमें इन्हें अधिक मान मिलता है। यदि इनके साथ कड़ाई का व्यवहार किया जाता है तो ये उसे सहन नहीं करते हैं और तुरन्त बगावत कर बैठते हैं।

वैसे तो ये सादा व्यवहार पसन्द करते हैं, किन्तु विशेष अवसरों पर खुशामद भी पसन्द करते हैं। जो व्यक्ति इनकी खुशामद करता है, वही इन्हें ठग सकता है।

इस मासवाले किसी भी कार्यका प्रारंभ बड़ी तत्परतासे करते हैं, किन्तु मध्यमें विघ्न आने पर उस कार्यको अधूरा ही छोड़ देते हैं। अन्त तक करनेकी क्षमता इस मासवालोंमें कम ही व्यक्तियोंमें पाई जाती है। अध्ययन, अध्यापन अन्वेषण और कलाके कार्योंमें इन्हें अधिक सफलता मिल सकती है। ये कार्य इनकी अभिरुचिके अनुकूल होनेके कारण अधिक सफलताके साधन माने गये हैं।

आचार्य नारचन्द्रका मत है कि ये लोग बड़े हौसले वाले होते हैं, इन्हें साधारण पदसे संतोष नहीं होता। ये सदा उत्तरदायी पदके अभिलाषी रहते हैं। दूसरों पर अधिकार जमानेकी चिन्ता इन्हें सदा लगी रहती है। अपने व्यवसायमें इन्हें पूर्ण लाभ होता है। इस मासके जन्मे जो व्यक्ति छोटे-छोटे रोजगारके कार्य करते हैं, उन्हें अच्छा लाभ होता है। बड़े व्यापारियोंको मशीनरीके कार्यमें अधिक सफलता मिलती है। यों तो इन्हें आय साधारणतः अच्छी होती है, व्यय भी इनका आयके बराबर होता है। धन संचयकी प्रवृत्ति होते हुए भी ये संचित करना नहीं जानते हैं। एक तरह से इन्हें धन बचाना आता ही नहीं है। यद्यपि ये किफ़ायत सारीसे काम लेना चाहते हैं, किन्तु अपनी आदत से लाचार होनेके कारण किफ़ायती कार्य इनसे होता नहीं है।

रविवारी पंचमी तिथिको जन्म ग्रहण करने वाले इस मासके व्यक्ति भद्र परिणामी, कार्य कुशल और देश सेवक बनते हैं। इन्हें सांसारिक कार्योंमें अभूतपूर्व सफलता मिलती है। मंगलवारको भरणी नक्षत्रमें जन्म ग्रहण करने वाले खूंखार और लड़ाकू होते हैं। गुरुवारको पुष्य नक्षत्रमें जन्मे इस मासके व्यक्ति विद्याप्रेमी, धनी, सुन्दर और स्वस्थ होते हैं। श्रवण नक्षत्र में गुरुवार या सोमवारको जन्मे व्यक्ति धर्मात्मा, शान्तपरिणामी, परोपकारी और उत्कृष्ट अध्यात्म प्रेमी बताये गये हैं। इनकी विचार-धारा मौलिक और जगत्के लिये सुखकर होती है।

श्रवण नक्षत्रके प्रथम चरणमें जन्मे व्यक्ति वाद्य-प्रिय और विलासी भी बताये गये हैं। सोमवारको एकादशी तिथिमें जन्म लेने वाले उत्कृष्ट धनी होते हैं, इन्हें कहींसे धनकी प्राप्ति होती है। जिनका जन्म इसी दिन २७ घटी ५६ पल इष्टकाल पर होता है उन्हें लाटरी या जमीनसे धनकी प्राप्ति होती है। इनका भाग्य अच्छा होता है। जहां रहते हैं वहां सभी लोग इनके प्रेमी हो जाते हैं। इनमें एक विशेषता यह भी पाई जाती है कि ये अपनी बातचीतकी हुशियारीसे अन्य लोगोंको जल्द ही अपने अनुकूल बनालेते हैं।

विवाह और मित्रता—इस मासके जन्मे व्यक्तियोंके मित्र अधिक होते हैं, प्रायः इनके सभी मित्र हंसमुख और मिलनसार होते हैं। बचपनके साथी भी जीवनके अन्त तक मित्रता निभाते हैं। विवाह इनका अच्छी सुन्दर स्त्रीसे होता है। ६५ प्रतिशत इस मासवालोंका विवाह होता है। विवाह के वर्ष ८, १४, १५, १८, २०, २१, २२, २४, २६, ३२, ३८, और ४२ बताये गये हैं। इन्हें कौटुम्बिक सुख अच्छा मिलता है, प्रायः इस मासवाले सभी व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय बीतता है। जिनका जन्म इस महीने में १, २, ५, ६, ६, ११ और १३ तिथियोंमें होता है—उनके प्रायः दो या तीन विवाह होते हैं, पर इतना यहां विशेष अवगत करना चाहिए कि इष्टकाल की घड़ियां सम और पल विषम होनेसे इस फलमें व्यतिक्रम भी हो सकता है।

वासना और नैतिकताकी दृष्टिसे इस महीनेके जन्मे व्यक्ति साधारणतः दृढ़ चरित्र वाले होते हैं, बहुत कम अनैतिक मिलेंगे। इनकी आत्मा कुपथमें जानेसे बहुत घबराती है और सर्वदा न्याय मार्ग पर चलना ही उन्हें इष्ट होता है। ३४ वर्षकी अवस्थाके बाद शुक्लपक्षमें जन्मे व्यक्ति कुछ झक्की और वासनाग्रस्त होते हैं। होलिकाष्टकमें जिनका जन्म होता है वे प्रायः कार्य कुशल होते हैं। किन्तु इनका लैङ्गिक आचरण शिथिल होता है। इनकी एक या दो उपपत्नियां रहती हैं।

घातक वर्ष—इस मासवाले व्यक्तियोंका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहता है। रक्तचाप, बवासीर, प्रमेह और स्नायु विकारके रोग इन्हें होते हैं। १, ५, ८, ११, १७, २७, २६, ३४, ३५, ३८, ४२, ४३, ४८, ४६, ५२, ५३, ५५, ५७, ६२, ६८ और ७१ वें वर्ष घातक बताये गये हैं, जिनका जन्म रविवारको होता है उनके लिए १७ वां वर्ष अकाल मृत्यु द्योतक है। २१, २७, २६, ३५, ३७, ३८, ४२, ४३, ४५, ४६, ५३, ५५, ५७ और ६३ वें वर्ष इन्हें घातक होते हैं। सोमवारको जन्म ग्रहण करने वालोंके लिए ३६ वें वर्षमें बड़ी भारी बीमारी आती है। इसके अनन्तर ५२, ५५, ६२ और ६८ वें वर्ष घातक होते हैं। मंगलको जन्म लेने वालोंके लिए २६, २७, ३१ और ३४ वें वर्ष कष्टदायक बताये गए हैं।

बुधवारको जन्मे व्यक्तियोंके लिए १६, २१, २५, २७, ३४, ३८ और ५३ वें वर्ष कष्टदायक। गुरुवारको जन्मे व्यक्तियों के लिए १४, १८, २७, २६, ४३, ४६, ६२, और ६८ वें वर्ष कष्टदायक। शुक्रवारको जन्मे व्यक्तियों के लिए ११, २६, ४३, ४४, ५३, ५५, ५६ और ६५ वें वर्ष घातक एवं शनिवारको जन्मे व्यक्तियोंके लिए २८, ४२, ४६, ५२, ५७, ६५, ६८ और ७१ वें वर्ष घातक होते हैं। वायुकारक वस्तुएं इन्हें अधिक हानि पहुंचाती हैं।

अनुकूल समय—माघ, चैत्र, अगहन (मार्गशीर्ष) और वैसाख इस मासके जन्मे व्यक्तियोंके लिए अच्छे होते हैं। तिथियोंमें २, ३, ४, ६, ११, १३, १४ और १५ विशेष सिद्धिदायक हैं। गुरुवार, शुक्रवार और मंगलवार अच्छे होते हैं। शनिवार और १२ तिथि हानिकारक है। २८ वर्षकी आयुसे लेकर ३५ वर्षकी आयु तकका समय विशेष सावधानीका है। इस समयका सदुपयोग करनेसे सारा जीवन सुधर जाता है। जन्मसे २१, २३, ३३ और ३७ वें वर्ष आर्थिक और सामाजिक दृष्टिसे अच्छे नहीं होते। इन वर्षोंमें अधिक परिश्रम करनेकी आवश्यकता है। जहाँ तक संभव हो मुकद्दमेबाजीसे उपर्युक्त वर्षोंमें अवश्य बचना चाहिए। ४२ वर्षकी आयुमें एक बड़ा भारी झंझट सामने आता है। इससे बचनेके लिए रविवारका व्रत करना चाहिए।

आर्थिक स्थिति—इस मासमें जन्मे व्यक्ति साधारण धनी होते हैं। नौकरीकी अपेक्षा व्यापारसे धन अधिक कमाते हैं। २५ वर्षकी अवस्थामें भाग्योदय होता है। २५, २८, ४०, ४५, ५१ और ६३ वें वर्षोंमें इनकी आय अच्छी होती है। खर्चके लिए इन्हें कष्ट कभी नहीं होता है। पर विशेष धनी कम ही व्यक्ति होते हैं। पैतृक सम्पत्ति इन्हें अवश्य कुछ मिलती है।

संतान सुख—फाल्गुन मासमें जन्मे व्यक्तियों के लिए संतान-सुख साधारण होता है। इन्हें १८, २० २२, २३, २५, २७, २६, ३३, ३४, ३६, ३७, ३६, ४२, ४३, ४५, और ४६ वें वर्षमें संतान प्राप्ति होती है। जिनका जन्म शुक्लपक्षकी २, ४, और ५ को मध्यान्ह के बाद होता है, उन्हें तीन पुत्र और दो कन्याएं होती हैं। इसी पक्षकी ७ और ८ तिथिको आधी रातके बाद जन्म

लेने वालोंको पांच पुत्र और तीन कन्यायें, इन्हीं तिथियोंमें दोपहर के पहले जन्म लेने वालोंको केवल तीन पुत्र होते हैं।

कृष्णपक्ष की १, ३, ४ और ७ तिथिको अपराह्नमें जन्म लेने वालोंको प्रायः संतानाभाव, मध्यान्हके पूर्व जन्म लेने वालोंको ४ पुत्र और १ कन्या, मध्य-रात्रिके पूर्व जन्म लेने वालोंको एक पुत्र और तीन कन्यायें और रात्रिके अंतिम पहरमें जन्मे व्यक्तियोंको ४ पुत्र होते हैं। इसी पक्षमें ५, ८, ११ और १३ तिथियोंमें प्रातःकाल तिथि प्रारंभ होनेके दो घण्टे भीतर जन्मे व्यक्तियोंको ४ पुत्र और ३ कन्याएँ, दो घंटेके बाद और ५ घंटेके पहले जन्मे व्यक्तियोंको केवल ५ कन्यायें, मध्यान्ह समयमें जिस समय छायाका अभाव हो, जन्मे व्यक्तियोंको संतानाभाव या अल्पसंतान, मध्यान्ह के आधा-घंटा दिन ढल जानेके बाद इन तिथियोंमें जन्में व्यक्तियोंको बहु संतान, और रातमें जन्मे व्यक्तियोंको दो पुत्र और ५ कन्यायें होती हैं। यों तो इस मासवाले अधिकांश व्यक्तियोंको अल्प-संतान सुख या संतानाभाव होता है। इन व्यक्तियोंको प्रतिदिन पीपल या तुलसीके पेड़के पास कुछ समय रहना चाहिये।

फाल्गुन मासमें जन्मी नारियोंका फलादेश

इस मासमें जन्मी देवियां रूपवती और गुणवती होती हैं। इनका गार्हस्थिक जीवन साधारणतः अच्छा रहता है। प्रबन्ध करनेमें ये निपुण होती हैं, घरेलू उद्योग धंधोंमें भी इनका मन खूब लगता है। ये जिस कार्यको अपने हाथमें लेती हैं, कलापूर्ण ढंगसे उसे करती हैं। इनका स्वभाव अच्छा होता है। पढ़ने लिखनेसे इन्हें प्रेम रहता है और शिक्षाके क्षेत्रमें अच्छी उन्नति कर लेती हैं। प्रबन्ध कार्यमें इन्हें अच्छी सफलता मिलती है, संघर्षसे इन्हें भय रहता है, थोड़ेसे झंझटोंके आने पर घबड़ा जाती हैं। इनका मानसिक विकास योग्य साधनोंके मिलने पर अच्छा होता है। न्यायालय संबंधी कार्योंको भी ये योग्यतापूर्वक कर सकती हैं। इनकी अभिरुचि सामाजिक कुरीतियोंको दूर करनेकी ओर रहती है। अवसर आने पर ये क्रियात्मक कार्य भी कर सकती हैं। सहनशीलता, मृदुलता, दयालुता, परोपकारिता और उदारता आदि गुण इनमें पाये जाते हैं। जिन देवियों का जन्म कृष्णपक्षकी २, ५, ७, ८ और १२ तिथियोंमें होता है, वे गृहस्थीके कार्यमें और भी अधिक निपुण होती हैं।

इस मासमें जन्मी देवियोंका विवाह पौष, आषाढ़ और माघ मासके जन्मे व्यक्तियोंके साथ कर देने पर अच्छा होता है। इन पुरुषोंके साथ इनका दाम्पत्य जीवन सुखमय बीतता है। जिनका जन्म इस मासकी २, ७, ८, १०, ११, १२ और १५ तिथिको होता है उनका वैवाहिक जीवन वैशाख और श्रावण मासमें उत्पन्न व्यक्तियों के साथ विवाह करनेसे अधिक सुखमय रहता है। १९ वर्षकी अवस्थामें इस मासमें जन्मी नारियोंके साथ एक अद्भुत घटना घटती है, जिससे इनके जीवनमें एक विचित्र प्रकारका परिवर्तन होता है। १६ वर्षकी अवस्थासे लेकर २३ वर्षकी अवस्था तकका समय विशेष सावधानीका है।

इन्हें संतान-सुख अच्छा होता है। प्रायः इन्हें ७ तक संताने होती हैं, कृष्णपक्षकी जन्मी नारियोंके ऊपर ४२ वर्ष की अवस्थामें विपत्ति आती है, जिससे इन्हें सब प्रकारका कष्ट होता है, यदि इस कष्टनिवारणके लिए वे रविवारका व्रत ४० वर्षकी आयुसे करें तो अधिक अच्छा हो। इनके लिये घातक वर्ष १, ४, ८, १३, १६, २४, २६, २९, ३२, ३५, ३९, ४२, ४५, ४६, ५७, ६२ और ६५ वें हैं। इन वर्षोंके अतिरिक्त जन्मसे ४, ५, ७ और ८ वें मास भी अनिष्ट कारक हैं। इन्हें २४ वर्ष की आयु में एक बीमारी होती है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

आधार पर कर्तव्याकर्तव्यकी परिभाषायें और उनके सिद्धान्तके पोथे बना डालते हैं। शासक शास्य शास्त्र सभी फिर अपनी अपनी बुद्धिके अनुरूप देखने दिखानेका प्रयत्न चलता है। किन्तु अनन्त शक्ति इस आत्मामें बहिर्मुखताकी भी कोई सीमा है क्या। यदि कहींसे — 'हमें क्या करना चाहिये' ऐसा प्रश्न सुनाई दे तो सुनने वाला पहिले अपनी परिस्थिति देखे और फिर प्रष्टाकी परिस्थिति देखे, पश्चात् अपनी सदसद्विवेकवती बुद्धिके आश्रयसे उसका समाधान करे। हां, किसी भी अणुमें सदसद्विवेकवती बुद्धिका प्रादुर्भाव बिना आत्म महादेवके अनुग्रहके नहीं होता। आत्माऽनुग्रह भी अन्तर्मुखताके तारतम्यसे न्यून और अधिक माना जाता है। आत्माऽनुग्रहकी परात्पराकाष्ठासे ही अन्तर्मुखताकी पराकाष्ठा समझी जाती है। अन्तर्मुखताकी पराकाष्ठाके लिये पूर्ण निरपेक्षताका आश्रय लेना पड़ता है। निरपेक्षताका निर्वचन श्रीसद्गुरु भगवदनुगृहीत महापुरुष ही ठीक कर सकते हैं।

प्रदोष व्रतकी शास्त्रीय महत्ता एवं पूजाविधि

[लेखकः —श्री पं० मदनगोपालजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य]

यह व्रत शिवजीकी प्रसन्नता और प्रभुत्वकी प्राप्तिके प्रयोजनसे प्रत्येक महीनेकी कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षोंमें त्रयोदशीको निष्पन्न होता है। भगवान् आशुतोष शिव की पूजन और रात्रि-भोजनके अनुरोधसे इसे प्रदोष कहते हैं, जैसे—"शिवपूजानक्तभोजनात्मकं प्रदोषम्" उपरोक्त व्रतका व्रतव्यापीकाल सूर्यास्तसे २ या ३ घटी रात्री बीत जाने तक प्रशस्त माना जाता है। इसके लिए शास्त्र प्रमाण निम्नलिखितानुसार जानना चाहिये—

"प्रदोषोऽस्तमयादूर्ध्वं घटिकाद्वयमिष्यते।
प्रदोषोऽस्तमयादूर्ध्वं घटिकात्रयमिष्यते॥"

इस व्रतकी महती श्रेष्ठताके लिए स्कन्दपुराणमें इस प्रकार लिखा है, वह वचन इस प्रकारसे है—

"यो वै प्रदोष समये परमेश्वरस्य
कुर्वन्त्यनन्य मनसोऽङ्घ्रि सरोज सेवाम्।
नित्यं प्रवृद्ध धनधान्य कलत्र पुत्र
सौभाग्य सम्पदधिकास्त इहैव लोकाः॥"

तात्पर्य यह है कि जो मानव प्रदोषके समय परमेश्वर (भगवान् शंकर) के चरण कमलका अनन्य मनसे आश्रय लेता है—उसके धन-धान्य, स्त्री पुत्र, बन्धु बान्धव और सुख सम्पत्ति सदैव बढ़ते रहते हैं। यदि कृष्ण पक्षमें सोम और शुक्ल पक्षमें शनिवारका योग प्राप्त हो जाय तो उस प्रदोष व्रतका महत्व अधिक फल कारक हो जाता है। इस व्रतमें प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी मान्य होती हैं लिखा भी है—

यदा त्रयोदशी कृष्णा सोमवारेण संयुता।
यदा त्रयोदशी शुक्ला मन्दवारेण संयुता॥
तदातीव फलं प्राप्तं धनपुत्रादिकं लभेत्॥

परन्तु ग्रन्थान्तरमें शनि प्रदोषकी कुछ विशेषतामें निम्न-लिखित वाक्य और भी मिलते हैं वह इस प्रकार हैं—

शनिवारे प्रदोषोऽयं दुर्लभः सर्वदेहिनाम्।
तत्रापि दुर्लभस्तस्मिन् कृष्णपक्षे समागते॥

परन्तु जो भी कुछ हो 'शनि प्रदोष' वास्तवमें महत्वपूर्ण व्रत है। और इस व्रतके करनेसे पुत्र होता है।

कृष्णपक्षके प्रदोषमें प्रदोषव्यापिनी परविद्धा त्रयोदशी मान्य होती है, वही ली जाती है. और शुक्लपक्षमें पूर्वविद्धासे भी कार्य लग जाता है, इस व्रतके लिये तिथिका निर्णय इस प्रकारसे लिखा है—

शुक्लत्रयोदशी पूर्वा परा कृष्णात्रयोदशी।
यदा तु कृष्णा पर विद्धा न लभ्यते तदा पूर्व
विद्धा ग्राह्या॥

कामना भेदसे "प्रदोष व्रतकी महती विशेषतायें" अधोलिखित प्रकारसे भी जानी जा सकती हैं, वे ये हैं—

(१) जिस मानवको 'पुत्राप्ति' की कामना हो तो उसे शुक्ल त्रयोदशीको शनिवारके योगमें व्रतारंभ करके वर्ष-पर्यन्त अथवा फल प्राप्ति तक प्रदोष व्रत करते रहना चाहिए।

(२) जिस पुरुषको 'ऋण मुक्त होना' हो तो उसे त्रयोदशी को भौमवार (मंगलवार) के योगमें व्रतारंभ करना चाहिये जब तक फल प्राप्त न हो जावे।

(३) जिस व्यक्तिको 'सौभाग्य और स्त्री समृद्धिकी' कामना हो तो उसे त्रयोदशीको शुक्रवारके योगमें व्रतारंभ करके फल प्राप्ति तक करते रहना चाहिये।

(४) जिस श्रद्धावान् पुरुषको 'आयु-आरोग्यताकी' कामना हो तो उसे त्रयोदशीको रविवारके योगमें व्रतारंभ करके अभीष्ट प्राप्ति तक करते रहना चाहियें।

(५) जिस मानवको 'अभीष्ट सिद्धि एवं लक्ष्मी प्राप्तिकी' कामना हो तो उसे सोमवारके योगमें व्रतारंभ करके फल प्राप्ति तक व्रतको करते रहना चाहिये।

(६) जिस व्यक्तिको 'व्यापार व्यवसायमें' वर्चस्व प्राप्त करना हो उन्हें त्रयोदशीको बुधवारके योगमें व्रतारंभ करना चाहिये।

(७) जिस मानवको एवं विद्यार्थियोंको 'विद्या और

शास्त्रानुसन्धानमें दक्ष होना होवे तो उन्हें त्रयोदशीको गुरुवारके योगमें व्रतारंभ करके फल प्राप्ति तक निरन्तर करते रहना चाहिये।

व्रतार्थीको चाहिये कि व्रतके दिन सूर्यास्तके समय पुनः स्नानादिसे निवृत्त होकर शिवमूर्त्तिके समीप पूर्व या उत्तर मुख होकर बैठे और हाथमें जल पुष्प गन्ध अक्षत दूर्वा पूगफल लेकर निम्नलिखित प्रकारसे संकल्प पढ़े—

"अथ शुभपुण्यतिथौ सकल श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं पुत्रप्राप्ति कामो वा व्रतमहं करिष्ये।"

यदि निष्काम भावसे व्रत करना हो तो—

"मम शिवप्रसाद प्राप्ति कामनया प्रदोष व्रताङ्गीभूतं शिवपूजनं करिष्ये।"

इस प्रकार सङ्कल्प पढ़े।

तदनन्तर भाल पर सुन्दर तिलक और गलेमें रुद्राक्षकी माला धारण करें, पश्चात् उत्तम प्रकारके फल और गन्ध पुष्प बिल्वपत्रादिसे 'उमामहेश्वर' का पूजापद्धति अथवा वेदपाठी ब्राह्मणके आदेशानुसार निम्नाङ्कित मन्त्रोंसे आवाहन ध्यान और प्रार्थना करें।

भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमते।
रुद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशिमौलिने॥
उग्रायोग्राघनाशाय भीमाय भयहारिणे।
ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः॥

इन मन्त्रोंसे ध्यान और आवाहन करके जलसे भगवान् शशाङ्क-शेखरको स्नान करावें। पुनः चन्दन, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्यसे 'पंचोपचार' 'दशोपचार' अथवा षोडशोपचार यथारुचि—"तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्।"—के द्वारा पूजन समाप्त करके नैवेद्यमें सत्तूके लड्डू (मोदक) समर्पित कर देवें। तदनन्तर वहीं आठों दिशाओंमें आठ दीपक रखकर प्रत्येक के स्थानमें आठ बार नमस्कार करे। तत्पश्चात्—

धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारकः।
अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः पाहि सनातन!॥

से वृषभ (नन्दीश्वर) को जल और दूर्वा खिलापिलाकर उनका पूजन करें। पुनः नन्दीश्वरको स्पर्श करके निम्नलिखित "ऋणरोगादि" पूरा मन्त्र उच्चारण करके शिव-पार्वती सहित नन्दीश्वरकी प्रार्थना करें।

ऋण रोगादि दारिद्र्य पापक्षुदपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥
पृथिव्यां यानि तीर्थानि सागरान्तानि वै तथा।
अण्डमाश्रित्य तिष्ठन्ति प्रदोषे गोवृषस्य तु॥
स्पृष्ट्वा तु वृषणौ तस्य शृङ्गमध्ये विलोक्य च।
पुच्छजं ककुदं चैव सर्वे पापैः प्रमुच्यते॥

उपरोक्त मंत्रमें विशेषता यह है कि प्रदोष कालमें वृषभ (नन्दीश्वर) के पुच्छ और शृङ्ग (सींग) आदिके स्पर्श करनेसे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है। साथ ही त्रितापोंकी निवृत्ति भी सुगमता पूर्वक सम्पन्न हो जाती है।

इस व्रतकी पूर्ण अवधि २१ वर्ष तककी शास्त्रोंमें बतलाई गई है। परन्तु समय और सुविधा एवं सामर्थ्य इतने समय तक करनेकी न हो सके तो मध्यमें (बीचमें) भी उद्यापन करके इस व्रतको विसर्जन कर समाप्त किया जा सकता है—यह शास्त्राज्ञा है—फलमें न्यूनता या कमी नहीं होती।

एतदर्थ उपरोक्त प्रकारसे बतलाये हुये विधि सम्पन्न इस व्रतके प्रभावको दृष्टिगोचर रखते हुये 'श्रीस्वाध्याय' के विज्ञ पाठकोंके लाभार्थ हमने प्रदोष व्रतकी शास्त्रीय महत्ता और पूजाविधि पर पूर्ण परिचय बतलाया है। हमें आशा ही नहीं अपितु दृढ़ विश्वास भी है कि पाठक गण इससे अवश्य लाभ लेंगे।

जिनकी जन्मपत्रिकामें पंचम पंचमेश और पुत्रकारक गुरु अशुभ स्थितिमें हों, बिगड़े हों तथा अन्य किसी कुयोगके द्वारा संतानका अभाव रहता हो, इसी प्रकार पंचम भावके लिये शनिभौम अथवा बुध शुक्र बाधा कारक बने हुये हों उन्हें संतान प्राप्ति अथवा पुत्रोत्पत्तिके लिये श्रद्धापूर्वक नियमानुसार उपरोक्त शिव-प्रदोष व्रतके करनेसे भगवान् चन्द्रशेखरकी कृपासे दीर्घजीवि और सत्पुत्रकी प्राप्ति होती है।

—

मूर्त्यन्तरप्रतिष्ठापन रहस्य

[एक निष्पक्ष विचारक]

मूर्तियां कई प्रकारकी होती हैं और सभी निर्मित होती हैं, जिनका निर्माण किसी देहधारीसे होना संभव है उनको प्रकृति निर्मित नहीं कहा जाता, वे तो विकृति निर्मित ही हैं। विकृति निर्मित मूर्तियोंसे प्रकृति निर्मित श्रेष्ठ मानी जाती हैं। वैसे तो प्रकृति स्वयं भगवान्की मूर्ति है, प्रकृति के दो भेद भगवान् श्रीकृष्णने बताये हैं, उनमें एकका नाम उन्होंने परा बताया है और दूसरेका अपरा। परा एक ही प्रकारकी है और उसका नाम उन्होंने जीव बताया है। इसी प्रकार अपराके आठ भेद बताए हैं, पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार, ये उनके नाम भी उन्होंने बताए हैं। इन दोनों प्रकारकी भगवान्की अपनी प्रकृतिमें करोड़ों-करोड़ों विकृतियोंका निर्माण होता रहता है और उनका स्थापन और विलयन भी। विकृतियों में भी अपेक्षाकृत तारतम्यसे श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ भाव ठहराए गए हैं, फिर इस सम्पूर्ण निर्मातृत्वका श्रेय भगवान्की ओर से प्रकृतिके पल्ले डाल दिया जाता है। निरपेक्षको श्रेष्ठ और सापेक्षको अश्रेष्ठ माना जाता है और यह उचित भी है। निरपेक्षमें स्वतंत्रताका विकास अधिक होता है और सापेक्षमें न्यून, इसी कारण निरपेक्ष प्रबल है और सापेक्ष दुर्बल, अतएव निरपेक्षकी निर्मित अथवा प्रतिष्ठित मूर्तियां प्रबल निर्दोष तथा उत्तम मानी गई हैं और सापेक्षकी उस की अपेक्षया दुर्बल सदोष तथा अधम मानी जाती हैं, घुणाक्षर न्यायसे निर्मित मूर्तियां निरपेक्ष निर्मित हैं, उनका निर्मातृत्व प्रकृति पर है, इसलिए किसी शिलाखण्ड आदिमें अपने आप रेखादिसे जो मूर्ति आदिका भास होता है वह स्वयम्भू मानी जाती है, इसी प्रकार किसी भी देहधारीसे जिसका निर्माण नहीं हुआ उससे किसी भी प्राकृत आधार पर मूर्तिका आभास होता है अथवा भगवत्तत्त्वका साक्षात्कार होता है वे सब स्वयम्भू मूर्तियां हैं, ऐसे ही नर्मदा नदी में एक दूसरेसे रगड़ खाकर बाण कहे जानेवाले प्रकट होनेवाले शिवलिंग तथा गंडकी नदीके भीतर पाए जाने वाले शालिग्राम, विष्णुलिंग, गोवर्धन पर्वतकी शिलाएं आदि अनादि सिद्ध प्रतिष्ठित माने जाते हैं। हां, यहाँ इस बातका अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि बाण, शालग्राम आदिका निर्माण तो प्रकृतिकृत है, किन्तु प्रतिष्ठापन देहधारियोंसे ही किया कराया जाता है। सापेक्ष निर्मित प्रतिष्ठित मूर्तियोंसे तत्वविन्निर्मित प्रतिष्ठित मूर्तियां ही श्रेष्ठ मानी जाती हैं, क्योंकि ज्ञानवान् चेतन है, स्वतंत्र है तथा अज्ञानीकी अपेक्षया निरपेक्ष भी हैं, इसीकारण वह अज्ञानीकी अपेक्षा प्रबल निर्दोष और उत्तम है, अज्ञानी तत्त्ववित् नहीं, ज्ञानवान् की अपेक्षया वह जड़ है, परतन्त्र है तथा सापेक्ष है, इसी कारण वह ज्ञानवान्की अपेक्षया दुर्बल सदोष और अधम है, इन सब बातोंका रहस्य समझकर रहस्यविदोंने अधिकार और कर्तव्योंका पृथक्-पृथक् निर्णय दिया है, इसलिए मूर्ति निर्माण और उसकी प्रतिष्ठा उन उन शास्त्रोंके यथावत् जानने वाले और उसके अनुसार आचरण करने वालोंसे करना कराना उचित है। इन सब बातोंको सभी विद्वान् लोग सदासे सर्व सम्मतिसे स्वीकार करते आए हैं और अभी भी कर रहे हैं, दुराग्रह पिशाचने जिनका मस्तिष्क जकड़ लिया है और जिनका हृदय अश्मसार समान है उनकी बातें निराली हैं, हमारा यह लेख उनके लिए नहीं है।

धर्मविचार शास्त्र (मीमांसा) का यथावत् जिन्होंने अध्ययन किया है और दुराग्रहसे जो दूर हैं उनका कहना है कि मूर्तिका निर्माण और उसकी प्रतिष्ठा जो कि शास्त्रतः प्राप्त है उसे कोई करेगा और कोई नहीं भी, यदि उस शास्त्र पर अपने आपको अधिकारी समझ चलना चाहता है तो करेगा दूसरा नहीं। प्रत्येक शास्त्रकी प्रवृत्ति अधिकारी के अनुसार ही होती है, जो मूर्ति निर्माण और उसकी प्रतिष्ठा केवल रागतः प्राप्त है। उसके करने अथवा न करने पर केवल रुचिको ही प्रधानता होती है, वहां पाप पुण्य आदिकी चर्चा नहीं। शास्त्रतः प्राप्त निर्माण और प्रतिष्ठामें हितको प्रधानता है, रुचिको स्थान नहीं। जिसके हृदयमें "मैं मूर्तिकी प्रतिष्ठा करूंगा उससे मेरा कल्याण होगा मुझे आनन्द प्राप्त होगा अथवा इससे मेरा अकल्याण दूर

हो जायगा दुःख नष्ट हो जायगा'' ऐसी वासना उत्पन्न होगी वही उधर प्रवृत्त होगा, वह ऋषि हो, देव हो, असुर हो अथवा मनुष्य हो। यह वासना उसको हृदयमें अन्तः प्रेरणा से हो, किसी शास्त्रसे हो, अथवा किसी उपदेष्टा गुरुसे हो। ऐसे ही इससे विपरीत वासना जिसके हृदयमें होगी अथवा कोई वासना ही न होगी तो वह मूर्तिकी प्रतिष्ठामें या निर्माणमें प्रवृत्त न होगा। जो इस ओर प्रवृत्त हैं उनको उपदेश लेनेका अधिकारी मानकर उपदेश दिये जाते हैं। मीमांसाके विद्वान् कहते हैं लोगोंके हृदयमें सुखकी उपादित्सा प्रायः रहती है और सुख स्वर्गमें प्राप्त होता है, उस की प्राप्तिके लिए उपाय भी ज्ञात होना चाहिये, इसी बात को भगवती श्रुतिने कहा ''स्वर्ग कामो यजेत'' स्वर्गकी कामना वाला याग करे। यागकी प्राप्ति यहां रागतः नहीं है, शास्त्रतः है, यह अपूर्व विधि है, इसके अनन्तर श्रुतिने कहा ''समे यजेत''। सम देशमें ही याग करे। यह नियम विधान है, सम देशमें यदि याग न करेगा तो प्रायश्चित्तियता और दण्ड्यता होगी। उपनयनके अनन्तर ''अहरहः संध्यामुपासीत'' प्रतिदिन सन्ध्योपासन करे। इस प्रकारके उपदेश अपूर्व विधि हैं और ये नित्य हैं। नित्य हो नैमित्तिक हो अथवा काम्य हो, जो भी अपूर्व विधि होंगे उन सभीके उल्लंघन करने पर दण्ड और प्रायश्चितके भागी होते हैं, इसी प्रकार प्राप्तका ही जो प्रापण है वह नियम विधि है। जैसे 'समेयजेत' सम देशमें यजन अप्राप्त नहीं था उसको जो कहा गया वह इसलिए कि समदेशमें ही याग किया जाय इसका उल्लंघन करने पर दण्ड और प्रायश्चित होगा। तीसरा विधान परिसंख्या विधान कहलाता है, उसमें विहित अनुमतिमात्र होता है और ननुमतके निषेध पर बल दिया जाता है, जैसे 'पंच पंचनखा भक्ष्याः' (पांच नख वाले पांच प्राणियोंका ही मांस भक्ष्य है) मांस भक्षण रागतः प्राप्त है, उसके लिए यह पांच नखों वाले पांचका भक्षण यहां शास्त्र ने अनुमत मान लिया इसका तात्पर्य यह नहीं कि इनको यदि न खाय तो उसे दण्ड हो अथवा प्रायश्चित हो, इसका तात्पर्य तो पांच नख वाले इन पांचोंसे इतर दूसरे जितने भी पंचनख हैं वे सभी अभक्ष्य हैं यह विधेय है। यदि इसका कोई उल्लंघन करेगा तो उसे दण्ड और प्रायश्चित होना चाहिए दूसरी रीतिसे शास्त्रोंका विचार किया जाता है, प्रकृतमें देखिए जब प्रश्न उठा ''मूर्ति निर्माण कौन करे ?'' 'मूर्ति प्रतिष्ठा कौन करे' तो स्वभाविक है कि सभी विद्वानोंको सभी शास्त्रोंमें एक ही उत्तर मिलेगा कि ''मूर्ति निर्माण तत्वविद् मूर्ति निर्माण करे ?'' और ''मूर्तिप्रतिष्ठा तत्वविद् मूर्ति प्रतिष्ठा करे'' यह नियम विधान है, इसको उल्लंघन करने पर प्रायश्चित् और दण्ड भी होगा। उसके पश्चात् यह प्रश्न उठा कि मूर्तिनिर्माण होनेके पश्चात् ज्ञात हुआ कि यह मूर्ति सदोष है अब इसका क्या किया जाय ? इस पर विद्वानोंने निर्णय किया कि यदि वह निर्दोष बनाई जा सकती है तो निर्दोष बनाओ, अन्यथा दूसरी मूर्तिका निर्माण करो, प्रतिष्ठा तो निर्दोषकी ही होगी सदोष की प्रतिष्ठा निषिद्ध है।

मीमांसकोंका सिद्धान्त है कि ''यःस्तूयते सा विधीयते'' जिसकी स्तुति की जाती है वह विधेय है। और ''यो निन्द्यते सा निषिद्ध्यते'' (जिसकी निन्दा की जाती है वह निषेध है) फिर प्रश्न उठा कि प्रतिष्ठा होनेके पश्चात् यदि वह दूषित है ऐसा ज्ञात हुआ अथवा वह दूषित की गई अथवा दूषित हो गई तो उसका क्या किया जाय ? इस पर विद्वानोंने निर्णय दिया कि उसकी प्रतिपत्ति नदी जल विसर्जित कर दो और वैसी ही दूसरी मूर्तिका निर्माण कराकर तत्वविदोंसे प्रतिष्ठित कराओ, यह नियम विधान है, यदि ऐसा न किया गया तो प्रायश्चित् और दंड होगा। प्राकृत्त और वैकृत दोनों प्रकारकी मूर्तियोंके लिए यह विधान समान भावसे लागू होता है, ऐसी स्थितिमें यह प्रश्न उठा कि दूषित मूर्तिमें लोगोंका श्रद्धातिशय है, गुणवत्वका आधिक्य है तथा दोष भी अल्प है इसलिए यदि उस मूर्तिके स्थानमें दूसरी न लाना चाहिए तो विद्वानों ने रहस्य विदोंने उत्तर दिया—''अनादि सिद्धप्रतिष्ठित स्वायम्भुवादि व्यक्ति'' मूर्तिको न परिवर्तित किया जाय। उसको परिवर्तित न करने पर भी काम चल सकता है। यह परिसंख्या विधान है नियम विधान नहीं। इसका तात्पर्य यह है कि एतदतिरिक्तको परिवर्तित ही किया जाय, फिर प्रश्न उठा कि दोषयुक्तको रखनेसे अनिष्ट होता है वह अनिष्ट कैसे दूर होगा ? इसका उत्तर विद्वानोंने दिया—

दूर होने योग्य दोषोंको दूर करे और नये किसी दोषसे उसे दूषित न करे और महाभिषेक संस्कारसे उसी मूर्तिको संस्कृत करके पूर्ववत् प्रतिष्ठित रखे । इस पर एक प्रश्न और उठा कि—यदि बाण शिवलिंग, शालिग्राम, विष्णु गोमती चक्र घुणाक्षर न्यायसे बनी कोई मूर्ति कारण वशात् सर्वथा नष्ट हो गई हो और उस स्थान पर वैसी ही किसीने मूर्तियां स्थापित कर दी हों और उनकी प्रसिद्धि भी स्वायम्भु ज्योतिर्लिंग आदि रूपसे ही हो और यदि वह भी दूषित हो जाय तो क्या किया जाय ? इस पर विद्वानोंने निर्णय दिया—वहाँ मूर्त्यन्तरप्रतिष्ठित किया जाय और दूषित की गंगा जल विसर्जन आदि प्रतिपत्ति की जाय। कारण वह अनादिसिद्ध प्रतिष्ठित स्वायम्भवादि व्यक्ति नहीं है। फिर प्रश्न उठा—वैकृत प्रतिष्ठित मूर्तियोंमें भी तो श्रद्धातिशय गुणवत्त्वका आधिक्य तथा दोषाल्पत्त्व हो सकता है, तब ऐसी स्थितिमें रागवशात् कोई उन मूर्तियोंको भी सदोष होने पर भी न बदलवाना चाहे तो क्या किया जाय ? इस पर विद्वानोंने निर्णय दिया, तत्ववित् प्रतिष्ठित मूर्तियां ही दूर करने योग्य दोषोंको दूर कर महाभिषेकसे संस्कृत कर रखी जा सकती है, यह भी परिसंख्या विधान ही है। यहां फिर प्रश्न होता है कि तत्वविदतिरिक्तको जब मूर्ति प्रतिष्ठामें न्यायतः अधिकार ही नहीं प्राप्त तब उसकी तो उसके निषेधकी सम्भावना कहां ? इस पर विद्वानोंने निर्णय दिया कि तत्ववित् कई प्रकारके हो सकते हैं, मूलतत्वको ब्रह्मरूपसे जानने वाले, परमात्मा करके जानने वाले और भगवान् करके जानने वाले ये सभी तत्ववित् हैं। हां, अद्वैतसाक्षात्कारी इनमें सर्वश्रेष्ठ हैं, द्वैत में रमे सभी उनकी अपेक्षया श्रेष्ठ हैं। निरपेक्ष तत्ववित् और सापेक्ष तत्ववित् ये दोनों ही तत्ववित् होने पर भी—

"यो न्यांदेवतामुपास्ते कन्योसावन्यहं।
न स वेद यथा पशुः ॥"

इस श्रुतिके निर्णयानुसार सापेक्ष तत्ववित् अश्रेष्ठ हैं किन्तु निरपेक्ष तत्ववित् पूर्ण काम तथा निराशंस होनेके कारण उसकी मूर्ति प्रतिष्ठा आदिमें प्रवृत्ति प्रायः देखी नहीं जाती। शेष दूसरे तत्वविदोंकी ही प्रतिष्ठापित मूर्तियाँ प्रायः मिलेंगी, इससे तो यही सिद्ध हो जायगा कि सभी तत्ववित् एक दूसरे से श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ समझे जायेंगे और उन्हीं की प्रतिष्ठित की हुई मूर्तियां सर्वत्र मिलेंगी। तत्ववित् कोई जातिविशेष या व्यक्तिविशेषका नाम तो है ही नहीं, अतः यह शब्द रूढ़ नहीं और योगरूढ़ भी नहीं, केवल यौगिक है। यौगिक शब्द जहां भी उसकी सार्थकता सम्भावित है उसका विशेषण बन जाते हैं। अब देखना होगा कि तत्ववित्ता कहाँ कहाँ हो सकती है, विद्वानोंने भली भाँति विचार करके निर्णय दिया कि ज्ञान-प्रधान सभी योनियोंमें तत्ववित् हो सकते हैं। ज्ञान-प्रधान योनियां ये हैं—ऋषि, देव, असुर और मनुष्य, इन्हीं योनियोंमें तत्तवित् होनेकी सम्भावना रहती है। ऋषि, देव असुर और मनुष्य ये सभी शब्द रूढ़ हैं, मनुष्यकी अपेक्षया ऋषि देव असुर ये तीनों प्रायः अधिक शक्तिशाली देखे जाते हैं, इसी कारण विद्वानोंने निर्णय दिया कि प्रतिष्ठित मूर्ति सदोष हो जाने पर बिना बदले काम चलाना है तो वह मूर्ति ऋषि, असुर और देवोंकी ही प्रतिष्ठित मूर्ति हो, यह भी परिसंख्या विधान ही है, तात्पर्य यह है कि ऋषि देव तथा असुरोंके द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियां सदोष होने पर बदल दी जांय तो प्रायश्चित्ता अथवा दंड्यता नहीं होगी, इस पर प्रश्न उठा कि क्या मनुष्य तत्ववित् नहीं होते ? फिर तत्ववित् मनुष्य द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति दूषित होने पर भी उसके दोष दूर कर क्यों न वही रखी जाय ? इस पर विद्वानोंका कहना है कि मनुष्यकी तत्ववित्ता अत्यधिक विवादग्रस्त है, अतः 'मानुषन्तु परित्यजेत्" मनुष्य प्रतिष्ठित तो दूषित होने पर प्रतिपत्ति कर्म करके मूर्त्यन्तर ही लाये यही श्रेयस्कर है, यह नियम विधान है। इसीलिए शास्त्रकारोंने मनुष्यातिरिक्तके द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तिको बदलने पर बल नहीं दिया।

"मानुषन्तु परित्यजेत्" यह सामान्य शास्त्र नहीं, कारण यदि मनुष्यको ही केवल मूर्ति प्रतिष्ठाका अधिकार होता तब तो वह सामान्य शास्त्र हो सकता था, मूर्ति प्रतिष्ठाका अधिकार तो तत्वविन्मात्रको है, इसी कारण तो ऋषि, देव तथा असुरोंके द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियोंके भंगादि दुष्ट होने पर उनके रखने न रखनेका प्रश्न उठा, क्योंकि उनके द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियां भी तो यहाँ मनुष्य लोकमें

पाई जाती हैं, फिर तत्वविता भी अधिकांश ऋषि देव और असुरोंमें ही अधिक पाई जाती है, मनुष्योंमें तो उनकी अपेक्षया बहुत कम। मूर्ति-प्रतिष्ठामें "तत्वविद्भिः" यही सामान्य शास्त्र है और "मानुषन्तु" यही विशेष शास्त्र है। "ऋषिभिश्चासुरैर्देवैस्तत्वविद्भिः प्रतिष्ठिते" इस वाक्यमें तत्वविद्भिः इसका अर्थ मनुष्य करना और उसको विशेषण न मानना यह केवल मनमानी है। यदि "तत्व-विद्भिः"का अर्थ मनुष्य ही है तो अब मूर्त्यन्तरकी प्रतिष्ठा कहीं भी प्राप्त न होगी, क्योंकि प्रतिष्ठा करने वाले ऋषि, देव, असुर और मनुष्य इनको छोड़ और कोई हो ही नहीं सकता, फिर मूर्त्यन्तर प्रतिष्ठा शास्त्रको अवकाश ही कहां मिलेगा, इसलिये राग प्राप्त भी मनुष्य प्रतिष्ठित मूर्तिको भंगादि दोष होने पर अपरिवर्तनका निषेध कर दिया गया है यह नियम विधान है, इसके उल्लंघन पर प्रायश्चित्यता और दंड्यता भी होगी,

अधार्मिक शासनमें शास्त्र मर्यादाओंका उल्लंघन ही स्वाभाविक है, प्रमादकृत व्यवहारोंका उदाहरण देकर स्वार्थ साधन करना यह दुराग्रहियोंको ही शोभा देगा। निर्णय-सिन्धु, प्रतिष्ठामयूख, धर्मसिन्धु आदि ग्रन्थोंमें दिये वचनोंकी न्यायानुसार मीमांसानुमोदित यह व्यवस्था है, मूर्तियोंके टूटने पर जोड़ जोड़ कर फिर रख देना शास्त्रानुमोदित नहीं है। हां, जिन मूर्तियोंका निर्माण ही अलग अलग पहले अवयव घडकर फिर उनको जोड़कर हुआ है वहां तो फिर भी दूषित अवयवोंको बदला जा सकता है, और वहाँ भी अदूषित अवयवोंको दूषित न करते हुए ही वह होना चाहिए।

भरतपुर दुर्गस्थ बिहारीजीकी मूर्ति शिलामयी है और वह अलग अलग अवयवोंका पहिले निर्माण कर पश्चात् उन्हें जोड़ कर बनाई हुई नहीं, वह तो एक ही शिलाखण्डमें बनी हुई मूर्ति है। इस मूर्तिके दोनों चरण टूट कर अलग हो चुके हैं, और दूसरी बार गिरकर हाथ भी अलग हो गया। शास्त्रानुसार मूर्ति निर्माण करने वाले जयपुरके शिल्पियोंने मूर्तिके पैरों और हाथको जोड़ना अस्वीकार कर दिया और कहा कि हमारे यहाँ शिल्प शास्त्रमें कोई ऐसा विधान नहीं है। इसके पश्चात् भरतपुरके ही एक शिल्पीसे मूर्तिको जुड़वाया गया, उस समय पैरों की कुछ काँट छांटकी गई और पैरोंको जलाया भी गया जो कि शास्त्रानुसार सर्वथा निषिद्ध है, उसके अनन्तर पैरोंके ही रोगसे कलपते हुए उस शिल्पीकी मृत्यु भी हो गई है।

स्वायम्भुव मूर्तियां और ऋषि, देव, असुरोंके द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियां खंडित होने पर उसी अवस्थामें जहां पूजाके योग्य मानी जाती हैं वहाँ उन्हें काँट छाँट कर या जलाकर जोड़ा नहीं जाता है, वे उसी अवस्थामें पूजित मानी गई हैं।

इस बिहारीजीकी मूर्तिको नागा बाबाजी द्वारा यमुनासे प्राप्त कहना तथा उसे स्वयम्भू मानना एवं इन्हींके द्वारा उक्त स्थान पर प्रतिष्ठापित मानना इतिहास विरुद्ध है, नागा बाबाजीको मिली मूर्ति तो वृन्दावनमें ही अभी तक विराज-मान है, ऐसा निश्चय प्रमाणित हो चुका है। जहाँ कहीं भी कुछ खंडित मूर्तियाँ अभी तक पूजित हो रही हैं क्या वे काँट छाँट कर और जलाकर जोड़ी गई हैं? वज्रलेप-विधान विभिन्न अवयवोंसे निर्मित मूर्तियोंके लिए ही है।

भरतपुरका विद्वत् समाज अधिकांश क्या कह रहा है, इस बातको भी देखना चाहिए, केवल व्यक्ति-विशेषके दुराग्रह पर कोई भी कार्य करना शास्त्र समस्त नहीं हो सकता। "ऋषिभिश्चासुरैर्देवैस्तत्वविद्भिः प्रतिष्ठिते" आदि सिद्धान्तशेखरके वाक्योंमें यदि तत्वविद् मनुष्यके द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तिको अपरिवर्तनीय माना जाता तो मनुष्यका भी ऋष्यादिके साथ उल्लेख अवश्य होता, उसका उल्लेख न करना यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य प्रतिष्ठापित मूर्ति भंगादि दोषदुष्ट होने पर सर्वथा परिवर्तनीय ही है, इसके आगे वहीं पर "मानुषं तु परित्यजेत्" वचनमें "मानुष" पदके साथ "अतत्वविद्" आदि कोई भी विशेषण न देना तो "मानव मात्रके द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति तो सर्वथा परिवर्त-नीय ही है" इसकी पुष्टि कर देता है, इससे तो यह घोषणा कि मनुष्यके लिए तत्वविद् अथवा अतत्वविद्का विचार मूर्तिकी परिवर्तनीयता तथा अपरिवर्तनीयतासे कुछ सम्बन्ध नहीं रखता, और भी स्पष्ट हो जाता है।

—

फलित ज्योतिषमें नवीन अन्वेषण

कारकपद्धति

[श्री पं० श्रीनारायणजी शास्त्री चुलेट ज्योतिषाचार्य]

विश्वम्भरकी अगोचर शक्तिमें क्या क्या रहस्य हैं, इसका ठीक ठीक ज्ञान मानवीय बुद्धिके परे है। संसारमें मानवीय सृजन और उसके स्वयंके उपादेय विषय कुछ ऐसे हैं जिन्हें निमित्त कारण मानकर उपयोगी माना गया है। सत्य क्या है की ठीक जानकारी तो मानवके लिये असंभव ही है, इस पर भी अपनी निष्ठा भक्तिसे वह ऐसे प्रमेयों को जन्म देता रहा है और उनका साभिमानसे एक लंबी अवधि तक उपयोग भी लेता रहा है।

उस पर भी उसके नवीन विचार चरम सीमा पर नहीं होते हैं। नवीन उदयमें वह नवीन कल्पनाको उत्पन्न कर ही लेता है। अतीतसे ऐसा ही करता आ रहा है और भविष्यमें भी ऐसे ही करता रहेगा।

हमारा ज्योतिष-शास्त्र भी उनमें एक है। इस साहित्यके निर्माता अनेक हुए, साहित्यमें समय समय पर भिन्न भिन्न प्रमेयोंको जन्म दिया गया। आये और चले गये और भी आते रहेंगे, किन्तु कब क्या निर्माण हुआ, इसका ब्यौरा हम लगा ही लेते हैं, पर भावीमें क्या छुपा हुआ है इसकी जानकारी कहां तक क्या की जाय?

एक समय था जब फल ज्योतिषको जन्म दिया गया। कुछ ऐसे ध्रुव निश्चित किये गये जिन पर लंबी अवधि तक यह साहित्य बढ़ता ही गया और आज भी अतीतसे उसका स्रोत उसी अबाध गतिसे है। फल ज्योतिषमें प्राकृत फलों की पूर्व जानकारीके प्रयत्न किये गये हैं। यों जल, वर्षा, बादल, आंधी, भूकंप, मारी, महामारी, युद्ध आदि प्रत्येक छोटी बड़ी भावी घटनाओंको दिखाने वाला यह साहित्य है। इसी प्रकार मनुष्यके अपने जीवन बर्तावमें भी अनेक उतार चढ़ाव हुआ करते हैं। उन पर भी इस शास्त्रमें आचार्योंने खुलकर विचार किया है। किन्तु यह सब एक ही समयमें या एक ही विद्वान्के सहारे नहीं हो सका है। इस साहित्यके निर्माणकी एक लंबी कहानी है। हमें यहां इतना मात्र बताना है कि अतीतसे इस साहित्यका निर्माण होता रहा है और आज भी समयकी गतिविधिसे इसमें नवीन प्रमेयोंकी आवश्यकता होती रहती है।

एक समय था जब भारतीय फल-ज्योतिष द्वादश भाव और सात ग्रहों या नौ ग्रहोंके सहारे कार्य कर रहा था। (यह प्रणाली भी इस शास्त्रमें बहुत बादकी है, किन्तु वर्तमानमें इसी प्रणालीका सर्वत्र मान है) किन्तु इस नवीन युगमें यह साहित्य आगे बढ़ा है। समुद्र पार भी यह अपना अस्तित्व जमा सका है और यहां तककि भारतीय-गणित फलित-पाश्चात्य ज्योतिष साहित्यसे पिछड़ा हुआ माना जाने लगा है। वास्तवमें ऐसा कहना भले गलत ही सिद्ध हो किन्तु वर्तमानमें ऐसा कहा भी जाय तो एक साथ अत्युक्ति भी नहीं है।

पाश्चात्य विद्वानोंने ग्रह पिण्डोंकी ओर भी खोज की है, जिनका फलित ज्योतिषसे संबंध भी यथावत् निश्चित कर दिया गया है। भारतीय ज्योतिषी भी नव्य गणितका उपयोग लेने लगे हैं किन्तु उनके समीप ऐसी प्रणाली निश्चित नहीं है जिसके आधार पर नवीन ग्रहोंके फल उपयुक्त किये जा सकें। वास्तवमें भारत अपने आपको भूल सा रहा है। भारत में महान् आचार्य हुए हैं। कल्पसे अनेकों कल्पोंका उन्होंने विचार किया है। हमारे यहां पाराशर, जैमिनी आदि ऐसे विचारवान् विद्वान् हुए हैं जिनका अनुकरण करके विदेशी ज्योतिष पनपा है और हमारे लिये भी अनेक मार्ग प्रकाश में आये हैं।

हमने फल ज्योतिषका नवीनीकरण करनेके लिये आचार्योंका अनुकरण किया है। हमारे यहां कारक प्रणाली अति प्राचीन है। आरम्भमें यह सात अथवा आठ ग्रहोंके सहारे उपयोगमें लाई गई थी, किन्तु आज वह द्वादश भावोंके अर्थमें द्वादश ग्रहोंके सहारे उपयुक्त करना हमारा अपना प्रयत्न है। ऐसा करने पर ही भारतीय ज्योतिषमें सजीवता मानी जा सकती है, अन्यथा प्रगतिशील संसारमें यह देश स्वत्व हीन कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। यह भी साथमें स्मरण रखना चाहिये कि हमारा अपना ही यह

अनुभूत-योग-माला

[ले०—राजगुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

(गताङ्कसे आगे)

(१) दिनार्द्ध से एक घण्टे तक जिसका जन्म होता है वह राजा, धनी वा राज सदृश होता है।

(२) अर्द्ध रात्रसे एक घण्टे तक जिसका जन्म होता है वह भी राजा धनी वा राज-सदृश होता है।

WEDNESDAY 16

श्री गुणवती माता निजमाता
मेरी माता हरि: ॐ तत्सत्



T.C.F. EMIDOXYN : Prochlorperazine, Chlorpheneramine Maleate, Vitamin B_6 and Vitamin B_1: Tablets

व्यत्या...
एकत्र तेन श्वासा नानाि...
ननरसकमलेऽहर्तिशोस्त्रिभ्रमोऽत्र ॥

(समरसार)

प्रथम प्रयास नहीं है, जिस किसी भी साहित्यका नवीनीकरण उस साहित्यकी अतीतसे परंपरा रही है।

कारकसूत्र और उनकी व्याख्या उदाहरण सहित आगामी अंकसे क्रमशः 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत करेंगे। [क्रमशः]

—

इसलिए फल-परिवर्तनमें होरा रूप विभागकी उपयोगिता है। एक होराका प्रमाण सार्द्ध घटीद्वय है। इस प्रकार दिनार्द्ध और रात्र्यर्धमें जो राज्य देने वाली शक्तियां प्रकट होतीं हैं उनका प्रभाव दिनार्ध तथा रात्र्यर्धसे सार्धघटीद्वय तक रहता है। अतएव दिनार्ध और रात्र्यर्धसे सार्द्ध घटी द्वय तक उत्पन्न बालक राजा धनी वा राज-सदृश होता है।

...वान् श्रीरामचन्द्रजीका जन्म दिनार्धमें हुआ था। ...श्रीकृष्णजीका जन्म अर्ध रात्रमें हुआ था। अन्य ...ं भी इन योगोंका अनुसंधान किया गया है। ...तिकूल योगोंके न होने पर इन योगोंका पूर्ण फल ...ता है।

... लेखका सार रूप बृहत्पाराशर होराके श्लोकसे ...स्वनिर्मित श्लोक:—

...नुर्दिनदले यस्मात् प्रधानो राजखेचरः।
...ज्यभाव समस्तत्र पूर्णदृष्टिर्निशादले ॥
...नशार्द्धाच्च दिनार्द्धाच्च परं सार्द्धद्विनाड़िके।
शुभे तदुद्भवो राजा धनी वा तत्समोऽपि वा ॥

—

अनुभूत-योग-माला

[ले०—राजगुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

(गताङ्कसे आगे)

(१) दिनार्द्धसे एक घण्टे तक जिसका जन्म होता हैं वह राजा, धनी वा राज सदृश होता है।

(२) अर्द्ध रात्रसे एक घण्टे तक जिसका जन्म होता है वह भी राजा धनी वा राज-सदृश होता है।

निशार्द्धाच्च दिनार्द्धाच्च परं सार्द्धद्विनाड़िके।
शुभे तदुद्भवो राजा धनी वा तत्समोऽपि वा॥

उपपत्ति—दिनार्द्धमें प्रधान राज-ग्रह सूर्यके जितने राश्यादि क्षेत्र-विभाग होते हैं उतने ही राज्यभावके भी राश्यादि क्षेत्र-विभाग होते हैं। इस प्रकार दोनों राज्यकी अधिष्ठात्री शक्तियोंके पूर्ण सम्बन्धसे उस समय राज योग होता है।

अर्द्धरात्रमें प्रधान राज-ग्रह सूर्यके जितने राश्यादि क्षेत्र-विभाग होते हैं उतने ही चतुर्थ भावके भी राश्यादि क्षेत्र-विभाग होते हैं। राज्यभाव चतुर्थ भावका संमुखस्थ क्षेत्र-विभाग होते हैं। इसलिए उस समय राज्य भावमें प्रधान राज-ग्रह होता है। इसलिए उस समय राज्य भावमें प्रधान राज-ग्रह सूर्यके पूर्णदृष्टि संबन्धसे राजयोग होता है। एक होरामें हृदय-कमलके एक पत्रमें तत्त्व-भ्रमण समाप्त होता है।

नागैर्नीचैर्निधिज्ञाश्रयनशुक्रमितैः
श्वासपर्यायकैर्वात्यभ्रं वातोऽनलोऽ-
म्बुक्षितिरपृथगुपर्यप्यथाधोऽप्यृजुत्वे।
व्यत्यासाच्चावनीतो हृदयकमलके पत्र
एकत्र तेन श्वासा नानाधि संख्या-
ननरसकमलेऽहर्निशोस्त्रिभ्रमोऽत्र॥

(समरसार)

इसलिए फल-परिवर्तनमें होरा रूप विभागकी उपयोगिता है। एक होराका प्रमाण सार्द्ध घटीद्वय है। इस प्रकार दिनार्द्ध और रात्र्यर्धमें जो राज्य देने वाली शक्तियां प्रकट होतीं हैं उनका प्रभाव दिनार्ध तथा रात्र्यर्धसे सार्धघटीद्वय तक रहता है। अतएव दिनार्ध और रात्र्यर्धसे सार्द्ध घटी द्वय तक उत्पन्न बालक राजा धनी वा राज-सदृश होता है।

भगवान् श्रीरामचन्द्रजीका जन्म दिनार्धमें हुआ था। भगवान् श्रीकृष्णजीका जन्म अर्ध रात्रमें हुआ था। अन्य व्यक्तियोंमें भी इन योगोंका अनुसंधान किया गया है। बलवान् प्रतिकूल योगोंके न होने पर इन योगोंका पूर्ण फल अनुभूत होता है।

इस लेखका सार रूप बृहत्पाराशर होराके श्लोकसे सहित स्वनिर्मित श्लोकः—

भानुर्दिनदले यस्मात् प्रधानो राजखेचरः।
राज्यभाव समस्तत्र पूर्णदृष्टिर्निशादले॥
निशार्द्धाच्च दिनार्द्धाच्च परं सार्द्धद्विनाड़िके।
शुभे तदुद्भवो राजा धनी वा तत्समोऽपि वा॥

—

प्रथम प्रयास नहीं है, जिस किसी भी साहित्यका नवीनीकरण उस साहित्यकी अतीतसे परंपरा रही है।

कारकसूत्र और उनकी व्याख्या उदाहरण सहित आगामी अंकसे क्रमशः 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत करेंगे। [क्रमशः]

—

कुण्डलीचक्र—समीक्षा

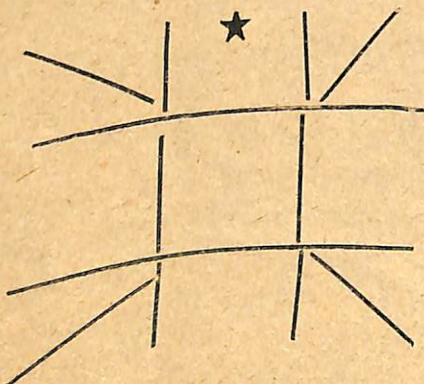
[ले०—श्री पं० श्रीनिवासजी शास्त्री (रचयिता-'वरवधू नक्षत्र-मेलापकादि']

आकाशचारी ग्रहों तथा राशियोंका चित्र ज्योतिषी कुण्डली चक्रमें उतार लेता है और चक्र-स्थित राशियों और ग्रहोंके स्थित्यनुकूल वह भावी लाभ-हानि, सुख दुःख, जीवन मरण, जय-पराजय आदि बताता है।

कुण्डली चक्रमें ज्योतिषी फलादेशके लिये मेषादि १२ राशियों, ६ ग्रहों तथा तनु (उदय), धन, सहज, पाताल, पुत्र, शत्रु, अस्त (सप्तम), आयु, भाग्य, आकाश (दशम) लाभ और व्यय इन १२ भावों एवं केन्द्र त्रिकोण दृष्टि आदिका सहारा लेता है।

विशाल भारतमें स्थान-स्थान पर भांति भांतिके कुण्डली-चक्र काममें लिए जाते हैं। उनमें-मुख्य पर हमें विचार करना है कि उपरोक्त फलादेशके साधन किस चक्रमें सरलतासे बोधगम्य हैं।

सर्व प्रथम हम पूर्व भारतमें प्रचलित कुण्डली-चक्र पर विचार करते हैं। यह चक्र दो खड़ी और दो पड़ी रेखाओंसे बने चारों कोणोंमें अन्य चार रेखाओंके खींचनेसे बनता है। इस चक्रमें राशियां सांकेतिक अंकोंमें नहीं प्रकट की जातीं वरन् प्रथम कोष्ठमें मेष राशि सदा स्थिर मानी जाती है। मेषके बाईं ओर क्रमशः वृषादि राशियां भी स्थिर रहती हैं। जिस राशिका लग्न होता है उस राशिमें 'ल०' लिख कर लग्नका बोध कराया जाता है। इस प्रकारका चक्र नीचे देखें।



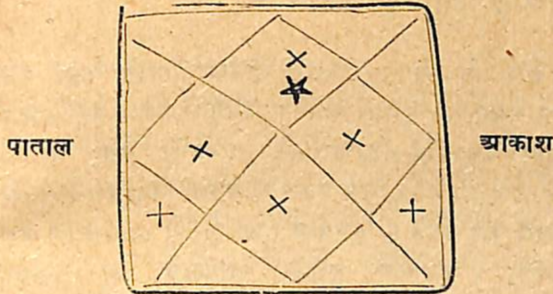
इस चक्रमें जहां तारेका चिन्ह है वहां मेष राशि स्थिर रहती है। फिर बांई ओर क्रमशः वृषादि राशियां निश्चित हैं। ऊपर बताया जा चुका है कि लग्न जिस राशिका होगा वहां 'ल' लिख दिया जाता है।

इस चक्रमें राशियां स्थिर मानी जाती हैं, परन्तु आकाशमें राशियां स्थिर नहीं प्रत्युत गतिशील हैं। लग्न किसी भी कोठेमें लिखा जा सकता है। इसके लिए कोई खास घर निश्चित नहीं है। इसमें राशियोंकी गणना बांई ओर की जाती है—यह ठीक है। क्योंकि क्षितिजमें राशियां इसी क्रमसे प्रकट होती हैं। शेष शास्त्रीय परिभाषाका इसमें समुचित ज्ञान नहीं हो पाता। उदय, अस्त, पाताल, आकाश, केन्द्र त्रिकोणादिका बिना गिने ज्ञान नहीं होता। अभ्यस्तको यह चक्र उतना कठिन न लगे परन्तु यह अवश्य ही सरल नहीं है।

दूसरे प्रकारका चक्र जिसका आजके पत्रोंमें अधिक व्यवहार होता है और मद्रास केरल कर्नाटकमें इसीका प्रचार है, अंग्रेजी पत्रोंमें भी इसी प्रकारकी कुण्डली लिखी जाती हैं। अंशतः सागर चक्रके समान होता है। इसमें भी प्रथम चक्रके समान राशियां स्थिर मानी जाती हैं। लग्न वाली राशिमें 'लग्न' लिख दिया जाता है। इसमें और प्रथम चक्रमें केवल इतना ही अन्तर है कि प्रथम चक्रमें राशियां बांई ओर गिनी जाती हैं पर इसमें दाहिनी ओर। पहले चक्रमें जितनी कठिनाई है उतनी ही इसमें भी है। इसमें एक बात और ध्येतव्य है—क्षितिजमें राशियोंके प्राकट्यके विरुद्ध क्रमसे इसमें राशियां निश्चित की गई हैं। यह गणना शास्त्रके विरुद्ध है। इस चक्रके प्रचलन का एक मात्र कारण मुद्रण सुविधा प्रतीत होती है।

जहां तारेका चिन्ह है वहांसे मेषादि राशियोंकी अपसव्यक्रमसे गणना होती है। लग्नके लिये कोई घर निश्चित नहीं वरन् कहीं भी लिखा जा सकता है।

यह तीसरे प्रकारका चक्र है। इसका प्रचलन प्राचीन है और अब भी अधिकतर इसीका प्रयोग करते हैं।



इस चक्रमें जहां तारे का चिन्ह है, वहां जो लग्न रहता है उसकी सांकेतिक संख्या लिखते हैं। सांकेतिक संख्या मेषादि राशिके अनुक्रमके अनुकूल है। इसमें लग्न के लिए घर निश्चित रहता है तथा 'ल०' का संकेत अनावश्यक है। फिर बांई ओर क्रमशः लग्नके बादकी राशियाँ बैठाई जाती हैं। जिस जिस राशिमें ग्रह रहते हैं उनमें ग्रह बैठा दिए जाते हैं। यह चक्र शास्त्रकी संज्ञाओंके अनुसार ठीक है।

लग्नका अर्थ है अभीप्सित समयमें पूर्व क्षितिजमें दिखाई पड़ने वाली राशि और उस राशिका पूर्व क्षितिज में दिखाई पड़नेका तात्पर्य उस राशिका उदय होना होता है। इसी कारणसे लग्नको 'उदय' संज्ञा दी गई है। उदय (लग्न) से सातवीं राशि उस समय पश्चिम क्षितिज में अस्तासन्न रहती है अतः सप्तमके लिए दी हुई 'अस्त' संज्ञा भी सार्थक है। इसमें राशि गणना भी बांई ओर ही होती है जो राशि चक्रके अनुकूल है। जब लग्नमें पूर्व क्षितिजकी राशि रखी जाती है तो चतुर्थमें अदृश्य राशि और दशम आकाशमें सबसे ऊपर स्थित राशि तथा सप्तममें अस्त होती हुई राशि लिखी जाती है। इस प्रकार उदय, अस्त, आकाश और पाताल जो क्रमशः लग्न, सप्तम, दशम और चतुर्थ के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे भी सार्थक हो जाते हैं। भावोंकी दृष्टिसे तन्वादि द्वादश भाव भी लग्नसे क्रमशः निश्चित हैं, जिससे बार बार गिनना नहीं पड़ता है। इस चक्रमें केन्द्र भी सदा × इस चिन्ह वाले घरोंमें और त्रिकोण + इस चिन्ह वाले घरोंमें निश्चित है। अतः इस चक्रमें लग्न, भाव, उदय, अस्त, आकाश, पाताल, केन्द्र, त्रिकोणादिका तुरन्त ज्ञान हो जाता है और शास्त्रीय संज्ञाएं भी सार्थक हो जाती हैं। इसी प्रकार इसमें दृष्टि भी सुगमतासे ज्ञात हो जाती है।

पूर्व वर्णित तीनों कुण्डली चक्रोंमें यह अंतिम चक्र ही अधिक मान्य है। यह अन्य दोके समान त्रुटिपूर्ण नहीं है, अतः इसको ही काममें लाना उचित है।

—

महामहाध्यापक महाकवि श्री पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागरका जन्मदिवस

[मन्त्री अ० भा० संस्कृतप्रचारक—मण्डल]

अ० भा० संस्कृतप्रचारकमण्डलके संस्थापक एवं संस्कृत संसारके महान् नेता श्री पंडित छज्जूराम शास्त्री विद्यासागरजीका जन्म-दिवस वैशाख शु० ३ ता० १३-५-५१ को बगीची माधोदासमें पं० वामदेवजीकी अध्यक्षतामें बड़े समारोहसे मनाया गया। वेदपाठके अनन्तर इन्द्रप्रस्थीय ब्राह्मण-सभा, अ० भा० ब्राह्मण-सभा, संस्कृत-विश्व-परिषद्, संस्कृतशिक्षक-संघ दिल्ली आदि संस्थाओंके मन्त्रियोंने विद्यासागरजीको श्रद्धाञ्जलियां भेंट की और पुष्पमालाएं पहनाईं। श्री पं० राजशिवशङ्कर द्विवेदी, श्री पं० पूर्णचन्द्र शास्त्री, श्री पं० आदित्याचार्यजीने विद्यासागरजीकी संस्कृत सेवाओं पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात् पं० वामदेव उपाध्यायने विद्यासागरजीकी जीवनी का विशद वर्णन करते हुए संस्कृत विद्वानोंको संबोधित करके कहा कि आप सभी संस्कृत विद्वान् श्रीविद्यासागरजीकी लग्नतासे यदि संस्कृत सेवा करनेको सन्नद्ध हो जावें तो संस्कृत राष्ट्र-भाषा क्या विश्व-भाषा बन सकती है। विद्यासागरजीने देववाणी (संस्कृत) की सेवा करते हुए न्यायसिद्धान्तमुक्तावली न्याय-दर्शन वेदान्तसार, पञ्चाध्यायी निरुक्त और सिद्धान्तकौमुदी पर अतीव प्रौढ़ एवं सरल टीकाएं लिखकर संस्कृत छात्रोंको महान् उपकृत

विदेशी व्यापार क्या है ?

[ले०—श्री कैलाशचन्द्र गुप्त]

छोटी छोटी मंडियोंके व्यापारी भाई जब निर्यात या आयात कोटा इत्यादिकी घोषणाएँ समाचार पत्रों में पढ़ते हैं तो विदेशी व्यापारमें भाग लेनेकी रीति जानना चाहते हैं और पूछते हैं कि भारत सरकारके किस विभाग (Office) को लाईसेन्सके लिए लिखा जाये ? गत दिनों जो पाकिस्तान और भारतमें व्यापारिक समझौता हुआ उस समय मेरे पास बहुतसे पत्र आये जिनमें विदेशी व्यापारकी पूछ ताछ की थी, अतएव मैं 'श्रीस्वाध्याय' में विदेशी व्यापारके कुछ नियम इत्यादि पाठकोंके सामने उपस्थित कर रहा हूं, यदि कुछ कमी रह जाए तो वह सज्जन =) के टिकटके साथ लेखकसे पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

यह निश्चय है कि देशकी उन्नतिके लिए जितना अधिकसे अधिक माल दूसरे देशोंको भेजा जायगा वह थोड़ा है और जब तक हमारे देशसे अधिक निर्यात नहीं होगा उस समय तक हमारी आर्थिक स्थितिमें सुधार नहीं होगा। हमारी पंचवर्षीय योजनाओंको पूरा करनेके लिए भी यह देखना पड़ता है कि जिस प्रकार माल हम विदेशोंसे मंगवाते हैं कमसे कम उतने ही मूल्यका माल हमको निर्यात भी करना चाहिए। इसलिए हमारी सरकारने कई प्रकारकी सुविधाएँ दी हैं और देशके निर्यात व्यापारको उन्नति देनेके लिए कई पग उठाए हैं। कुछ माल ऐसे हैं जिनको तैयार करनेके लिए हमको विदेशोंसे कच्चा माल मशीनरी आदि मंगवानी पड़ती है ताकि उनको तैयार करनेके बाद विदेशों को भेजे जा सकें। कुछ ऐसे माल हैं जो हमारी आवश्यता पूरी करते हैं। कुछ ऐसी वस्तुएँ भी हैं जो थोड़ी मात्रामें आयात की जाती हैं और शेष स्वयं हम तैयार कर सकते हैं। कई बार देशमें कई वस्तुओंके भावको ठीक रखनेके लिए हमको आयात करना पड़ता है, इसलिए आयात निर्यातका एक गहरा सम्बन्ध हो गया है। कोई देश ऐसा नहीं जिसको बाहरसे कोई-न-कोई वस्तु मंगवानी न पड़ती हो और कोई ऐसा भी नहीं जो केवल निर्यात ही करता हो। हां, कई देश ऐसे हैं जो दूसरे देशोंको अधिक निर्यात करते हैं, परन्तु बाहरसे थोड़ा माल मंगवाते हैं। इस समय हमारे सामने यह प्रश्न है कि हम लोग अधिकसे अधिक उत्पादन करें और अपनी आवश्यकता पूरी करनेके बाद फालतू सामान दूसरे देशोंको भेजें। बल्कि कई बार ऐसा भी करना पड़ता है कि अपनी आवश्यकताको छोड़कर भी निर्यात करनेकी आवश्यकता पड़ती है। कई वस्तुएँ ऐसी तैयार कर सकते हैं जिनको प्रयोग स्वयं न करें परन्तु दूसरे देशोंको भेजी जायें। ऐसी स्थितिमें समयका तकाजा है कि हम सब व्यापारियोंकी यह इच्छा होनी चाहिए कि अधिकसे अधिक निर्यात करें और निर्यातके कायदे कानूनसे जानकारी रक्खें। विदेशी व्यापार कैसे किया जाता है इसकी पूरी विवेचनाका पहला पाठ आगामी अंकमें देखें। [क्रमशः]

किबा। सुलतान चरित्रकाव्य, दुर्गाभ्युदय-नाटक, साहित्य-बिन्दु, और संस्कृतेतिहासके निर्माणसे तो आपने अपने महाकवित्व एवं विद्यासागरत्वका स्फुट परिचय करा दिया है। आप संस्कृत एवं हिन्दी दोनोंके ही प्रकाण्ड लेखक हैं। आपका दिन रात्रि समय लिखनेमें ही व्यतीत होता है, यही नहीं आप महामहाध्यापक एवं महामहोपदेशक भी हैं "दृष्टा प्रकाण्डपाण्डित्येप्येषां निरभिमानिताम्। लेखकत्वं पाठकत्वं वक्तृत्वं को न मुह्यति" यह पद्य आपके सम्बन्धमें अक्षरशः सत्य है। ज्योतिषमें आपको बड़ा प्रेम है अतएव एक लघुकाय 'प्रत्यक्ष ज्योतिष' नामक पुस्तक आपने लिखा है जो प्राज्ञ विशारद और शास्त्रियोंके लिए नितरां पठनीय और उपयोगी है। इसको देखकर ज्योतिर्विज्ञानके प्रतीक भारतविख्यात श्रीत्रिवेदीजी भी बड़े प्रसन्न हुए थे। विद्यासागरजी कुरुक्षेत्र भूमिके निवासी हैं अतएव आपने अद्भुत एवं खोजपूर्ण सटीक 'कुरुक्षेत्र माहात्म्य' लिखा है जो मुद्रणार्थ प्रेसमें है, अ० भा० संस्कृतप्रचारकमण्डल के तो आप प्राण ही हैं।

चांदी सोनेका भविष्य दर्पण

[ले०—राजवैद्य डा० श्री अमरदत्त मिश्र H. M. D. S. E C. E. F. Astrologer]

जुलाई अगस्त सितम्बर अक्टूबर १९५६ के ४ मासों में संक्षेपसे चांदी बाजारमें जो आने वाले परिवर्तन हैं— उन्हें पाठकोंके सामने 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा रखता हूँ। व्यापारमें क्या क्या परिवर्तन होने हैं और हो गये हैं वे सब दैवज्ञों द्वारा पूर्व ही 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकोंके सम्मुख प्रस्तुत किये गये हैं और आगे भी किये जा रहे हैं। यदि आप ज्योतिष शास्त्रका पूरा पूरा लाभ चाहते हैं तो आगामी आने वाले चुनावोंमें ऐसे व्यक्तिको भेजें जो इस विज्ञानका अन्तस्तलसे प्रेमी हो और स्वयं भी सुपठित विद्वान् हो ताकि देशका कल्याण होवे। आज केन्द्रमें जितने भी मंत्री गण हैं वे हमारे भारतीय विज्ञानोंको उपेक्षात्मक दृष्टिसे देखते हैं, और न वे स्वयं भारतीय संस्कृतिसे सुपरिचित हैं न विज्ञान से ही, यदि अब आने वाले चुनावोंमें स्वास्थ्य रक्षार्थ अच्छे से अच्छे वैद्योंको चुनकर भेजें और दैवगतिको जानकर भविष्य ज्ञानसे लाभ उठानेके लिये अच्छेसे अच्छे ज्योतिषियोंको चुनावमें चुनकर केन्द्रमें भेजें ताकि आप अपनी मनोभिलाषा पूर्ण भी कर सकें और भारतीय संस्कृतिकी रक्षा भी कर सकें, साथ-साथ भारतीय विज्ञानकी उन्नति भी होवे, अतः यह सामयिक बात आपको स्मरण दिलानेके लिये चुनावसे लगभग ६ मास पूर्व ही 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा आप एक पहुंचा रहा हूँ। यदि आप चुनावोंमें ऐसा नहीं करेंगे तो भारतीय देहधारी विदेशी मस्तिष्कों द्वारा हमारी सांस्कृतिक आभाको नष्ट कर दी जावेगी, अतः आगे फिर पांच वर्षके लिये उन्हें आप पट्टा न करें अन्यथा आपका ही अहित होगा। ऐसे व्यक्तियोंको चुने जैसे राज-ऋषि टंडन जो हमारी भारतीय संस्कृतिके कट्टर रक्षक हैं एवं अन्य भी ऐसे ही लाल हैं। समय पर नाम निर्देश भी किया जावेगा।

जुलाई १९५६

इस मासमें निम्न प्रकारकी ग्रह स्थिति है। यह मास सारा तेजी कारक ही रहेगा और सभी बाजारोंमें तेजीका दौर दौरा रहेगा, किन्तु विशेषतया चांदीके बाजारमें तेजीकी ही लाइन चलेगी, ऐसा ग्रहयोग है। चांदी का बाजार २० तक तेजीमें ही चले पुनः बाजारकी टोन बदलेगी। यह चांदीकी जनरल लाईन है। गेहूं अलसीमें भी तेजी चलेगी १० जुलाई तक, एवं चांदीमें घटाबढ़ीके साथ तेजी आवेगी। यहां नेपच्यून मार्गी हो रहा है यह भी चांदीमें जोरदार तेजी करेगा, घटाबढ़ीके साथ ता० ६ जुलाईके आसपास। कई बाजारोंमें परिवर्तन आवेंगे। २१ जुलाईसे २२ तकके समयमें चांदी सोनेमें सहसा परिवर्तन होगा बड़े जोरदार रूपमें, अतः बाजारकी ट्रेण्ड देखकर काम करें अवश्य ही लाभ होगा। इसी प्रकार २६ जुलाईको बु०श० की समान क्रान्ति योग है इसके प्रभावसे सब चीजोंमें मंदी का झटका आवेगा।

अगस्त १९५६ ई०

इस मासमें कोई भी पञ्चम दृष्टि किसी ग्रहके साथ अन्योन्य नहीं बनती है चंद्रको छोड़कर अतः यह मास बड़ा क्रान्तिकारी रहेगा, चांदीमें यह मास तेजीकारक ही रहेगा, ता० १ को तेजी ता० ३ को तेजी, पुनः ६ को तेजी, ७ को मंदी, ८ को तेजी, ९ को मंदी, फिर १३।१४ को तेजी, १६ को तेजी, तथा १७।१८ को तेजी, पुनः १९ को अच्छी तेजी, २१ को तेजी, २३ को तेजी, २४ से २८ तक मंदी, एवं २९।३० भी मंदी, ३० को तेजी संभव है। यह स्थिति चांदीके बाजारकी इस मासमें रहेगी। विशेष जानकारीके लिये आप हमारी दैनिक रिपोर्ट मंगावें जिसका मूल्य ३५) हैं।

सितम्बर १९५६ ई.

इस मासमें अधिक ग्रह मंदी कारक राशियोंमें हैं अतः यह मास विशेष तेजी कारक नहीं है, पर मंदा भी न रहेगा, बाजार शुरूसे स्टेडीमें चलेगा, पुनः मंदीमें झुके पर मंदी विशेष नहीं आवेगी, कारण कि शनी मंदीका अवरोधक बना हुआ है। इस मासमें गुरु उदय होता है यह रुईमें घटाबढ़ीके साथ २०) २५) टकोंकी तेजी लावेगा और चांदी बध घटके साथ मंदी करेगा, अनाजके भावोंमें भी मंदी लावेगा, सोनेमें विशेष मंदी आवेगी, अनाजके भावोंमें भी मंदी ही चलेगी। इस मासके प्रारंभमें बाजार टाइट रहेगा

व्यापार रुख

[लेखकः—श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

गुड़ मार्केट

ता० १६ से २१ जुलाई तक दुतर्फा।
ता० २२ से २४ जुलाई तक तेज।
ता० २५ से २६ जुलाई तक मन्दा।
ता० ३०-३१ जुलाई तेज।
ता० १ से ६ अगस्त तक मंदा।
ता० १० से १४ अगस्त तक तेज।
ता० १५ से १७ तक मंदा।
ता० १८ से २० अगस्त तक तेज।
ता० २१ अगस्त से ५ सितम्बर तक मन्दा।
ता० ६ से ८ सितम्बर तक तेज।
ता० ९ से ११ सितम्बर तक घटा बढ़ी रुख मंदा।
ता० १२ से १५ सितम्बर तक तेज रहेगा।

सूचना—ता० १४ जूनसे ३१ जुलाई तक गुड़में दो अढाई रुपयेकी तेजी आने तथा पंछेसे मन्दा हो जानेकी सम्भावना है। यथासमय व्यापारी वर्गको तेजी तथा मन्दीका काम करनेसे क्रमशः लाभ हो सकेगा। एवम् चने गवार आदिका भी विचार कर लेना चाहिए। स्मरण रहे चनोंमें मंदा आनेकी सम्भावना कम है। स्वर्ण के सम्बन्ध में ६२=) तक बिक जानेकी आशा है।

रुई बाजार

ता० १६ से १८ जुलाई तक मन्दा।
ता० १९ से २४ जुलाई तक तेज।
ता० २५ से ३१ जुलाई तक मन्दा।
ता० १ से ५ अगस्त तक तेज।
ता० ६ से ६ अगस्त तक मन्दा।
ता० १० से १५ अगस्त तक तेज।
ता० १६-१७ अगस्त को मन्दा।
ता० १८ से २० अगस्त तक तेज।
ता० २१ से २५ अगस्त तक मन्दा।
ता० २७ से २९ अगस्त तक तेज।
ता० ३० अगस्त से ५ सितम्बर तक मन्दा।
ता० ६ से ८ सितम्बर तक तेज।
ता० ९ से ११ सितम्बर तक मन्दा।
ता० १२ से १५ सितम्बर तक तेज।

सूचना—आषाढ़ मासमें तो रुईके घटा बढ़ीमें ही रहनेकी सम्भावना पाई जाती है, परन्तु रुख तेजीकी है और रहेगी। श्रावण मासमें रुईमें विशेष तेजीका तूफान उठनेकी आशा की जाती है। संभवतः पचास साठ टकेकी तेजी हो जावे। भादों मासमें पचीस तीस टकेका मन्दा होने का विचार है।

और ५ सितम्बर १९५६ को चांदीमें अवश्य मन्दी आवेगी। ६।७ को तेजी आवेगी, १३ को फिर तेजी आवेगी, १२।२१ तक, पुनः घट बढ़के साथ तेजी १४।१५।१६ को, एवं १७ को भी बाजार तेजीमें ही चलेगा, १८ को तेजी, २० तक तेजी ही चलेगी। मं० गु० की ससमके प्रभावसे पुनः २२ को मंदी, २३ को मंदी, २४ को तेजी, २५।२६ को बाजार स्टेडीमें चलेगा, २९ तेजी चलेगी, ३० को मंदी, यह स्थिति इस मासकी रहेगी।

अक्तूबर १९५६ ई.

इस मासमे ता० २४ के बाद बाजार विशेष तेजीमें चलेगा और सोनेमें विशेष तेजी आवेगी। प्रथम ६ अक्टोबरको बुधका उदय पूर्वमें ही हो रहा है यह बाजार में परिवर्तन करेगा, सोनेमें मंदी लावेगा और चांदीमें बधा-घटीके साथ तेजी, अनाजमें मंदी, लालमिर्च तेज, घृत तैल भी तेज, एवं चना गेहूं भी तेज हों, चांदीमें अवश्य ही तेजी आवेगी, १८ को बुधास्त पूर्व में यह भी चांदीमें तेजी कारक रहेगा। प्रारम्भमें १ से २ तक तेजी, ३ को मंदी, ४ को मंदी, ५ को तेजी, ६ को तेजी, ७ को तेजी, ८ को तेजी, २२।२३ को साधारण मंदी, ३० को अच्छी तेजी, इस प्रकार बाजार चांदीकी स्थिति रहेगी।

—

त्रैमासिक व्यापार-रुख

ता० १ अगस्त से ता० ३० अक्टूबर १९५६ तक

[लेखकः—रमलाचार्य श्री गणेशशंकर शर्मा दैवज्ञ]

तारीखवार (दैनिक) रुई चांदी चणा गुड़ शेयर तिलहनकी तेजी मंदी।

अगस्त १९५६ ई०

ता० १ बुधवार—शनिदेव मार्गी होकर कर्क नवमांशमें चल रहे हैं, ता० २२ अगस्त तक रहेंगे वह सब वस्तुओंमें लम्बी लाईन मंदीकी बनाते हैं, आज मंगल, मिथुन नवमांशमें आया है योग तेजीके हैं यह चांदीमें १।) ।।।), चणा गुड़ शेयरमें ।।) ।≈), रुईमें ५) ६) की तेजा ले आयेगा।

ता० २ गुरुवार—आज सूर्य गुरुका चरणवेध होगा प्रातः ११।। बजेसे प्रथम उछाला आकर बाजार गिर जायेगा आये उछाले मालका बेचाण करो तेजी ठहरेगी नहीं, भाव देर अवेरसें टूट अवश्य जायगें।

ता० ३ शुक्रवार—गुरुके घरमें मंगल आया है बेचो चांदी, रुई, गुड़, चनेमें अच्छी मंदी आकर रहेगी, भाव घटते ही चले जायेंगें। आज ही कर्क नवमांशमें मंगल गुरुकी युतिसे चांदी २) २।।) रुई ८) १०) गुड़, गुवार शेयर, चना ।≈) ।।) मंदा रहेगा।

ता० ४ शनिवार—शुक्र आर्द्रा पर आया है वर्षाके साथ २ गुड़ रुई चनेमें मंदी आयेगी।

ता० ६ चन्द्रवार—बुध मिथुन नवमांशमें सूर्य अश्लेषा के दूसरे चरण पर सिवाय मंदीके दूसरी बात हमारी समझमें ही नहीं आती है।

ता ७ मंगलवार—प्रतिपदा मंगलवारी वायुका बेग अधिक रहेगा, चांदी ।।।) गुड़ गुवार, चने शेयर तिलहन ।) ।–) तेज होते ही बेचो अच्छा मंदी आयेगी।

ता० ८ बुधवार—मंगल बुध नवमांश युतिसे बाजार उछल पड़ेंगे, चांदी १) १।) रुई ५) ६) गुड़, गुवार, चणा शेयरसें ।) ।।) तक तेजी आजायेगी।

ता० ९ गुरुवार—शुक्र मकर नवमांशमें गया है नजराने लगादो और आये उछाले मालका बेचाण बोल दो भाव अवश्य मिलेगें लाभ भी होगा।

ता० १० शुक्रवार—गुरु पूर्वाफालगुनी पर साधारण घटाबढ़ीसे मंदा ही रहेगा।

ता० ११ शनिवार—मंगल वक्र रुईमें मंदी, चांदी, सोना, शेयर, गुड़, चने तेज रहेंगे। इसका प्रभाव ता० १५ तक रहेगा बीचकी तारीखोंमें क्या होगा यह इन 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकोंको ।।) के टिकिट भेजने पर ५) रुपये वाला 'व्यापार-रुख' फ्री भेज देगें, इच्छा हो मंगवा लेना।

ता० १६ गुरुवार—सूर्य—केतु नवमांश युतिसे भावोंमें साधारण मंदी आयेगी, रुईमें अधिक मंदी समझो।

ता० ८ शनिवार—गुरु अस्तकी तैयारी हो गई है जो व्यापारी तेजी खेलेगा उसको भारी नुकसान उठाना पड़ेगा, शुक्र मीन नवमांशमें आया है अत: मंदी खेलना ही अच्छा है।

ता० २१ मंगलवार—पूर्णिमा मंगलवारी, रक्षा बंधन का दिन है, बाजारोंमें छुट्टी रहते हुए भी मार्केट मंदीकी तरफ ही चले जायेगें।

ता० २३ गुरुवार—शनि सिंह नवमांशमें मघा ३ चरण पर सूर्य, खेलो तेजी भाव बढ़जायेंगे।

ता० २७ सोमवार—आज गुरु कन्या नवमांशमें गया है फिर मंदी वाली पार्टी जोर पकड़ लेगी भाव घटेंगे।

ता० २९ बुधवार—को अष्टमी शुक्र मिथुन नवमांशमें, आज भी मंदी वालोंको अच्छा पैसा मिलेगा।

ता० ३० गुरुवार—सूर्य सिंह नवमांशमें शनिसे युति करेगें, चांदी, सोना, शेयर, गुड़ चनेमें अच्छी तेजी आजायेगी।

सितम्बर १९५६

ता० १ शनिवार—को गत योग चालू है परन्तु

रातको ७ बजे शुक्र, कर्क नवमांशमें जायेगा यह बाजारोंको मंदीकी तरफ झुका देगा। रुई १२) १५) चांदी २॥) ३) सोना कपासिया, गुड़, गुवार, चनेके भाव ।) ॥) मंदीका रुख पकड़ लेगें।

ता० ३ सोमवार—आज प्रातः सूर्य राहुकी कन्या नवमांशमें युति होगी यह योग भी बाजारोंमें मंदी लाता है किन्तु सूर्य कन्या नवमांशमें तेजी करता है इस कारण बाजारोंमें तेजीके उछाले अच्छे रूपसे आयेगें, ठहरेगें नहीं, आजसे लगा आये उछाले माल बेचने वालोंको लाभ होगा।

ता० ५—शुक्र पुष्य पर आया है तेल पदार्थोंमें अच्छी मंदी लाकर रहता है। रुई, चांदी, सुवर्ण, गुवार, मटर, चनेमें थोड़ी मंदी आया करती है।

ता० ८—को शुक्र राहुकी युति कन्या नवमशांमें मध्याह्न १२ बजे होगी यह युति अच्छी मंदी बाजारोंमें दिखादेगी, खास मंदी रुई, कपासिया, सूत, बारदानामें आजायगी अन्य वस्तुओंमें साधारण मंदी का झटका लगेगा।

ता० ९—आज सांय ५॥ बजे शनि कन्या नवमांशमें जायेगा, ता० ३० तक बाजारोंमें तेजी अधिक लायेगा इसका अधिक प्रभाव शेयर, आईरन, तिलहन, बारदाना पर होगा, चांदी, सोना, गुड़, गुवार, मटर, चने भी साधारण तेजीका रुख पकड़ेगें।

ता० १०—तुला नवमांशमें गुरुदेव आये हैं बाजारोंमें तेजी फैल जायेगी, समस्त वस्तु अच्छी तादातमें तेज होगी।

ता० ११—शुक्र तुला बृश्चिक दोनोंमें तेजी करता है, इन नवमांशोंकी तेजी ता० १७ तक अपना प्रभाव सब वस्तुओं पर रखेगी। किन्तु ता० ११ को सांयकाल ६ बजे गुरु शुक्रकी नवमांश युति होगी और ता० १४ तक रहेगी यह युति मंदी करती है। ता० १२ के नजराने लगा दो, ता० १३ तक अवश्य लाभ होगा।

ता० १३—आज बुध वक्र होगा साधारण तेजी सब वस्तुओंमें आयेगी।

ता० १५—को बुध पश्चिममें अस्त होगा यह बाजारोंको मंदा कर देगा।

ता० १८—मंगलवारको शततभिषा नक्षत्र, रुई, गुड़, शेयर, चने, सुवर्णमें अच्छी मंदी, अन्य वस्तुओंमें मामूली बाजार चलेंगे।

ता० २४—आज सूर्य-केतुका युद्ध मीन नवमांशमें होगा भाव यहाँ भी टूट जायेगें। सब वस्तुओंके व्यापारी मंदीकी गली लगा दें, इतने चांस स्पष्ट बताये गये हैं फिर भी समझमें नहीं आये तो व्यापार-रुख मंगवालें मूल्य २॥) रु० मासिक।

ता० २६—को सूर्य हस्त पर जाते ही तेल पदार्थोंमें अच्छी तेजी कर देता है।

अक्टूबर १९५६ ई०

ता० ३—सूर्य मिथुन नवमांशमें सोना चांदीमें अच्छी तेजी करता है। बुधका पूर्वमें उदय होना सब वस्तुओंमें तेजी लाता है।

ता० ६—आज शुक्र मिथुन नवामांशमें जायेगा, ता० ७ तक रुई ५) ७) चांदी २) २॥) गुड़, गुवार, मटर चने, शेयर ।=) ।।) मंदीकी तरफ झुकते रहेंगे।

ता० १०—सूर्य चित्रा नक्षत्र पर चांदी, अलसी, ऐरंडा मूंगफली, बारदानामें तेजी लाता है और आज ही मंगल-मीन नवमांशमें गया है यह सब वस्तुओंमें मंदी कर देता है, आज आप नजराने लगाकर छोड़ दो दोनों तरफ लाभ होगा।

ता० १३—आज प्रातः ११ बजे सूर्य राहुकी नवमांश युति फिर होगी बाजारोंको मंदीकी तरफ झुका देगा। यह युति कन्या नवमांशमें है याद रखना सूर्य कन्यामें तेजी कर देता है, नजराने लगा आयें उछाले मालको बेच दो।

ता० १५—शुक्र कन्या नवमांशमें आया है मंदी चालू करेगा।

ता० १६—मंगलवारको शतभिषा फिर मंदीकी तरफ बाजार ले जाये, आज सायंकाल ८ बजे सूर्य तुला नवमांश में मंदी ही करता है। यहाँ समस्त वस्तुओंमें थोड़ी बहुत मंदी अवश्य आयेगी।

ता० १७—आज रातको ८ बजे शुक्र तुलाका बृश्चिक नवमांशमें आयेगा ता० २३ को मध्याह्न १२॥ बजे तक तेजी रखेगा।

भारत और रूस

सोवियत कुण्डलीमें युद्ध सदृश सिंह राशिके लग्नमें रक्तपिपासु मंगल और ज्वलनशील व उत्तेजक केतु बैठा हुआ है। मनके स्वामी चन्द्रका इनके साथ साहचर्य है। म० ख्रुशेवने भारतमें दावा किया था कि १९१७ की रूसी राज्यक्रान्ति रक्तहीन रही। लग्नाधिपति सूर्य नीच है और इसने 'नीचभङ्ग' प्राप्त नहीं किया है। कुण्डलीका अध्ययन करते हुए महत्वपूर्ण वर्गों पर ध्यान देना चाहिए। (राहु, मंगल और केतुके मध्य और केतु, सूर्य और शनि के बीच)। ये निर्भयता पूर्ण कार्यवाहीके द्योतक हैं। इतिहास बताता है कि बोल्शेविकोंने मजदूर वर्गका गणतंत्र स्थापित किया, चर्चका अन्त कर दिया, वैयक्तिक सम्पत्ति समाप्त कर दी। और वैयक्तिक व्यापार गैरकानूनी करार दिया गया। उन्होंने बड़ी संख्यामें लोगोंको गिरफ्तार किया, जेलोंमें बन्द रखा, या गुप्तरूपसे देशसे निर्वासित कर दिया। मध्यम और उच्च वर्गके एक बड़े भागको इस रीतिसे रूससे समाप्त कर दिया गया। इसके साथ-साथ उन्होंने नीति, धर्म, पारिवारिक जीवनके विरुद्ध प्रबल आन्दोलनका सूत्रपात किया। राज्यक्रान्तिके समय केतु दशा थी और यह ३-७-२० से ९-६-१९२१ तक रही इसके बाद शुक्र ग्रहकी दशा ९-६-१९४१ तक रही। कठोर प्रशासनके कारण भयंकर त्रास फैला और १९२१ का भारी दुर्भिक्ष पड़ा। अतः केतु दशा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लेनिन का देहान्त १९२४ में हुआ। इसके कारण उग्र बोल्शेविकों को मार्शल स्तालिनके नेतृत्वमें अपना वर्चस्व स्थापित करना सम्भव हुआ (शुक्रकी दशामें शुक्रकी भुक्ति)। इन्होंने धर्म पर कठोर प्रहार किया और वैयक्तिक व्यापारको कुचल दिया। बोल्शेविक क्रान्तिकी कुण्डलीमें शुक्र ग्रहकी उच्च स्थितिके कारण सोवियत रूस शक्तिशाली सेना, उद्योग, और राष्ट्रीय जीवनका इस ढंगसे निर्माण करनेमें सफल हुआ कि वह आकस्मिक और अप्रत्याशित आक्रमणोंका सफलता पूर्वक सामना कर सका (ज्योतिषके अनुसार निस्सन्देह १९४१ में जर्मन आक्रमण सम्भवित था।)

यद्यपि सूर्य नीच दशामें था और पीड़ा पा रहा था, किन्तु ज्येष्ठा नक्षत्र मण्डलके तीसरे घरमें होनेसे रूस युद्ध में विजयी हुआ। चन्द्रके साथ केतु और मंगल पड़े हैं और उसके वास्ते कष्टकारक है, फलतः रूसकी पर-राष्ट्र नीति कपट पूर्ण रही है और रूसको चन्द्र दशा अब भी चल रही है। रूसके साथ विजय कूच करते हुए पश्चिमने अनुभव किया कि पूंजीवादी देशोंमें रूसके प्रति जो शुभेच्छा की भावना थी वह स्तालिनने खो दी है। रूसकी कुण्डली में जो मूल प्रवृत्ति बताई गई है, ठीक वैसी ही प्रवृत्ति रूस की थी। स्तालिनका निधन १ मार्च १९५३ को हुआ। इस समय चन्द्र दशा शनि भुक्तिका अन्त समीप था। उल्लेख योग्य बात यह है कि शनि 'मारक' है और मुख्य और उप स्वामी द्विर्द्वादश में हैं। बुध और केतुकी भुक्ति (चन्द्र के बड़े भागमें) के समय अविश्वसनीय बातें हुईं। ११ वें का स्वामी बुध तीसरे घरमें लग्नाधिपति सूर्यके साथ है, जिस का तेज हर लिया गया है। पर केतु 'राज्यकारक' योगमें है और क्रान्तिकारी ग्रह मंगल नाटकीय घटनाओंको जन्म देने

ता० २५—बुध अस्त पूर्वमें साधारण रूपसे तेजी चलेगी, किन्तु आज ही मध्याह्न १२॥ बजे कन्या राशिमें चलता कन्या नवमांशमें बुध आ जायगा इस कारण उछालेमें बेचना तेजी कम तथा मंदी अधिक आयेगी।

ता० २६—शुक्र आज फिर कन्या नवमांशमें आया है यह रुई, चांदी, सुवर्ण, शेयर, बारदाना, कपासिया, चनेमें मंदी ले आयेगा। केवल इन तीनों महीनोंके लिए आपको अपूर्व अवसर देते हैं जो व्यापारी ४) रु० भेज देगा उसको समस्त सितम्बर अक्टूबरका व्यापार रुख फ्री भेज देगें V. P. P. से ४।।=) लगेगें यह "श्रीस्वाध्याय सदन" से अथवा भृगु-ज्योतिष कार्यालय जयपुरसे मंगवा सकते हैं।

—

का कारण विद्यमान है। स्तालिनकी मृत्युको अभी पूरे पांच मास भी नहीं बीते थे कि आश्चर्यजनक नाटक सामने आया और बेरिया मारा गया। "घृणित विश्वासघाती" (मालेंकोवके शब्दोंमें) गिरफ्तार किया गया और सूली पर चढ़ा दिया गया। इसके साथ डेकानोजोव, बेशिक और बैगिशेव पदच्युत कर दिए गए। मालेंकोवको प्रधानमंत्री पद त्यागना पड़ा और उसके राजनीतिक जीवनको ग्रहण लग गया। मार्शल बुलगानिन प्रधानमंत्री बना। चन्द्र दशा का अन्त १९५६ के साथ हो जायगा।

स्वाधीन भारतका लग्न यद्यपि राहुके साथ है। वह छायांश ग्रह है, पर कष्टकारक योगसे पीड़ित नहीं है। आक्रमणका ग्रह मंगल दूसरेमें है, यह एक मंगल जनक चिन्ह है, राहु और केतुकी इस पर दृष्टि नहीं, परन्तु शान्तिके ग्रह बृहस्पतिकी दृष्टि इस पर पड़ रही है। अतः भारतकी किसी देश पर आक्रमण करनेकी इच्छा नहीं। कुण्डली प्रबल है, पर शनिकी दशा १९६३ तक चलेगी। और ४ थे भावमें शनि और सूर्य लगभग एक साथ है। अतः भावी संकटोंसे हमारे देशकी जनता और नेताओं को सावधान रहना चाहिए। कम्युनिस्ट विचारधाराके साहचर्यके कारण आने वाली विपत्तिसे जनताको सचेत करनेका उत्तरदायित्व नेताओंका है। शनि दशामें सूर्यकी भुक्ति आनेसे (भारत की कुण्डलीमें) हमारी सरकारने कम्युनिस्ट राष्ट्रोंके प्रति भारतीय जनताके भावोंमें भारी परिवर्तन कर दिया है। बोल्शेविकोंके आतंक और उनके आक्रमणको विस्मरण कर दिया गया है। उनकी क्रूरता पर मुलम्मा चढ़ा दिया गया है और उसको इतिहासकी आवश्यकता बताया जा रहा है, उनके दास कैम्पोंको अन्य देशोंकी जेलोंके समान समझा जा रहा है। "उनके शासक निरंकुश और स्वेच्छाचारी हैं और रूसमें स्वतन्त्रता और नागरिक स्वाधीनता सर्वथा नहीं है" यह वहांकी प्राकृतिक अवस्थाके अनुकूल बताया जाता है और इनकी आलोचना करना व्यर्थ है। जैसे ग्रीष्मकी गर्मी या हेमन्तकी शीतकी आलोचना करना व्यर्थ है। इन कमियों और अभावोंके होते हुए भी वह सर्वाधिक प्रगतिशील देश माना जाता और उसकी सिद्धियोंको बहुत अधिक गौरवपूर्ण बताया जाता है। कम्युनिस्ट साम्राज्य को भारतीय मन साम्राज्य नहीं मानता और उसकी मानस भूमिमें यह अत्यधिक सम्मानपूर्ण चित्रित किया गया है। इस अवस्थामें यह देश किस दिशामें जायगा, इस विषयमें गम्भीर चिन्ता हो तो क्या यह विस्मयजनक है ?"

भारत-सोवियत घोषणा पर दिल्लीमें १३-१२-१९५५ को रात ८--२० बजे हस्ताक्षर किए गए। इस घोषणामें कहा गया है "सोवियत नेताओंकी भारत यात्रा एक महत्वपूर्ण घटना है, केवल इस दृष्टिसे नहीं कि दोनों देश एक दूसरेके समीप आये हैं, अपितु इस कारणसे भी कि विश्व शांतिकी स्थापनाका उद्देश्य और आगे बढ़ा है।"

कर्कराशि उच्चता पर थी और नवें अंशमें थी जब संयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किए गए। लग्नका स्वामी चन्द्र तेजोविहीन है और राहुके साथ है। स्मरणीय बात यह है कि यह घटना सूर्यग्रहण होनेसे १६ घण्टा पहले हुई। सूर्यग्रहण १४-१२-१९५५ को हुआ। ग्रहणके समय वृश्चिक राशि थी और यह रूसके लग्नसे १० वें घरमें थी। १० वां कर्मका घर है। प्रथम श्रेणीके दो दुर्ग्रह (सूर्य) और चन्द्र (मनका कारक) इस बातको कह रहे हैं कि सोवियत राजनीतिज्ञोंकी घोषणाको जैसाका तैसा भारतको न मानना चाहिए। भारतके प्राकृतिक एवं मूल लग्नाधिपति बुध मंगल की राशिमें है और इस पर शुक्रकी दृष्टि है और इस पर बृहस्पतिकी भी दृष्टि है। इस मेलका सम्बन्ध ४ थे घरसे है। यह इस बातका द्योतक है कि पं० नेहरू पहले सच्चे राष्ट्रवादी हैं और हृदयसे विश्वास करते हैं कि इस घोषणासे न केवल भारत रूसकी मैत्री दृढ़ होगी बरन् विश्व भरमें विश्वशांतिको भी इससे बल मिलेगा।

७ वें के स्वामी शनिका राहुके साथ संयोग और मंगल ग्रहकी आक्रामकके रूपमें प्रमुखतासे स्थितिका होना इस बात का द्योतक है कि रूस 'पंचशील' का मुंहसे कोरा स्तुतिगान करते हुए प्रबल शस्त्रीकरणका पथ ग्रहण करेगा। ग्रहण होनेके १६ घण्टे पहले हस्ताक्षर किए गए और अमंगल भूमिकी छायामें हुआ है, अतः यह स्थायी न होगी। लग्नके स्वामीका साहचर्य होने और दूसरे घरमें होनेसे रूस आर्थिक एवं यांत्रिक सहायताका आमिष बराबर दिखाता रहेगा। किन्तु वचन और कार्यके बीच खाई बहुत गहरी

होगी। लग्नाधिपतिको ग्रहण लगा हुआ है अतः हम इस प्रलोभनको सच मानते रहेंगे।

सोवियत कुण्डलीको देखनेसे ज्ञात होगा कि रूसको मंगलकी दशा १९५७ के आरम्भसे ही प्रारम्भ हो जाती है और यह १९६४ तक रहेगी।

केतुका इस समय इसके साथ साहचर्य होगा। इसका अर्थ है कि मंगलकी दशा जब तक रहेगी रूस उन मूल सिद्धान्तोंसे प्रभावित होगा, जिनसे कि वह क्रान्तिके आरम्भ से प्रभावित रहा है। पश्चिम राजनैतिक एवं आर्थिक खेल में रूससे पराजित होगा।

मंगलकी दशाका सावधानता और सतर्कतासे अध्ययन करना चाहिए। यह चौथे और नौवें घरका स्वामी है और इस कारण योगकारक है। इसको ज्वलनशील एवं उत्तेजक केतुका साहचर्य प्राप्त है और इसके साथ चन्द्रमा १२ वें घरमें बैठा है जो हानिका सूचक है। निस्सन्देह वह लग्न केन्द्रमें हैं और बलवान् है परन्तु यह कष्ट कारक है और यह ५ वें घरका (प्रत्यरि या विरुद्ध) का स्वामी है। अतः लोह दीवारके पीछे मंगल एवं शुभ न होगा। रूस-चीनके साथ मिलकर विचारधारा और सैनिक दोनों दृष्टियोंसे दक्षिणकी ओर बढ़नेका प्रयत्न करेगा, और शेष एशियाई लोक-तन्त्रों पर अपनी इच्छा थोपते हुए पश्चिमके साथ संग्राममें उलझ जायगा और यह कम्युनिज्मके पतनका आरम्भ होगा। इसके साथ विश्व-कुण्डलीसे सम्बद्ध अन्य ग्रहोंके संक्रमणसे ऐसी शक्तियोंका उद्भव होगा जो नास्तिकताके दुष्परिणामोंको रोकेंगी। यह भी संदिग्ध है कि कम्युनिज्म अपने वर्तमान रूपमें रूसी जनता के मनको प्रभावित करेगा। अगले तीन वर्षोंमें कम्युनिज्म का भय और बढ़ेगा, और यह महान् चिन्ताका विषय रहेगा। भारतीय नेताओंका यह कर्त्तव्य है कि वे इसका समय रहते प्रतिरोध करें, और इस विचारधाराको फैलनेसे पहले ही समाप्त कर दें। सोवियत रूसकी सरकार म. मालेनकोवको अन्धकार और अज्ञात स्थानमें भेज देगी। १९५७ के अन्त तक रूसमें अनेक चौंका देनेवाली विस्मयजनक घटनाएँ घटित होंगी। अगले तीन वर्षोंमें एशिया विशेषतः भारतको रूस और चीनसे सतर्क और सावधान रहना चाहिए। सह-अस्तित्वके सिद्धान्तका प्रचार करनेके उत्साहमें यह बहुत सम्भव है कि भारत,रूस द्वारा फैलाए जाल में फँस जाय। नीतिमें सह-अस्तित्वके अनुसार काम होनेके शुभ लक्षण नहीं दिखाई देते।

संक्षेपमें हम कह सकते हैं चूंकि १९५७ से रूसकी मंगल दशाका प्रारम्भ होगा और भारत-रूस घोषणा पर अमंगल मुहूर्तमें हस्ताक्षर किए गए, अतः भारत पर सोवियत रूसका विचार आक्रमण होगा और भारतके वास्ते यह एक वास्तविक भयका कारण होगा। भारतीय नेताओं को इधरसे सचेत रहना चाहिए यह हमारी महान् संस्कृति और हमारे धर्मके भी विरुद्ध है, यह विस्मरण न करना चाहिए।

('दी एष्ट्रालॉजीकल मेग्जीन' से साभार)

—

(पृष्ठ ८ का शेष)

के पास भेजी चिट्ठियोंके उत्तरकी भाषाका नहीं। मुख्य प्रश्न है शिक्षाका। ऐसी स्थितिमें भी क्या पंजाबी विशेषतः जालन्धर डिवीजनके निवासी गुरुमुखी सीखनेको बाध्य किए जांएगे? यह ठीक है कि दो-तीन लिपियोंका ज्ञान होना अच्छा है। किन्तु, उन्हीं लिपियोंको सीखा जाता है जो उपयोगी हों, जिनका विस्तृत क्षेत्रमें प्रचार हो, और जिनका साहित्य गौरवपूर्ण हो। यदि किसी ऐसी भाषाकी लिपि होगी तो लोग उसको स्वतः सीखेंगे। उसके लिए किसी प्रकारकी बाध्यताकी आवश्यकता नहीं। यदि मा० तारासिंह समझते हैं कि वे कालके प्रहारसे इस नीति द्वारा गुरुमुखीको बचालेंगे तो वे भारी भ्रममें हैं। व्रज अवधी मैथिली और उर्दू के समान गुरुमुखीका मान्य होना निश्चित है। गुरुमुखी यदि जीवित रहना चाहती है तो उसको नागरीका बाना धारण करना चाहिए। गोरखाली और मराठी नागरी लिपिमें लिखि जाती हैं, किन्तु नागरी लिपिके अपनानेसे इन भाषाओंका महत्व कम नहीं हुआ। मास्टरजी और अकाली सिख क्या इस सत्यको समझेंगे?

स्वानुभवित व्यापारिक निर्णय

[लेखकः-ज्योतिषरत्न श्री पं० राजाराम जैन सामुद्रिकवेत्ता, सम्पादकः-'भविष्यदर्पण']

ता० १६ जुलाई १९५६ से दो दिनमें वायदेकी प्रत्येक खाद्याखाद्य वस्तु अर्थात् रुई चांदी सोना अलसी एरण्डा सरसों मूंगफली ग्वार मटर अरहर चना मूंग गुड़ आदि सभी वस्तुयें एक दम तेज होंगी। १७ जुलाई को चढ़े भावोंमें बेचकर एक बार लाभ उठाना ही उचित होगा। कोई नया कानून अ नेकी सम्भावना है। यदि ऐसा हुआ तो चमत्कारिक मन्दीका श्रीगणेश होगा। ता०१६जुलाईको गुड़ चाँदी तेज,रुईमें मन्दी चलेगी। ग्वार दाल अन्नमें अच्छी मन्दी शनैःशनैः आवेगी। अषाढ़ी पूर्णिमा २२ जुलाईको होगी यह रुई अन्न तिलहन (बियाँ) में मन्दी कारक सिद्ध हो सकेगी। इस दिन शुभवायु बादल बूंदाबांदी छिड़काव होनेकी आशा है। २४ जुलाईको गुड़ बेचना उचित है। २५ जुलाईको लाभ लेकर खरीदें। २६ जुलाईसे गुड़की लम्बी लाइन तेजीकी बनेगी जोकि सितम्बर पर्यन्त चलेगी। सरसों बीयाँ तैलके बीज मन्दीकी शरण लेंगे। दाल अन्न ग्वारादि जुलाई भर मन्दे, फिर तेजीका सूत्रपात होगा। २८ जुलाईको वस्तुमात्र पर ही धमाके की मन्दी आनेकी पूर्णाशा रखना उचित होगा। यहां जो भी वस्तु मन्दी होगी वही १२ अगस्त से विशेष तेज होगी। २८ जुलाईको गुड़की मन्दी याद रखिये। वर्षाके उपद्रवसे घरसे निकलना भी कठिन होगा। अगस्त मासमें अमचूर गुड़ नमक खार शक्कर विशेष तेज रहेंगे। कर्क संक्रान्तिकी घोर वर्षा भी याद रहेगी, २६ जुलाईसे भारतके कोने कोनेमें वर्षाकी सूचना मिल जायगी। २६,२८ जुलाई की महान् वृष्टि १ अगस्तसे १५ दिनमें सार्वत्रिक घोर वर्षा होनेका योग है। ठीक यही समय सरसों बीयाँ रुई चांदी सोना शेयर जूट अन्नादिकी मन्दीका है। किन्तु दाल अन्न ग्वारादिमें तेजी ही चले तो कोई आश्चर्य नहीं। ता०१अगस्तको गुड़ तेज, ४अगस्तसे मन्दा होकर१०अगस्त तक साधारण घटाबढ़ीसे मन्दा, १२ अगस्तसे ठोस तेजीका वातावरण बनेगा, १८अगस्तसे गुड़ मन्दा होगा। जो वस्तुएं ३अगस्तसे तेज या मन्दी होंगी उनमें १८ अगस्तसे विपरीत स्थिति बनेगी। १६ अगस्तको सिंह संक्रान्ति (गुरुसूर्ययोग) शनि व भौमसे संदृष्ट महान् उत्पात कारी मास सिद्ध होगा। ता० १७ अगस्तको राहुसे हर्षलका त्रिकोण योग लगभग ८८ वर्ष बाद बनेगा, घोर तेजीका प्रतीक है। बम्बईके वायदाकी प्रत्येक वस्तुमें भी भारी तेजी आवेगी। किन्तु फिर भी गुड़ पड़ा रहे या अपना नीचा स्तर बनावे तो आश्चर्य नहीं। भाद्रपद कृष्णामें वर्षाका अभाव रहनेकी आशा है। भाद्रपदशुक्लामें फिर वर्षाके योग बनेंगे। कन्या संक्रान्तिमें चांदी सोना दाल अन्न ग्वारादि मन्दे होते रहेंगे। एक बार ता० २०सितम्बरसे ३,४ दिनमें विशेष तेजी आवेगी। टर्निङ्ग प्वाइण्टस ७ सितम्बरसे १६ सितम्बर, १० सितम्बरसे १५ सितम्बरको वस्तुओंकी लागत बदल जायगी। २६,३० सितम्बरको घोर वर्षा होनेकी आशा है। आश्विनमासकी घोर वर्षा सरसों रुईके लिए कण्टक समान होती है। २६ सितम्बरसे १६ अक्टोबर पर्यन्त विनाशकारी वर्षासे त्राहि २ मचेगी। १७ अक्टोबरसे ३,४ दिनमें महाभयानक स्थिति शनि राहुकी युतिके कारण बनेगी, विश्वमें कोई विचित्रघटना घटेगी। अक्टोबर मास तेजी प्रधान रहेगा, विजयादशमी पर्यंत तेजीका व्यापार विशेष लाभदायक रहेगा। अक्टूबर नवम्बर सन् ५६ ऐतिहासिक कहे जावें तो भी कोई बड़ी बात न होगी। व्यापारमें भी विचित्र अनहोनी तेजी मन्दी चलेगी। लाभ हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जानकरके बाजारकी स्थिति और अपनी शक्तिको तोल कर ही कार्य करें।

मंगल ग्रहकी व्यापार सम्बन्धि फल व्यवस्था

[ले०—श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्यौतिषाचार्य]

मंगल ग्रह एक राशि पर १॥ मास ही रहा करता है, परन्तु कभी कभी वक्रीमार्गी अतिचारी होकर ६ महीने तक भी एक राशि पर वह भ्रमण करता है। मंगल ग्रह जब किसी राशि पर अस्त हो जाता है तो अस्त हो जानेके बाद ४ मासमें जाकर ही वह उदय होता है, उदय होनेके बाद दस मास पीछे वह वक्री होता है। और वक्री होनेके दो मास बाद मार्गी हो जाता है जैसा कि शास्त्र में कहा है—

भौमस्यास्तादुदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं क्रमात्स्यात्
मासैर्वेदैरथदशमितैर्लोचनाभ्यां च दिग्भिः॥

अर्थ साफ है कि अस्त होनेके ४ मास बाद वह उदय होता है। यह कोई जरूरी नहीं है कि जिस राशि पर अस्त हो उसी राशिमें उदय भी हो, किसी भी राशि पर जब मंगल अस्त होगा तो ४ मास बाद ही आप उसे उदय हुआ आकाशमें देख सकेंगे, और उदय होनेके दस मास बाद ही यह वक्री होगा, वक्र चाहे जिस भी राशि पर मंगल का आकर पड़े; और वक्री होनेके दो मास बाद ही वह मार्गी होता है और मार्गी होनेके दस मास बाद ही वह अस्त होता है इस प्रकार मंगल ग्रहकी चाल चलती है, यह गणित सिद्धान्तका मत है, वैसे सामान्यतः १॥ मास तक ही एक राशि पर भोग मंगलका बना करता है, यद्यपि वक्री मार्गी उदय अस्त होनेकी चाल अपने नियमानुसार ही है जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, किन्तु १ राशि पर भी ६ मास तक मंगल की चाल तीसरे चौथे वर्ष गणितके नियमानुसार ही बनती रहती है। उसका कारण यह है कि जब मंगल किसी राशिमें प्रवेश करता है तो वहांसे उसकी चाल यदि धीमी पड़ जाती है तो पर्याप्त समय उसमें चला जाता है और फिर उस राशिमें मन्दी चाल घटते घटते कम होकर फिर वक्र गति बन जाने से उसी राशि पर पीछे हटने लगता है और उसी राशिमें फिर मार्गी होता है तब फिर काफी समय एक ही राशि पर बीत जाता है जैसा कि इस वर्ष २२ मईको मंगल कुम्भ राशिमें प्रविष्ट हुवा उस समय मंगलकी चाल ३० कला ५० विकला प्रतिदिन की थी, मध्यमागति मंगलकी "असृज इन्दुरामास्तर्काश्विनः" ३१ कला २६ विकला स्वभाविक होती है, स्पष्टागतिका अर्थ "अद्यतन स्पष्टग्रह श्वस्तनस्पष्टग्रहयोरन्तरं स्पष्टागतिः" अर्थात् आजका उदयके समयका स्पष्ट ग्रह और कलके दिन का औदयिक स्पष्ट ग्रहका अन्तर ही स्पष्टा गति हुआ करती है, यह पंचाङ्गकर्ता विद्वान् ज्योतिषके जानने वाले इस प्रकारकी चालको उपपत्तिको अच्छी प्रकार समझते हैं।

गणित सिद्धान्तके नियमानुसार इस वर्ष भी जब मंगल ग्रह २२ मईको कुम्भराशिमें आया था तो उसकी स्पष्टागति ३० कला ५० विकला थी, वह चाल बराबर घटती गई और २८ अगस्त मिती भादों बदी सप्तमी जन्माष्टमी पर शून्य कला ४५ विकलाके करीब रह गई है और २८ अगस्त को फिर मंगल वक्री हो गया, वहां मंगलकी स्पष्टी १० राशि २६ अंक ५६ कला कुछ बिकला थी, जो कुम्भ राशिके ही अंश थे बाद तो मीन राशि पर मंगल चला जाता किन्तु वह वक्री चालमें चला वहां ३० सितम्बरको ही वह हो गया है २१ नवम्बरको मंगल मीन राशिमें पहुंचा है, अतः अपनी मान्द्यगति एवं चालसे जब कभी ऐसा हो जाता है कि एक राशि पर ही कमती बढ़ती ६ मास तक अपना योग बनालें तो उस पर मार्केटमें भी काफी उथल पथल बन जाया करती है, इस २२ मईसे २१ नवम्बरके ६ मास में कुम्भ राशिके मंगलके टाइममें बृहस्पति भी सिंह राशि पर ही चल रहा है, जबकि सिंहस्थ बृहस्पतिके कुम्भ राशिके मंगलके साथ पूर्ण वेध बना हुआ है, सिंहका गुरु भी मन्दी कारक होता है। जैसा कि हमने व्यापार विज्ञानमें स्पष्ट लिखा है।

जब मंगल कुम्भमें हो सिंहस्थ गुरुकी उस पर दृष्टि हो तो फसल तेज रहा करती है, और जब मंगलका अंशुक योग लग जाता है तो मार्केटमें फसलके मालमें तेजियां रुक कर रुख मन्दीका ही बन जाया करता है, ठीक २२ मईको जब मंगल ग्रह कुम्भमें आया तभीसे गल्ला, सरसों, अण्डीके मार्केटने अपने ऊंचेसे ऊंचे भाव बना लिये थे और

२२ नवम्बरसे अंशुक योग लगने पर मन्दीका वातावरण धीरे धीरे चलने लगेगा।

अंशुक योग जब आषाढ़ीकी फसल समाप्त होनेके बाद लगता है तो फसलमें मक्का, तिलहनके भाव ऊंचेसे ऊंचे स्तरके रहा करते हैं। अंशुक योगके लगने पर मार्केटका रुख मन्दीमें पड़ जाया करता है। और धीरे धीरे मन्दियां चला करती हैं, जो कि तेजियोंके उछाले लेते हुए ही मार्केट मन्दियों में जाया करता है। लाइन तेजीकी इस नियममें २२ मईको गल्ले, तिलहनकी समाप्त होकर मन्दीकी तरफ बनी है जिसकी बाबत मैंने ८ जून तक मन्दीकी बातें भी लिखीं थी। अब यह लाइन गिरते चढ़ते २१ नवम्बर तक तो विशेष मन्दीमें नहीं आवेगी परन्तु रुख ऊंची तेजीका नहीं होगा। जब मंगल ग्रह मीन राशिमें २१ नवम्बरको होगा तो अंशुक योगकी मन्दी तो समाप्त हो जावेगी।

मीन राशिका मंगल बृहस्पतिके घरमें ही तो रहेगा, कन्याराशिमें बृहस्पतिकी दृष्टि रहेगी, बृहस्पतिकी दृष्टिका मंगल पर रहना भी मार्केटमें तेजियोंको रोकेगा, यह चाल भी काफी समय तक जावेगी, जिसका विवरण अगले अंकोंमें करेंगे फिर भी व्यापारियोंको यह ध्यान रखना होगा कि मार्केटमें इन ऊंचे भावोंमें गल्ला, सरसों, अलसी, अरण्डी का माल खरीदा हुआ स्टाक किया हुआ जिन लोगोंके पास है उस में नुकसान न लगे तैयारी पेटे माल वायदा भी बेचा जाये, अरहर, गुवार, चना वायदा बेचनेमें आवेगा। जिसकी सावधानी व्यापारियोंको रखनी है। अरहर, गुवार, अरण्डी, मूंगफली, रूई, वारदाना, सरसों, तेल, चना आदि वायदोंको तैयार पेटे बेचने पर भविष्यमें २०१३ के उत्तरार्ध में जो मन्दियां होंगी उनका चांस व्यापारियोंको साधना चाहिए।

अंशुकयोगका फल

कुम्भका मंगल जो इस समय २२ मईको आ चुका है, यह १॥ मासकी एक राशिकी चालको छोड़कर २१ नवम्बर तक कुम्भ राशिमें ही वक्री अतिचारी रहता हुआ चक्कर काटता रहेगा, २२ मईसे २१ नवम्बर तक मंगलकी एक ही कुम्भ राशि पर गतिविधि ६ मास तक मार्केटको बड़ी विचित्र स्थितिमें बनावेगी, यहां समझदारी से चांस साधनेकी जरूरत है, जब जब मंगल ऐसी चाल बनाया करता है तो फसल गल्लेकी सरसों-अलसी-अरण्डीकी तेजीमें ही रहा करती है, व्यापार विज्ञान जो हमारा छप रहा है उसमें दिए हुए मंगल ग्रहके इस योगके अनुसार—

कुम्भे गतः क्षितिसुतश्च विलोम गामी
सिंहाश्रितेन गुरुणाऽपि विलोक्यमानः।
मान्द्यं करोति नियतं प्रथमं महर्घम्
ज्ञेयोऽशुंकः कुज गुरौ शनिराहु दृष्टेः॥१॥

अर्थ—जब कि कुम्भ राशिमें मंगल ग्रह चल रहा है और सिंह राशिके बृहस्पतिके साथ उसका पूर्णवेध है अर्थात् कुम्भ राशिमें स्थित मंगल ग्रहको बृहस्पति ग्रह पूर्ण दृष्टिसे देखता हो और शनि राहुके योग से भी मंगल देखा जाता हो तो अंशुकनामक योग होता है इस योगमें व्यापारिक वस्तुओंमें बड़ी भारी मंदियां आया करती हैं और पहिले तेजी हो लेती है, बादमें मंदी आया करती है, व्यापारी बन्धुओंको हमारे द्वारा सम्पादित 'व्यापार विज्ञान' के इस अंशुक नामक योगको खास तौर पर इस समयके वास्ते सावधानीसे समझना चाहिए। ठीक अब २२ मई से २१ नवम्बर तक यह अंशुक नामक योग चलेगा जो मंगल ग्रह सदा एक राशि पर डेढ़ महीना ही रहा करता है वह यदि विचित्र गति द्वारा ६ मास तक एक ही राशिका भोग करता रहे और बृहस्पतिसे उसका बराबर वेध भी बनता रहे तो शनि राहुके योगकी दृष्टिसे मार्केटमें बड़ी भारी उथल पुथल होती है।

तीन मासके अचूक चांस सर्व वस्तुओं पर

[लेखकः—श्री गणेश दैवज्ञ]

जुलाई १६५६ ई०

ता० १६ को— सायं ४ बजे और ता० १७ को सायं-काल तक नफा लेलो। चांदी १॥) २) मंदी।

ता० २०, २१ इन दोनों दिनोंमें आये उछाले बेचो और नफा लेते रहो।

ता० २५ को—चांदी १।) १॥।) तक तेज हो जायेगी।

अगस्त १६५६

ता० ६ को—प्रातः खुलते बाजार बेचना, ता० ७ को रात तक चांदी २) २॥) मंदी हो जायेगी।

ता० १० को—दिनभर मंदीका योग आया है १॥) २) मंदी।

ता० १३ को—दिन भर तेजी चलेगी योग १।) १॥) तेजीका है।

ता० २५ को—सायं ४ बजे बेचना ता० २७ तक १॥) २) मंदा।

सितम्बर १६५६

ता० ३ को—१२ बजे के करीब खरीदो ता० ४ को नफा लेलो १॥) २)।

ता० ८ को—१२॥ बजे से ता० ६ को १२॥ बजे तक चांदी १।) १॥) मंदी।

ता० ११ को—सायं ५ बजेसे ता० १२ को सायं ३॥ बजे तक चांदी २) २॥) मंदी।

ता० २४ से २६ तक—आये उछाले माल बेचो घटने पर नफा खाते रहो चांदी ३॥) ४) तक मंदी।

अक्टूबर १६५६

ता० ८ को—खुलते बाजार माल बेचो और ता० ६ को सायंकाल तक मंदीका नफा लेलो बाजार उछल २ कर नीचे चले जायेंगें २॥) ३) मंदी।

ता० १२ को—खुलते बाजार बेचो और ता० १३ को बंद बाजार तक चांदी ३॥) ४) मंदी।

ता० १५ को—खुलते बाजार बेचो और ता० १६ को बंद जाजार नफा लेलो २॥) ३) मंदी।

बेधड़क चांस

आज रिपोर्ट लिखते चांदीके भाव ता० २० जूनको १७३) है, गणित द्वारा भान होता है कि चांदी १७६) ही नहीं बननी चाहिये। और यहां से ही लोटकर चांदी १४५) बन जानी चाहिए। जब बाजारमें चांदी १६७) बन जाये उस समय माल बेचकर बैठ जाओ आपको एक एक पेटीमें २२ टके मिल जायेगें। यह कब किस तारीख में इत्यादि पूछना चाहो तो जवाबी लिफाफा भेजकर पत्र व्यवहार करें।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

जुलाई १९५६ ई०

ता० १७ मंगलवार—श्रीस्वाध्यायसदन स्थापना दिवस
१८ बुधवार—देवशयनी एकादशीव्रत चातुर्मास प्रारंभ
२० शुक्रवार—प्रदोषव्रत।
२२ रविवार—श्रीगुरुव्यास पूर्णिमा सत्यव्रत वायुपरी०
२६ गुरुवार—श्रीगणे ४ व्रत चन्द्रोदय स्टै० रा० ९-१७

अगस्त १९५६ ई०

ता० ३ शुक्रवार—कामिका एकादशी व्रत।
४ शनिवार—शनिप्रदोष व्रत।
६ सोमवार—सोमवती अमावस हरियाली ३०।
७ मंगलवार—श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर अवसान दिन
८ बुधवार—चन्द्रदर्शन मु० ३० संधारा ३।
१० शुक्रवार—नागपंचमी।
१२ रविवार—श्री गो० तुलसीदास जयन्ती।
१३ सोमवार—मेला श्रीनयनादेवी व चिन्त्यपूर्णी।
१५ बुधवार—भारत स्वातन्त्र्योत्सव वर्ष १०प्रारंभ।
१६ गुरुवार—सिंह संक्रान्ति मु० ३०।
१७ शुक्रवार—पुत्रदा एकादशी व्रत।
१८ शनिवार—शनिप्रदोष व्रत।
२० सोमवार—सत्यव्रत।
२१ मंगलवार—रक्षाबंधन ऋषितर्पण।
२४ शुक्रवार—कज्जली तीज।
२५ शनिवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चन्द्रोदय रा० ८-५१
२८ मंगलवार—श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत स्मार्त-गृहस्थों के लिए चन्द्रोदय रात्रि स्ट० टा० ११-२।
२९ बुधवार—जन्माष्टमी व्रत वैष्णवोंका चं. उ.११-४८
३० गुरुवार—गुग्गा ९।

सितम्बर १९५६ ई०

ता० १ शनिवार—आज एकादशी व्रत जैन पर्यूषणारम्भ।
२ रविवार—प्रदोषव्रत, वत्स १२।
४ मंगलवार—पिठोरी अमावस गोदावरी नासिक कुम्भ महापर्व स्नान सतीपूज।
६ गुरुवार—चन्द्रदर्शन मु० ३०।
७ शुक्रवार—हरितालिका ३ व्रत।
७ शनिवार—श्रीगणेश ४ पत्थरचौथ चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त रात्रि ९-४ जैन संवत्सरी व्रत पर्यूषण समाप्ति।
९ रविवार—ऋषिपंचमी।
१२ बुधवार—श्री महर्षि दधिचि जयन्ती।
१३ गुरुवार—श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)।
१५ शनिवार—पद्मा एकादशी व्रत (जलझूलनी ११)
१६ रविवार—कन्या संक्रान्ति मु० ३० वामन १२
१७ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत।
१८ मंगलवार—अनन्त चतुर्दशी व्रत।
१९ बुधवार—सत्यव्रत प्रौष्ठपदी श्राद्ध।
२० गुरुवार—महालय पितृपक्ष प्रारम्भ।
२२ शनिवार—श्रीविट्ठलभाई पटेल निधन दिवस।
२३ रविवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय ८—१३।
३० रविवार—इन्दिरा एकादशी व्रत।

अक्टूबर १९५६ ई०

ता० १ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत।
२ मंगलवार—श्रीगांधी जयन्ती
३ बुधवार—सर्वपितृ ३० महालय श्राद्ध समाप्ति।
४ गुरुवार—अमावास्या मातामहश्राद्ध।
५ शुक्रवार—नवरात्रारम्भ घटस्थापन चन्द्रदर्शन।
८ सोमवार—ललिता पंचमी।
१० बुधवार—श्री सरस्वती आवाहन।
११ गुरुवार—श्री सरस्वती पूजन।
१२ शुक्रवार—श्रीदुर्गाष्टमी महाष्टमी श्रीसरस्वती बलि. दान मेला श्रीज्वालामुखी व तारादेवी भद्रकाली जयन्ती।
१३ शनिवार—नवरात्र समाप्ति, विजया १० मेला दशहरा अपराजिता पूजन शमी पूजन सीमोल्लंघन राजचिन्ह पूजन, श्री सरस्वती विसर्जन।

❋ दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र ❋

स्वतंत्र भारतके दशवें वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

खगोलस्थ ज्योतिर्मय ग्रह नक्षत्रपिण्डोंका भला बुरा प्रभाव भूमण्डल पर किस प्रकार पड़ता है इसका विस्तृत विवेचन हम 'श्रीस्वाध्याय'के गताङ्कों और अपने 'श्रीविश्व विजयपंचांग'में विशदरूपेण कर चुके हैं। और इन स्तम्भोंमें प्रकाशित भावी सूचनाओंकी सत्यताका अनुभव भी पाठकों को अनेक बार हो चुका है। गत वर्ष सं० २०१२ के आषाढ मासमें इन्हीं दिनों (वर्ष १४ के ग्रीष्माङ्क में) स्वतंत्रभारतके ६ वें वर्षका भविष्य विवेचन और आषाढ़ मासके सूर्यग्रहणका विवेचन करते हुए हमने पृष्ठ ५६ पर लिखा था कि—"वर्षान्तमें केन्द्रीय मंत्रिमंडलमें सहसा कुछ परिवर्तन होगा। राजस्थान पंजाब पैप्सू मध्यभारत और मध्यप्रदेशकी राजनैतिक सामाजिक आर्थिक समस्याएं उग्र बनेंगी। मन्त्रिमण्डल और कांग्रेस जनोंमें ही पारस्परिक प्रतिस्पर्धासे प्रगतिमें बाधा पड़ेगी। मंत्रिवर्गमें जनता-का विश्वास न्यून होता जायेगा।......" विगत आषाढ मास (२० जून १९५५) के सूर्यग्रहण और श्रावण मासमें कर्क राशिमें पंचग्रही योगका विवेचन करते हुए हमने गत वर्ष दैनिक 'हिन्दुस्तान' 'नवभारत-टाइम्स, 'मकरन्द' आदि पत्रोंमें अतिवृष्टि जलप्लावन (बाढ़) आदि उत्पातकी भी सूचना दी थी। तदनुसार गत आश्विन मासमें भयानक जलप्लावनसे भारतमें जो असह्य हानि हुई वह सर्वविदित ही है।

अभी गताङ्कमें हमने "चन्द्र ग्रहणका संसारपर प्रभाव और इस्लामी जम्हूरियतका भविष्य" प्रकाशित किया था। और ता० २४ मई १९५६ के दैनिक 'हिन्दुस्तान'में 'चन्द्रग्रहण और उसका फल' शीर्षक हमारा लेख प्रकाशित हुआ, उसमें स्पष्ट लिखा है कि—"वर्षा समयसे पहले प्रारम्भ होगी। कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टिसे भी हानि होगी।" तदनुसार ज्येष्ठ मासमें ही पूर्वी भारत बिहार असम आदिकी नदियोंमें बाढ़के समाचार सुनाई देने लगे और अभी जुलाईके प्रथम सप्ताहमें अनेक प्रान्तोंमें अति वृष्टि हुई। मुजफ्फरनगर मेरठ सहारनपुर आदि उत्तर-प्रदेशके सहस्रों वर्ग मीलमें जलप्लावनका भीषण दृश्य उपस्थित हुआ। ता० २ से ८ जुलाई तक मिथुनराशिमें बुधशुक्र एकत्र थे, प्राचीन महर्षियोंने जो यह घोषणा की है कि—"बुधशुक्रौ समीपस्थौ करोत्येकार्णवां महीम्" इसको सत्य प्रमाणित करके ज्योतिर्विज्ञानकी महत्ताको प्रकट किया है, अस्तु।

गत वसन्ताङ्क और ता० २४ मईके 'हिन्दुस्तानमें' हमने पाकिस्तानके सम्बन्धमें जो भविष्य विवेचन किया था उस पर टिप्पणी करते हुए २६ मई १९५६ के 'हिन्दुस्तान'में 'यत्र तत्र सर्वत्र' स्तम्भमें 'एक ज्योतिषीकी भविष्यवाणी' शीर्षकसे विद्वान् सम्पादकने लिखा है—

"हमें तो एक ज्योतिषीकी भविष्यवाणी (नेहरूजी क्षमा करें)का स्मरण हो आया है। इन ज्योतिषी महोदयका कहना है कि जिस दिन पाकिस्तानी गणराज्यकी स्थापना हुई थी उस दिन मीन लग्न और अश्लेषा नक्षत्र था। इसके अतिरिक्त लग्नेश गुरु वक्री है और यह अष्टमेश शुक्र शत्रु ग्रहसे इत्थशाल कर रहा है अतएव पाकिस्तानमें आन्तरिक विद्रोह व अशान्ति का भयङ्कर विस्फोट हो सकता है। पता नहीं ग्रहोंका यह दुर्योग पाकिस्तानी शासकों व नेताओंकी मतिको उस तरह फेर सकेगा या नहीं जिस प्रकार कि मंथराने कैकेयीकी मति फेर दी थी। लेकिन 'डान'ने जो कुछ लिखा है उसे पढ़कर ज्योतिषी महोदय तो यही कहेंगे मैंने तो पहले ही कह दिया था कि पाकिस्तानमें विनाशक प्रवृत्तियां उदय हो रही हैं।"

स्वतन्त्रभारतका दशवां वर्ष

सं० २०१३ श्रावण शु० ६ मंगलवार ता० १४ अगस्त १९५६ ई० को प्रातः स्टे. टा. ७।२३ (इष्ट घट्यादि ३।४६) पर सिंह लग्नमें भारतको स्वतंत्र हुए नौ वर्ष पूर्ण होकर दशवां वर्ष प्रवेश हो रहा है। यद्यपि

स्वतन्त्रता समारोहका उत्सव ता० १५ अगस्त बुधवारको ही मनाया जायेगा, तथापि सौरगणनानुसार वर्षप्रवेश १४ अगस्त मंगलवारको ही हो जावेगा। नौ वर्ष पूर्व १९४७ में १५ अगस्तको श्रावण कृष्ण चतुर्दशी और अश्लेषा नक्षत्र होनेसे शुभ दिन नहीं था। उच्च भारतीय राज्याधिकारियोंको ज्योतिर्विज्ञान वेत्ताओंकी ओरसे यह बात सुझाई गई तो हमारी बात मान ली गई और ता० १५ अगस्त शुक्रवार की अपेक्षा ता० १४ अगस्त (१९४७) गुरुवारको अर्धरात्रिमें १२।१ पर गुरुपुष्यामृत योग और स्थिर लग्नमें स्वातन्त्र्य सत्ता ग्रहण करनेका सुमुहूर्त साधा गया था और १५ अगस्त शुक्रवारको प्रातःकाल ६ बजे कन्यालग्नमें ध्वजोत्तोलनादिसे उत्सव प्रारम्भ किया गया। इस कारण सौर गणनानुसार वर्ष प्रवेश लग्नका समय प्रायः १४ अगस्तको ही आता है और स्वातन्त्र्योत्सव सदाकी भांति १५ अगस्तको मनाया जाता है।

स्वतन्त्र भारतका जन्म लग्न यह है—

सं० २००४ अधिक श्रवण कृ० १३ गुरुवार ता० १४ अगस्त १९४७ इष्ट घट्यादि ४१।२५ सू. ३।२८ ल. १।८

म. ह. ३
१
के.बु.श.शु. ४
सू.
च.
म.
रा.
२
१२
५
११
ने, ६
८
के.
१०
७गु.
९

'स्वतन्त्र भारतका भविष्य' शीर्षकसे इस कुण्डलीका विस्तृत भविष्य विवेचन ता० १५ अगस्त १९४७ के 'हिन्दुस्तान' 'नवभारत' 'वीर अर्जुन' आदि प्रमुख पत्रोंके स्वतन्त्रता विशेषांकोंमें हमने प्रकाशित करवाया था। तदनन्तर भारतके अनेकों साप्ताहिक मासिक पत्रोंने भी उस भविष्यको अपने-अपने पत्रोंमें उद्धृत किया था। उसी समय भारतके सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त विद्वान् श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यासने अपने ११ अक्टूबर १९४७ के पत्रमें हमें लिखा था—"...आज तो सारा देश देख रहा है कि १५ अगस्तके आनन्दकी मुस्कान अधरोंसे मिटी भी नहीं थी कि त्रास और विषादका भीषण वातावरण ही छा गया है। अवश्य ही आपने १५ अगस्तके दिनकी कुण्डली पर विस्तृत विचार किया है। दूसरे किसी ज्योतिषीने इतना विस्तृत सुन्दर विचार किया देखा नहीं है।......"

'श्रीस्वाध्याय' के ७ वें वर्षके 'नववर्षाङ्क'में भी 'हमारे भविष्यकी एक झलक' शीर्षकसे यह सब विस्तृत रूपमें प्रकाशित हुआ था। जिन पाठकोंने न देखा हो वे अब भी उक्त अंक २) रु० में मंगवा कर देख सकते हैं। उस १५ अगस्त १९४७ के विस्तृत भविष्यमेंसे कुछ पंक्तियाँ ये हैं—

"......अतः यह तो निश्चित है कि यह स्वतन्त्रता दीर्घजीवी (चिरस्थायी) होगी और आगे उत्तरोत्तर भारतका गौरव संसारमें बहुत बढ़ेगा। .....निकट भविष्य में अभी किसी विदेशी आक्रमणका भारतको भय नहीं है। भारत पूर्णरूपेण सुखी एवं समृद्ध सं० २०१५ सन् १९५८ ई० के बाद ही हो सकेगा। इन आरम्भिक वर्षोंमें पाकिस्तानका सम्बन्ध आन्तरिक रूपमें मैत्रीपूर्ण नहीं होगा।......भारत भविष्यमें अपने उद्योगसे आर्थिक स्थितिको सुधार लेगा।......भारतीय वैज्ञानिक परमाणु शक्तिका अनुसंधान करेंगे और उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिलेगी।......राष्ट्रभाषा हिन्दीका गौरव बढ़ेगा। ...... भारतकी राष्ट्रीय सरकार विदेशोंमें गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी।......शनि दृष्टिके कारण पाकिस्तानके आन्तरिक आर्थिक सम्बन्ध सन्तोषजनक न होंगे। शनि अनार्य जनताके अन्तःकरणको अभी शुद्ध नहीं होने देगा।" इत्यादि।

दशम वर्ष लग्न

६
सू.ह.
४
ने.७
बु. गु.
५
३शु.
चं.
श.८
रा.
२के.
९
११
मु.
१
१०
मं. १

अब इस प्रवेश होने वाले दशम वर्षकी ग्रह स्थिति पर ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे विचार प्रस्तुत करते हैं—

इस वर्ष लग्न कुण्डलीमें सूर्य चन्द्र शनि राहु भौम की अशुभस्थिति होते हुए भी वर्षेश गुरु बलवान् (वर्गो-त्तमांशमें) होकर लग्नमें धनेश लाभेश बुधके साथ है और राज्येश पराक्रमेश शुक्रसे इत्थशाल योग कर रहा है, यह सब प्रकारके अरिष्ट योगों और संघर्षों पर विजय प्राप्त करके भारतको उन्नतिकी ओर अग्रसर करेगा। केन्द्रीय शासन सुदृढ़ एवं यशस्वी होगा। वर्षेश गुरुके कारण इस वर्षके उत्तरार्धमें विशेषकर वर्षान्तमें गुरुकी दशासे अनार्य वा अनुदार प्रकृतिके स्वार्थी लोग पदच्युत होंगे और आर्य प्रकृतिके शान्ति-प्रिय उदार जनोंके हाथमें राष्ट्र संचा-लनकी वागडोर अधिक रहेगी। इस वर्षका पूर्वार्ध अर्थात् पहले ६ मास (१५ फरवरी १९५७ तक) विशेष संघर्ष कारक है। आरम्भमें ही अनेक राजनैतिक साम्प्र-दायिक सामाजिक आर्थिक समस्याएं एवं कुछ प्रकृति प्रकोप का भी सामना करना पड़ेगा। किन्तु वर्षेश गुरु बलवान् है अतः इन सब पर काबू पा लिया जावेगा, राष्ट्रमें साहस धैर्य एवं आत्म-गौरवकी वृद्धि होगी और भारतके शत्रुओं को मुँहकी खानी पड़ेगी। वर्षेश गुरु और लग्नस्थ बुधका फल शास्त्रकारोंने यों लिखा है—

जीवेऽब्दपे बलयुते परिवार सौख्यं
धर्मो गुणग्रहिलता धनकीर्त्ति पुत्राः।
विश्वास्यता जगति सन्मति विक्रमाप्ति-
र्लाभो निधेर्नृपति गौरवमप्यरिघ्नम्॥
देहे सौख्यं धियोवृद्धिर्नपमानो धनागमः।
तेजो धैर्यस्य वृद्धिश्च वर्षे सौम्ये विलग्नगे॥

स्वतन्त्रताके जन्मलग्न से वर्षलग्न केन्द्रमें स्थिर राशिका है। और प्रधान मंत्री श्री नेहरुजीकी जन्म राशि एवं लग्नसे धनभावमें स्थिर मित्र राशिगत एवं महामहिम श्री राष्ट्रपतिजीके जन्मलग्नसे नवम तथा राशिसे सुख स्थानमें है अतः इस वर्षमें इन दोनों राष्ट्रनायकोंके गौरव पराक्रमकी वृद्धिसे राष्ट्रमें सुख शान्तिका संचार होगा।

निष्कर्षरूपेण कहा जा सकता है कि इस वर्षके आरम्भिक ६ मास भारतके लिए राजनैतिक आर्थिक सामाजिक साम्प्र-दायिक आदि सभी दृष्टियोंसे ऐतिहासिक एवं अकल्पित उलट फेर कारक माने जायेंगे।

आत्मकारक वा राजसत्ताकारक लग्नेश सूर्य और मन वा बुद्धिका अधिपति प्रजा-सत्ताकारक चन्द्रमा इन दोनोंकी स्थिति वर्षमें शोभनीय नहीं अतः शासकवर्ग और प्रजामें भारी खींचतान (रस्सा-कशी) प्रारम्भ होगी। मनोमालिन्य बढ़ेगा। सूर्य चन्द्रमाकी विकृतावस्थाके कारण शासक एवं शास्यवर्गमें दृष्टिदोष उत्पन्न होगा, अर्थात् एक दूसरेके दृष्टिकोणको शान्तस्वान्तेन भली प्रकार ठीक नहीं समझा जायेगा अतः परस्पर बन्धुवर्ग वा राष्ट्रिय स्वजनोंमें ही विद्वेषकी भावना जागृत होगी, इससे द्रव्य और शक्तिका ह्रास होगा तथा अनेक अवाञ्छनीय घटनाएं घटेंगी, व्यक्ति-मात्रमें क्रोधानलकी वृद्धि होगी। प्रकृति प्रकोप और रोगादिसे भी हानि होगी। यथा—

दृष्टिरुग्द्रव्यनाशश्च विद्वेषो बन्धुवर्गतः।
देहे पित्तोद्भवा पीड़ा वर्षे सूर्ये व्ययस्थिते॥
नीचस्थे स्वजनादितोऽप्यभिभवं
चन्द्रेऽर्त्ति-कार्यक्षयः।
दारिद्र्यं च पराभवो गृहकलि-
र्व्याध्यादि भीतिस्तदा॥

चन्द्रमा नीच राशि और नीच नवांशका होकर सुख स्थानमें शनि राहुके साथ है यह नीच प्रकृतिके कुछ राष्ट्र-द्रोही स्वार्थी पुरुषोंको राष्ट्रसेवक वा नेतागिरीका आवरण पहना कर सुखसमृद्धि एवं शान्ति स्थापनाके नाम पर प्रजामें असन्तोष फैलानेका प्रयत्न करेंगे। चतुर्थ स्थानमें राहु हृदयमें कुटिलता स्वार्थपरायणताको बढ़ाने वाला और परस्परके प्रवाद वा दोषारोपणसे कलहकारक है।

प्रजापक्षे भवेत्कष्टं प्रवासश्च धनक्षयः।
असन्तोषो राजपीड़ा चतुर्थे रविनन्दने॥
चिन्ता दुःखं प्रवासश्च प्रवादः स्वजनैः सह।
चतुष्पदा क्षयं यान्ति राहुस्तुर्यगतो यदि॥

आगामी चुनाव भी इसी अवधिमें सम्पन्न होने वाले हैं, अतः इस वर्ष चुनाव आन्दोलनको लेकर स्वार्थी तत्वोंके कारण कुछ अप्रिय घटनाएं घटेंगी। अनुशासन हीनता और उच्छृंखलता बढ़ेगी। प्रत्येक दलके अगुआ प्रवास (भ्रमण) और प्रचारमें वैध अवैध सभी प्रकारके उपायों का अवलम्बन करेंगे। किन्तु मेष सिंह तुला वृश्चिक धनुः

राशि वालोंको हम सावधान किये देते हैं कि इन पांच राशि वालोंमेंसे जिनके भी जन्मलग्न वर्षलग्नमें शनिकी स्थिति खराब हो, राज्येश भाग्येश निर्बल हों और दशान्तर्दशा प्रतिकूल चल रही हो वे चुनावमें प्रमुख रूपसे भाग न लें, अन्यथा हानि औ अप्रतिष्ठाका सामना करना पड़ेगा। इन्हीं राशि वाले ग्रहोंके बलाबल तारतम्यसे कुछ दुर्घटना ग्रस्त होंगे और कुछ आर्थिक कौटुम्बिक संकटग्रस्त बन सकेंगे। मेष सिंह तुला वृश्चिक धनुः राशि वाले राष्ट्रों और प्रदेशोंमें भी अशान्तिका वातावरण रहेगा। राजस्थान मध्यप्रदेश मध्यभारत महाराष्ट्र पंजाब काश्मीर असम नेपाल बंगाल बिहारकी प्रजामें असन्तोष, मंत्रिमण्डलमें गतिरोध, पारस्परिक फूट वैमनस्य एवं अविश्वासके कारण नई नई उलझनें उत्पन्न होंगी। इस वर्षके पूर्वार्धमें शासकवर्ग और प्रजाजनोंकी अधिकांश शक्ति प्रचार और जोड़ तोड़में ही अधिक व्यय होगी। उत्तरार्धमें अनेक नवीन परिवर्तन दिखाई देगें।

सप्तममें मुंथा है, मुंथेश शनि भौमदृष्ट है और मंगल अष्टममें वक्री होकर चलितमें सप्तम आ गया है अतः पड़ौसी राष्ट्र पाकिस्तानकी ओरसे भारतको हानि पहुँचानेका विफल प्रयास होगा। कश्मीर समस्या उग्र बनेगी। मंगलके कारण दोनों ओरसे सेना और सुरक्षाकी गतिविधि बढ़ेगी। पाककी ओरसे भारत पर आतङ्क फैलानेकी दुश्चेष्टाएं होंगी। पूर्वी पाकसे हिन्दुओंका निष्क्रमण बढ़ेगा। ता० १२ अगस्तसे १० अक्टूबर तक मंगल वक्री है और आगे आश्विनमासमें शनि राहुकी युति हो रही है अतः यह समय उत्पात कारक है। अश्विन कार्तिकमें किसी ख्याति प्राप्त नेताको दुर्घटनाग्रस्त होना पड़ेगा। लिखा भी है—

प्रजा कष्टं तथा हानिः पीड़ा चात्मन एव च।
देश भ्रंशं भयमसौ कुर्याद्भौमस्तु सप्तमे॥
रक्तपित्तप्रकोपश्च महापीड़ा धनव्ययः।
विपत्तिरिष्टवर्गस्य अष्टमस्थे धरासुते॥
'भौमेऽष्टमे भयं वन्हेः प्रहारो वा नृपाद्भयम्॥'

श्रावण मासमें कहीं अतिवृष्टिसे हानि होगी और आगे भाद्रपदमें वर्षाकी कमी रहेगी। इस वर्ष भाद्रपद कृष्ण ४ को शनिवार है यह आगे दुर्भिक्ष और विग्रह-कारक है। यथा—

शनौ भाद्रपदे कृष्णे चतुर्थ यदि जायते।
देशभङ्गश्च दुर्भिक्षं लोके भिक्षापि दुर्लभा॥

आश्विन कृ० ११ ता० ३० सितम्बरसे कार्तिक कृ० ७ ता० २६ अक्टूबर तक सिंह राशिमें गुरु शुक्रका योग विग्रह और असामयिक वृष्टि कारक है—

गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नर युद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥

इस वर्षमें मलेरिया ज्वर उदर विकार सांसर्गिक रोग रक्त विकार एवं हृदय रोग अधिक फैलेगा "अलिस्थिते रोग भयं जनानां" वाणिज्य व्यवसायमें भारी उथल पुथल होगी। गुड़ तैल रस पदार्थ और अन्नादिका भाव प्रायः प्रारम्भमें तेज रहेगा।

"भूसुतः कुम्भराशिस्थः सर्वधान्य महर्घता।"
पूभामहीजे तिलवस्त्ररूप कार्पासपूगादि महर्घता वा।"

स्थानाभावके कारण यहां विशेष विस्तृतरूपमें नहीं लिखा जा सका। आगामी अंककी प्रतीक्षा करें अथवा जिज्ञासुजन पहले पत्र व्यवहारसे ज्ञात कर सकते हैं।

—

प्राप्ति स्वीकार

निम्नाङ्कित पुस्तकें समालोचनार्थ प्राप्त हुई हैं इनका परिचय आगामी 'नववर्षाङ्क'में प्रकाशित किया जावेगा। जिन पुस्तकोंकी एक एक प्रति ही प्राप्त हुई है उनकी समालोचना न हो सकेगी। यदि प्रेषक महानुभाव एक प्रति और भेज देंगे तो आगामी अंकमें सबकी समालोचना कर दी जावेगी।

—सम्पादक

'भारतीय कुंडली विज्ञान' मूल्य ४॥) पृष्ठ १८६
'वरवधू नक्षत्र मेलापक' पृ० ३८० मूल्य ३।)
'ऋतूल्लास' काव्य हिन्दी अंग्रेजी अनुवाद सहित
'सन्ध्या विधि' पृष्ठ ६४ मूल्य कर्मप्रेम
'यज्ञोपवीत' पृष्ठ ५६ मू० =)
'त्रिलता स्तुति मुक्तावली' भाषानुवाद सहित मू० ॥)

व्यापार भविष्य

[लेखकः—प्रोफेसर श्री बी० सी० महता० एम० आर० ए० एस०]

यह लेख पाठकोंके सम्मुख तारीख १५ जुलाई १९५६ के पश्चात् पहुँचेगा। जुलाई खास तौरसे बरसातका महीना है, और वर्षाको न्यूनाधिक्यताके आधार पर बाजारकी घटा-बढ़ी होती है। अच्छी बरसातसे मन्दीका वातारण बनता है, तथा बरसातकी कमीसे तेजीका फोर्स बजारोंमें दिखाई देता है। इसलिए इस पीरियड़की घटा-बढ़ीका दिग्दर्शन बरसातके ग्रहोंके विवेचन पर ही करना चाहिए।

गत वर्ष बरसात बहुत बढ़िया हुई जिसका खास कारण गुरु व शनिके उच्च राशि भ्रमणका ही समझना चाहिए। शनि व गुरु दोनोंका साथ ही उच्चराशिमें आ जाना कमसे कम ६० वर्षोंमें ही एक बार सम्भव हो सकता है, इसलिए जब-जब यह योग बनता है तब-तब ही वर्षा अत्युत्तम होती है, इस वर्ष यह योग तो समाप्त हो चुका है। इस वर्ष में सिंह राशिमें गुरु तथा वृश्चिक राशिमें शनि चल रहा है। तथा मंगल कुम्भ राशिमें चल रहा है। यहां मंगल स्तम्भी हुआ है, कुम्भ राशिमें मंगलका मंदगामी व वक्री होना तथा वृश्चिक राशिमें शनिका राहुके साथ बैठना एवं आपसमें स्थान सम्बन्ध करना भी एक अनोखा योग है और यह विशेष घटा-बढ़ीका सूचक है। यदि मंगल मंदगामी नहीं होता तो यहाँ भी अंगार योग बनता, जैसा कि हमने गत अंकमें अप्रैल मई महीनेके लिए लिखा था और जिसके आधार पर जोरदार तेजी प्रत्येक व्यापारिक वस्तुमें आई थी, तेलवानामें उसका प्रभाव विशेष रूपसे दृष्टिगोचर हुआ।

चूंकि मंगल स्तम्भी है, इसलिए इसका प्रभाव विशेष तेजीका नहीं होगा, धीरे-धीरे बाजारोंमें घटाड़ा आवेगा।

जुलाईके प्रथम सप्ताहमें शनिका प्लुटो ग्रहसे स्क्वायर योग बन रहा है। यह हर जगह अच्छी वर्षा लावेगा तथा अनाज व तेलवानामें मन्दी होगी, चांदी सोना भी घटेगा।

ता० ७ जुलाईको सायन कन्यामें बृहस्पति प्रवेश करता है। बरसातकी मौसममें कन्यामें गुरुका प्रवेश बहुत कम देखने में आता है और यह गुरु रुईके पाककी वृद्धि सूचक है तथा अन्य वस्तुओंकी पैदावार विशेष बताता है और बरसात अच्छी लाता है, जिससे बाजारोंमें मन्दीकी लहर आ सकती है।

ता० १६ जुलाईको गुरु ग्रहका हरशल ग्रहसे भी सेक्सटायल योग बनता है, यह तेजीका रिएक्शन थोड़ा सब बाजारोंमें लावेगा।

ता० २५ को सूर्यका हरशलसे कन्जक्शन होता है यह फिर शेयर चांदी तेलवाना गुड़, गुवार, मटरामें मन्दी लावेगा। यह मन्दीका फोर्स उत्तम मध्यम ता० १० अगस्त तक रहेगा।

अगस्तमें मंगल वक्री होता है, तथा सिंह राशिमें गुरु सूर्यके साथ होकर अस्त होते हैं, यह योग विशेष घटा-बढ़ीका सूचक है। मंगल वक्री सब वस्तुओंमें खासतौरसे तेलवानामें तेजी लावेगा। उस उछालेमें प्रत्येक वस्तु बेचनी चाहिए क्योंकि ता० २२ अगस्तको पुनर्वसु नक्षत्रमें शुक्र सब वस्तुओंको एक बार नरम करेगा। चांदी सोना भी पहले तेज होकर फिर नर्म हो जावेगा।

सितम्बर मासके प्रारम्भमें ही गुरु सूर्यकी युति होगी जो सब बाजारोंमें फोर्सकी तेजी ला सकती है और ता० ११ को गुरुका नेपचूनके साथ सेमी-स्क्वायर होता है जो सब चीजोंमें मन्दीका बड़ा फोर्स पैदा करता है। यह मन्दी ता० २१ सितम्बर तक रह कर २२ से ३० तक फिर बाजार मजबूत हो जावेंगे। गुड़, गुवार, मटरा, सोना, चांदी तेलवाना आदि सबमें धीरे-धीरे तेजी आ जावेगी सो सावधानीसे अपने व्यापारकी व्यवस्था करें। इससे अधिक विस्तृत व्यापार भविष्य व मार्गदर्शन चाहते हैं तो हमसे व्यावर दफ्तरसे पत्र व्यवहार करें। हम 'श्रीस्वाध्याय'के ग्राहकोंसे केवल ५) रु० रियायती फीस लेकर आपको हर महीनेका मार्गदर्शन देवेंगे। हमारा उद्देश्य 'श्रीस्वाध्याय' के प्रिय पाठकोंकी हर प्रकार सेवा करना है।

—

स्वरशास्त्रसे व्यापार भविष्य

[लेखकः—श्री पं० श्यामसुन्दर शर्मा ज्योतिषी]

इस बार जो रिपोर्ट आपकी सेवामें प्रस्तुत कर रहे हैं यह चांस तालिका हमारे अनुभव अध्ययनके सर्वोत्कृष्ट चमत्कारकी प्रतीक है। हम स्वयं स्वीकार करते हैं कि तेजी मन्दीका यथार्थ निर्णय करना यदि असम्भव नहीं तो कठिनतम कार्य अवश्य है। आजके मनुष्यमें इतनी कर्मठता नहीं दीख पड़ती जितनी तपस्याकी आवश्यकता है। आज का युग अर्थ प्रधान युग है। घटाटोप विज्ञापन द्वारा अर्थ संचयका उद्देश्य ही आज दृष्टिगोचर होता है। सारी मानसिक शक्ति केवल अर्थोपार्जनके लिये प्रयुक्त करने वाले आजके कथित दैवज्ञ कहां तक इसमें सिद्धता प्राप्त कर सकते हैं यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं। दीर्घ कालीन अनुभवके पश्चात् उपरोक्त पंक्तियें लिखी हैं किसी पर आक्षेप नहीं किया है। हम अपनेको भी इस परिधिसे बाहिर नहीं रख रहे। गतांककी रिपोर्टके लिये जिन महाशयोंने उलाहना दिया उनका यह भी कर्तव्य होता है कि वे व्यापारमें हजारोंकी लाभ हानिके साथ साथ कर्मठ ज्योतिर्विदोंको सहयोग दें। केवल उलाहना देनेसे ही कर्तव्य पालन नहीं हो सकता। हमारी भविष्यवाणीके मिथ्या होने में हमारे अनुभवका दोष अल्प है तथा पञ्चाङ्गोंका अधिक। इस बार जो थोड़ेसे स्पेशल चुटकले दिये हैं इनसे हमारी योग्यताका निर्णय होगा। हम अबाध गतिसे अथक परिश्रममें रत हैं। जनता जनार्दनको हमारे पिछले प्रयाससे जो भी कष्ट हुआ है उसके लिये हम आत्मा द्वारा व्यापारियोंसे क्षमा प्रार्थी हैं। विश्वास शून्य त्रैमासिक रिपोर्ट की अपेक्षा विश्वासपूर्ण थोड़े चांस भी व्यापारियोंकी अधिक सेवा करेंगे ऐसी आशा है।

ता० १८ जुलाईको गुड़में ।=) ॥) की तेजी आयेगी। १९ जुलाईको भी बाजारमें तेजी रहेगी। २० जुलाईको एकदम ॥) ॥=) टूट जायेंगे। २१ जुलाईको घटबढ़ रहेगी। रुख ।) तेजीमें रहेगा। खरीदका व्यापार करें। २२-२३ घटबढ़ रहेगी। २३ को पहिले तेज रहकर फिर मंदा होगा और २४ की शाम तक गुड़ ।।) ।।=) टूट जायेगा। २५ के २-३० बजे बादसे २७ की शाम तक भंयकर तेजी ।॥) मनकी गुड़में आयेगी। २८-२९ अनिश्चित है। ३० को गुड़ ।) ।=) मंदा होगा। ३१ को घटबढ़ १-२ अगस्तको गुड़ ।॥) बढ़ेगा।

उपरोक्त चांस व्यापारियोंके लिये अनमोल रहेंगे, हम इसका विश्वास दिलाते हैं। वैसे हमारे ऊपर व्यारियोंके हानि लाभका कोई उत्तरदायित्व नहीं है। हमें दृढ़ विश्वास है कि जो व्यापारी इस रिपोर्ट पर व्यापार करेंगे उनको लाभ अवश्य होगा। उपरोक्त चांस चांदी गुड़ चणा तीनोंमें प्रभाव दिखायेंगे। यह सामूहिक तेजी मन्दी है। गुड़के लिये तेजी मन्दीका अनुमान विशेष रूपसे लिख दिया है।

—

पदार्थोंकी उत्पत्ति तथा उन पर ग्रहोंका प्रभाव

[लेखकः—श्री बद्रीप्रसादजी गुप्त ब्यानिया ज्योतिर्भूषण ज्योतिषाचार्य गणकचूड़ामणि]

हमारे भारतवर्षमें जितनी वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं उन पर किस किस ग्रहका प्रभाव अच्छा अथवा बुरा कैसा पड़ता है, इसका विचार करनेके लिये ज्योतिर्विज्ञानके विशेषज्ञ ऋषियोंने समय समय पर जो विचार प्रस्तुत किये थे उनके अनुसार यदि विचार किया जाय तो लगभग शतप्रतिशत ठीक ही हो सकते हैं। किन्तु उनके विचारोंको हम लोग ठीक ठीक समझ ही न सकें तो हम लोगोंकी भविष्य वाणियां कैसे ठीक हो सकती हैं। उनका विचार क्या है, इस सम्बन्धमें आजकल ज्योतिर्विज्ञानके विशेषज्ञोंको बड़ी सावधानीसे विचार करना चाहिये।

कई वर्षोंसे मैं पंचांगोंकी भविष्यवाणियों पर विचार करता रहा हूँ। किन्तु उन भविष्यवाणियोंकी कई बार असफलताका विचार करनेसे मेरे हृदयमें असंतोषसा होता रहा है और मस्तिष्कको कुछ विचार करनेके लिये मेरा हृदय बार बार प्रेरणा देता रहा है।

इसमें मेरा सविनय निवेदन है कि मैं ज्योतिर्विज्ञानका

कोई विशेषज्ञ नहीं, फिर भी पाठकोंके समक्ष कुछ अपने विचारोंको उपस्थित कर रहा हूं। पाठकगण इस पर अवधान देंगे और अपने विचारोंको चालना देकर उत्पाद्य पदार्थोंके ऊपर ग्रहोंका कैसा प्रभाव पड़ता है इस सम्बन्धमें अपने विचारोंको प्रकट करेंगे तथा ज्योतिर्विज्ञानकी भविष्यवाणियाँ अधिकसे अधिक सफल हों ऐसा प्रयत्न करेंगे।

किन किन वस्तुओं पर किस किस समयके ग्रहोंका प्रभाव होता है, इसके लिये सारे उत्पाद्य पदार्थोंको आचार्यो ने ६ वर्गों में इस प्रकार आबद्ध किया है—

(१) धनुः संक्रान्तिका वारेश—धान्येश।
(२) आर्द्राप्रवेश सूर्यका वारेश—मेघेश।
(३) तुलासंक्रांन्तिका वारेश—रसेश।
(४) मकरसंक्रांतिका वारेश—नीरसेश।
(५) कर्कसंक्रांतिका वारेश—सस्येश।
(६) मीनसंक्रांतिका वारेश—फलेश।

(१) उक्त वस्तुओंमें धान्य तथा सस्यके पृथक् पृथक्से स्वामी दिये हैं। साधारणतया धान्य भी अन्नका नाम है और सस्य भी अन्नका नाम है। इसलिये यह निश्चय करना आवश्यकीय हो जाता है कि धान्यमें कौनसा अन्न है और सस्यमें कौनसा। इसके लिये 'वर्षप्रबोध' में एक यह श्लोक उपलब्ध है—

धनुः संक्रांतिवारेशो धान्येशः परिकीर्तितः।
सस्येशः पूर्वधान्येशः पश्चाद्धान्यपतिस्त्वयम्॥

पूर्वधान्यका स्वामी सस्येश और पश्चिम धान्यका स्वामी धान्येश है। किंतु इस श्लोकमें यह स्पष्ट नहीं किया कि पूर्व धान्य कौनसा है और पश्चिम धान्य कौनसा है।

पं० श्री हनुमान् शर्मा जयपुर निवासी 'वर्षप्रबोध' के टीकाकारने उक्त श्लोकके नीचे अपना यह मत दिया है कि ग्रीष्म ऋतुका अन्न जौ गेहूँ आदि सस्यमें और शरद् ऋतु का मोठ, मूंग, बाजरा आदि धान्यमें समझा गया है। इस मतसे ग्रीष्म ऋतुके अन्नका स्वामी सस्येश (कर्केश) तथा शरद् ऋतुके मोठ, मूंग, बाजरे आदिका स्वामी धान्येश (धनुसंक्रांति वारेश) होता है।

यदि इस मतको माना जाता है तो आचार्योंने जहाँ पश्चाद्धान्यका स्वामी धनुःसंक्रान्तिका वारेश दिया है वहाँ धान्येशमें जो यह श्लोक दिया है कि—

भूमिजे ग्रीष्मधान्येशे ग्रीष्मधान्यमहर्घकम्।
शालीक्षुघृततैलादि महर्घाणि भवन्ति च॥

ग्रीष्म धान्यका स्वामी मंगल हो तो ग्रीष्म धान्य महंगा होता हैं। और ग्रीष्म धान्य गेहूं जौ चना आदि हैं, जो कि कार्तिकादि वृश्चिकके सूर्यमें बोये जाते और वैशाखादि मेषके सूर्यमें पैदा होते हैं, जिसकी पुष्टता बृहत्वाराही संहिता अध्याय ४० तथा 'दैवज्ञविनोद' अध्याय २३ से होती है, और वर्ष प्रबोध प्रथम स्थलके इस श्लोक १०१ से भी स्पष्ट होता है कि जौ गेहूँ तथा शालिका स्वामी धान्येश है—

गुरौ धान्यपतौ याते यवगोधूमशालयः।
पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः॥

इसके अतिरिक्त जिस प्रकार प्रत्येक ग्रह संचारवश जब जिस राशिमें प्रवेश करके अपना पदग्रहण करता है तब ही वह उस राशिका फल देनेको समर्थ होता है, उसी प्रकार वृश्चिक राशिके सूर्यसे जौ गेहूँ आदि के गर्भ फल तथा धनुसंक्रांतिके वारेशसे उनके जन्मफल देखना स्पष्ट होता है। यदि पं० श्री हनुमान् शर्माके मतानुसार अन्न गेहूं जौ आदिका स्वामी सस्येश (कर्कवारेश) माना जावे तो जब जिस अन्नका गर्भ वृश्चिकके सूर्यमें होकर मेषके सूर्यमें जन्म हो चुका फिर इस ग्रीष्म ऋतुके अन्न पर कर्क वारेशका प्रभाव क्या हो सकेगा। इसी प्रकार शरद् ऋतुके अन्न बाजरा, ज्वार, मोठ आदि पर धनुःसंक्रान्ति वारेशका प्रभाव न होगा।

प्रायः ये ही देखनेमें आया है कि जिस ग्रीष्मऋतुके अन्न गेहूं जौ आदिका गर्भ सम्वत्सर प्रारम्भ होने से पूर्व ही वृश्चिकके सूर्यमें हो चुका उसके जन्मका फल भी सम्वत्सरके पूर्व जो धनुसंक्रांतिवारेश रहा उससे अधिकतर मिलता है। उदाहरण तया सं० २०१२में ग्रीष्म ऋतुके अन्नकी अच्छी पैदावारी तथा समर्घता रही थी और वर्षा भी विशेष हुई जो सं० २०११ के धनुसंक्रांतिके वारेश बुधसे घटित होती है। यदि सं० २०१२ के सस्येश शनिसे देखा जावे तो फल शुभ घटित नहीं होता, आचार्योंने शनिका निकृष्ट फल दिया है। तथा शरद् ऋतुका धान्य बाजरा, ज्वार, मोंठ, मूंग आदि जो कार्तिक आदिमें खराब हो गया तथा भाव भी महर्घ रहे वह सस्येश शनिसे मिलते हैं।

ज्योतिर्विदोंसे निवेदन

अ० भा० संस्कृतप्रचारक मण्डलके सप्तम वार्षिकोत्सव पर आषाढ़ शु० १३-१४-१५ तदनुसार दिनाङ्क २०-२१-२२ जुलाईको दिल्लीमें उ० भा० ज्योतिष-सम्मेलनका द्वितीय अधिवेशन श्रीद् गुरुवर पं० केदारनाथजी महाराज राज-ज्योतिषीकी अध्यक्षतामें हो रहा है। गत वर्षसे ही मण्डलके संस्थापक श्रद्धेय श्री पं० छज्जूरामजी विद्यासागर महोदयने ज्योतिष-सम्मेलनकी योजना बनाकर भारतीय संस्कृति एवं विशेषतः ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंका महान् उपकार किया है। भारतीय संस्कृतिके संरक्षक इस महान् ज्योतिर्विज्ञानकी गुणगरिमासे सारा संसार परिचित है। परंतु ज्योतिर्विदोंके पारस्परिक सहयोग संगठनके अभावसे इस उपयोगी विज्ञानकी वैज्ञानिकता पर भी कुछ लोगोंकी ओरसे अब प्रहार होने लगे हैं और अन्यान्य विज्ञानोंकी भांति इसको राज्याश्रय प्राप्त नहीं हुआ। गत वर्ष इसी दिन इस राजधानीमें ज्योतिर्विदोंने मिलकर संगठन पर विचार किया। तदनन्तर शिष्टमण्डल महामहिम श्रीराष्ट्रपतिजीसे मिला और एक योजना भी उनकी सेवामें प्रस्तुत की गई, किन्तु अभी तक वह कार्यरूपमें परिणत न हो सकी। यदि इस बार हम सब मिलकर अपना एक सुदृढ़ संगठन बना लेवें और एक मत हो कर कार्यक्षेत्रमें उतर पड़ें तो सब कार्य सम्पन्न हो सकेंगे। केवल वर्ष भरमें एक दिन इकट्ठे होकर भाषण झाड़ देने और प्रस्ताव पासकर देने मात्रसे तो इस विज्ञानकी वास्तविक सेवा न हो सकेगी। सबको यथाशक्ति कुछ त्याग और श्रम करना पड़ेगा। दिल्ली भारतकी राजधानी है यहां ज्योतिर्विज्ञानकी एक केन्द्रीय विशाल संस्था हो, वेधशालाको आदर्श रूप दिया जावे और अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ हो। अपने विचार मैं गत वर्षके भाषणमें व्यक्त कर चुका हूँ यहां अधिक कुछ न लिखकर केवल इतना ही निवेदन करूंगा कि इस सम्मेलनमें सर्व प्रथम उत्तरभारत (दिल्ली पंजाब कश्मीर राजस्थान मध्यप्रदेश मध्य-भारत उत्तरप्रदेश विहार) के सभी ज्योतिर्विदोंका संगठन करें। प्रत्येक प्रान्तमें प्रन्तीय ज्योतिष सम्मेलन स्थापित हो। उसके द्वारा प्रान्त नगर और ग्रामके ज्योतिर्विदोंके पते प्राप्त करके उनसे पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क स्थापित किया जावे। फिर उनको एक बार प्रान्तके मण्डलमें एकत्र किया जावे, तदनन्तर वार्षिक अधिवेशन पर राजधानी दिल्लीमें आमंत्रित किया जावे। ज्योतिर्विदोंका एक परिचय ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जावे। इस प्रकारके अनेक कार्यक्रम हैं जो परस्पर विचार विमर्श द्वारा निश्चित हो सकते हैं।

प्रसन्नताका विषय है कि राजधानीके विद्वान् दैवज्ञोंने संगठनकी आवश्यकताको अनुभव किया है, फलतः दिल्लीके सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य श्री पं० रामेश्वरप्रसादजी धसमान्या, श्री पं० ईश्वरप्रसादजी आत्रेय ज्यो० और श्री पं० जगदीशप्रसादजी ज्यो० सम्मेलनकी सफलताके लिए विशेष प्रयत्न कर रहें हैं, आप ही इस वर्ष ज्योतिष सम्मेलनके क्रमशः संयोजक स्वागताध्यक्ष एवं स्वागत मंत्री हैं।

गतांकमें मैंने पंचांगकारोंके संगठनके विषयमें लिखा था उस पर भी सम्मेलनमें विचार होना आवश्यक है। अन्तमें मैं प्रत्येक पाठकसे निवेदन करूंगा कि वे अपने प्रांत और नगरके ज्योतिर्विदोंका पूरा पता नीचे लिखे पते पर भेजनेकी कृपा करें।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

इस लिये विनम्र निवेदन है कि पाठकगण इस पर अवधान देकर अपने विचारोंको प्रकट करनेकी कृपा करेंगे। और उचित रूपमें इसका निर्णय करेंगे।

सप्तम संस्कृत दिवस समारोह

अ० भा० संस्कृत प्रचारक मण्डलका सप्तम संस्कृत दिवस समारोह दिल्लीमें ता० २०, २१, २२ जुलाई तदनुसार आषाढ़ शु० १३-१४ और १५ गुरुपूर्णिमा पर बड़े समारोहसे मनाया जा रहा है। इसमें सम्मिलित होनेके लिये भारतके कोने कोनेसे प्रकाण्ड विद्वानोंकी स्वीकृतियां आ चुकी हैं। इस समारोहमें अनेक सम्मेलनोंके करनेकी आयोजना की गई है जैसे संस्कृत-सम्मेलन, संस्कृति-सम्मेलन, ज्यौतिष-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, दर्शन-परिषत्, संस्कृत-भाषण-प्रतियोगिता और 'स्वर्णकुम्भम्' संस्कृत नाटकका अभिनय आदि। इस समारोहके सभापति लोकसभाके अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम् आयङ्गर होंगे और तत्तत् सम्मेलनोंके अध्यक्ष भारतके धुरन्धर विद्वान् चुने गए हैं। दिल्लीके सभी विद्वान् और धनीमानी सज्जन एवं सरकारी कर्मचारी इसमें पूर्ण भाग ले रहे हैं।

विगत १५ वर्षों के 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क १॥) रु०   २—हेमान्ताङ्क २॥) रु०

३—वसन्ताङ्क १॥) रु०   ४—ग्रीष्माङ्क १॥) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क ४) रु०   २—हेमान्ताङ्क २) रु०

३—वसन्ताङ्क १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०

चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य ७) रु०

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५॥) रु०   २—हेमन्तांक २) रु०

३—वसन्तांक १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०

चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य ९)

चतुर्थ वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य   २—हेमन्तांक ३) रु०

३—वसन्तांक ३) रु०   ४—ग्रीष्मांक २) रु०

तीनों अंकोंका इकट्ठा मू० ६॥)

पंचम वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५) रु०   २—हेमन्तांक १) रु०

३—साहित्यांक २) रु०   ४—ग्रीष्मांक अप्राप्य

तीनों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ६)

छठे वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु०   २—हेमन्तांक ४) रु०

३—वसन्तांक १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०

चारों अंकोंकी पूरी फाइलका मूल्य ७) रु०

सातवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु०   २—हेमन्तांक ४) रु०

३—वसन्तांक अप्राप्य   ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०

तीनों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ६)

आठवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २) रु०   २—हेमन्तांक १॥) रु०

३—वसन्तांक १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक २॥) रु०

मेषलग्नफल इस वर्षमें दिया है। चारों अंकोंका मू० ६) रु०

नौवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २॥) रु०   २—हेमन्तांक १॥) रु०

३—वसन्तांक १॥) रु०   ४—ग्रीष्मांक २॥) रु०

वृषभ मिथुन और कर्क लग्न का विशेष फल इन अंकों में दिया है। चारों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ६॥) रु०

दशवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २) रु०   २—हेमन्ताङ्क १।) रु०

३—वसन्तांक १।) रु०   ४—ग्रीष्मांक १।) रु०

चारों अंकोंका इकट्ठा मूल्य ५) रु०

ग्यारहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २) रु०   २—हेमन्तांक २) रु०

३—वसन्तांक १।) रु०   ४—ग्रीष्मांक १॥) रु०

सिंह लग्नका विशेषफल और 'मृत्युञ्जयका अद्भुत उपाय' दिया गया है। चारों अंकोंका मू० ५॥ रु०)

बारहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २॥)   २—हेमन्तांक १॥)

३—वसन्तांक १।)   ४—ग्रीष्मांक २)

कन्या लग्नके विशेष फल सहित चारों अंकोंका मूल्य ५॥ रु०)

तेरहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २॥)   २—हेमन्तांक १॥)

३—वसन्तांक १॥)   ४—ग्रीष्मांक १॥)

तुला वृश्चिक धनुर्लग्न और वैशाख ज्येष्ठ आषाढ़मासमें उत्पन्न नर नारियोंके चमत्कृत फल सहित मू० ५॥)

चौदहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २)   २—हेमन्तांक १।)

३—वसन्तांक १।)   ४—ग्रीष्मांक १।)

मकर, कुम्भ, मीन, लग्न और श्रावण भाद्रपद आश्विन कार्तिकमासमें उत्पन्न नर नारियोंका चमत्कृत भविष्यफल सहित चारों अंकोंका मू० ४॥)।

पंद्रहवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २)   २—हेमन्ताङ्क १।–)

३—वसतांक १।–)   ४—ग्रीष्मांक १।=)

मार्ग० पौष माघ फाल्गुन मासके विशेषफल सहित चारों अंकोंका मू० ४॥) रु०।

प्रत्येक वर्षकी पूरी फाइल या चार अंकोंका डाक रजिस्ट्री व्यय १) होगा। पूरी फाइल वी० पी० से नहीं भेजी जावेगी। जो पुस्तकालय और संस्थाएं १५ वर्षके सब अंक इकट्ठे मंगावेंगे उन्हें ६०) रुपयेमें प्राप्त हो सकेंगे।

व्यवस्थापक—'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

सं० २०१३ वि०] **"श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग"** [सन् १९५६-५७ ई०

[सम्पादक—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

इस पंचाङ्गमें सदाकी भांति अन्यान्य अनेक विशेषतायें तो हैं ही, साथ ही सन् ५७ के सम्बन्धमें जनतामें जो भय व्याप्त है उसका निराकरण, उज्जैनके सिंहस्थ कुम्भपर्वका शास्त्रीय निर्णय, गोवा, काश्मीर, पाकिस्तान, नेपाल और भारतके प्रान्तोंका भविष्य कैसा है? भारतमें व्यापार और वर्षाकी स्थिति कैसी रहेगी? फसल कैसी होगी? आर्थिक राजनैतिक स्थिति कैसी रहेगी? इत्यादि प्रश्नोंका शास्त्रीय आधार पर विवेचनात्मक उत्तर लिखा गया है। बारह राशियोंका वार्षिक राशिफल, दैनिक स्पष्टग्रह, संसार भरमें होने वाले ग्रहणोंका सचित्र विवेचन और विवाह उपनयन द्विरागमन गृहारम्भ गृहप्रवेशादि मुहूर्त तथा पर्वव्रतादि निर्णयके साथ राष्ट्रीय महापुरुषोंके जन्म और निधन तिथियोंका उल्लेख भी किया गया है। इतना शुद्ध प्रामाणिक भविष्य और शास्त्रीय विवेचन आपको अन्य किसी भी पंचाङ्गमें नहीं मिलेगा। १२० पृष्ठके इस विशाल पंचाङ्गका मूल्य ॥।=) चौदह आना। डाक रजिस्ट्री खर्च ॥।) अलग। 'श्रीस्वाध्याय'के ग्राहक श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से भी यह पंचाङ्ग प्राप्त कर सकते हैं। पंचांगके मूल्य और डाक रजिस्टरी खर्चके लिए १॥) भेजें।

२०१४ सन् १९५७-५८ का 'श्रीविश्वविजय पंचांग' छप रहा है। आगामी विजयादशमी ता० १३ अक्टूबर १९५६ तक प्रकाशित हो जावेगा।

प्रकाशक—**गोयल ब्रादर्स थोक पुस्तकालय, दरीबाकलां, दिल्ली।**

दैवी चांसका चमत्कार

हमें गुरु कृपासे अनुष्ठान द्वारा इच्छित वस्तुमें सीधी लाइनका सही चांस प्राप्त करनेका प्रयोग ज्ञात हुआ है। इसके द्वारा कठिन परिश्रम और कुछ दिनकी नियमपूर्वक साधनासे जो चांस इष्टदेवकी कृपासे दृष्टान्त द्वारा प्राप्त होता है—वह शत-प्रतिशत सही होता है। गत चार पांच वर्षोंसे हम अपने स्नेही परिचित लोगोंको इसकी सत्यताका अनुभव करा चुके हैं। हम विशेषकर रुई, कपास, सोना, चांदी, सरसों, गुड़, गुवार और चनाके वायदा तथा हाजिर, अरण्डा वायदा बम्बई और काटन वायदा बम्बईके ही दैवी चांस निकालते हैं। अतः इन्हींके सम्बन्धमें पत्र व्यवहार करें।

१०१) रु० पेशगी भेजकर लाभमें से दशांश देनेकी प्रतिज्ञा करने वाले व्यापारीको एक वस्तुकी एकतर्फा लाइनकी तेजीमंदीका दैवी चांस बताया जायगा। एक वस्तुकी पूरी मंदी तेजीकी सम्पूर्ण लाइन बतानेकी फीस २५०) रु० है। जो व्यापारी वर्षारम्भमें दीपावलीसे पहले ५००) भेजकर स्थायी ग्राहक बन जायेंगे—उनको वर्षमें सभी दैवी चांसों की पूरी रिपोर्ट और तात्कालिक अनुभवोंकी सूचना पत्र द्वारा साल भर तक दी जावेगी। लाभका दशांश उन्हें भी देना होगा।

कोई सज्जन ऊपर लिखी हुई वस्तुओंके अतिरिक्त किसी अन्य खास एक वस्तुका भाव दैवी चांस द्वारा जानना चाहें तो वे ५००) भेजकर अपना अनुष्ठान करवाकर ज्ञात कर सकते हैं। यदि कोई अपने स्थान पर ही बुलाकर अनुष्ठान कराना चाहें तो स्थान और समयकी परिस्थितिके अनुसार फीस १०००) से ५०००) तक होगी। विशेष नियमादि =) का टिकट भेजकर मंगावें।

पत्र व्यवहारका पता—

श्री पंचानन शर्मा मौद्गल्य, दैवीचांस कार्यालय, श्रीधन्वन्तरि फार्मेसी

मु० पो० लहरागागा मण्डी, जि० संगरूर (पैप्सू)।

तीसरी बार

छप गया

महामहिम आचार्य
श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं

हम संक्रान्तिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र हैं, पति नहीं

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति विक्रान्ति है संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्रप्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मँगाइये। मूल्य ॥) मार्ग व्यय –) 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पंचाङ्ग' के स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्गव्यय सहित ।=) में।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल-सी मच गई है, और सैकड़ों प्रतियां हाथों-हाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है। हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि-आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) मार्ग व्यय ॥।) अलग।

श्रीपञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। इसमें प्रथम लघुस्तवकी ७०० वर्ष प्राचीन संस्कृत टीका तथा भारतकी वर्तमान राष्ट्रभाषानुवादके साथ मुद्रित है। शेष चार स्तोत्र मूल मात्र हैं। मूल्य ॥) डाक व्यय दो आने अलग।

श्रीमहानुभवशक्तिस्तव

संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्याके साथ मूल्य ॥) आठ आने। यह पुस्तक कितनी उपयोगी एवं महत्वमण्डित है यह सब देखने पर ही विदित होगा।

महामहिम आचार्य श्री १०८ अमृतवाग्भव विरचित—

प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ

१. श्रीपरशुरामस्तोत्र, सचित्र राष्ट्रभाषानुवादसहित।

२. श्रीसप्तपदी-हृदय, द्वितीय-संस्करण, संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

३. श्रीसंक्रांति-पंचदशी, संस्कृत टीका भाषानुवाद स.।

व्यवस्थापक—'श्रीस्वाध्याय' सोलन शिमला।

हमारे नये सिक्के



आजकल आप अपना हिसाब किताब रुपये, आने और पाइयों में करते है। आपकी सुविधा के लिए भारत सरकार ने १ अप्रैल १९५७ से देश में दाशमिक प्रणाली के सिक्के चालू करने का निश्चय किया है। दाशमिक प्रणाली के अनुसार एक रुपये में १०० नये पैसे होंगे; और सात नये सिक्के चलेंगे।

१०० नये पैसे	=	एक रुपया
५० नये पैसे	=	रुपये का आधा भाग
२५ नये पैसे	=	रुपये का चौथा भाग
१० नये पैसे	=	रुपये का दसवां भाग
५ नये पैसे	=	रुपये का बीसवां भाग
२ नये पैसे	=	रुपये का पचासवां भाग
१ नया पैसा	=	रुपये का सौवां भाग

महत्त्वपूर्ण बातें

- रुपये के वर्तमान मूल्य में बदल नहीं होगा और वह प्रामाणिक सिक्का रहेगा।
- पुराने सिक्कों का नये सिक्कों में धीरे धीरे बदल होगा। लगभग तीन साल तक पुराने और नये दोनों सिक्के चालू रहेंगे।
- इस अवधि में नये, पुराने, या दोनों सिक्कों में हिसाब किताब किया जा सकता है।



श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (हिमाचल प्र०) से प्रकाशित।